इक जोत सर्व व्यापक

वीर क्या चाहता है ?

पं० जगदीश चन्द्र शर्मा

साहित्य-भूषण

रतिया, ज़िला हिसार।

इक जोत सर्व व्यापक

बीर क्या चाहता है ?

पं० जगदीश चन्द्र शर्मा
साहित्य-भूषण
रतिया, ज़िला हिसार ।

★ उर्दू संस्करण : 1963

★ हिन्दी संस्करण : 1993
पहली बार 1100 प्रतियां

★ खर्च एक प्रति : 14 रुपए
(Cost Price)

★ कीमत एक प्रति : 8 रुपए
(Subsidised Price)

★ मिलने का पता :
सैक्रेटरी रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि.)
सत्संग घर (पंजाब नैशनल बैंक के साथ)
सलीम टाबरी, लुधियाना–141005.

सैक्रेटरी रूहानी सत्संग प्रेम समाज (रजि) लुधियाना ने जी. एस. प्रिण्टर्ज़, डा. गुज्जरमल रोड, लुधियाना-8 से छपवाकर प्रकाशित की।

विषय सूची

ताआरुफ (जान पहचान)

श्री जगदीश चन्द्र जी साहित्य भूषण, रतिया ज़िला हिसार के रहने वाले थे। उर्दू, फारसी, संस्कृत, हिन्दी और पंजाबी के प्रसिद्ध विद्वान थे। नसर जिस ढंग से वो लिखते थे, वह उनकी ही विशेषता थी। मोहज़्ज़ब्र ब्राह्मण खानदान से सम्बन्ध रखते थे। महाराज बीर जी की संगत और ज्ञान से उनकी आत्मा जाग उठी।

गाँव से दूर दराज़ सफर करते हुए अकसर महाराज जी के सत्संग में लुधियाना, जालन्धर, दिल्ली, अमृतसर, फिरोज़पुर और रोहतक पहुंचते। जो कुछ सुनते और महसूस करते, वो अकसर ट्रैक्टों की सूरत में छपवाकर पब्लिक में मुफ्त तकसीम कर देते थे ताकि जो कुछ उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े फिलासफर और रहबरे आज़म यानि रूहानियत के महान नेता से सीखा और अनुभव किया, वो लोगों तक पहुंचा सकें। उन्होंने दिल खोलकर लिखा। वो अब हमारे दरम्यान मौजूद नहीं

मगर उनके ख्यालात रहती दुनिया तक जनता को रोशनी पहुंचाते रहेंगे।

आपको महाराज बीर जी के कलाम से खास लग्न थी। पहले-पहले वो महाराज जी के कलाम को पढ़कर ही उनकी खिदमत में हाजर हुए थे। आपने महाराज बीर जी की अकाशवाणी, पिया दर्शन, भगवत् सन्देश वगैरह किताबों की व्याख्या की, जो छप चुकी हैं और पढ़ने से ताल्लुक रखती हैं। महाराज बीर जी के जीवन चरित्र को 'नूरे हकीकत' के नाम से लिखने का फखर भी आपको हासिल है। मोरखा 15-3-62 को आप परलोक गमन कर गए मगर अपने बुलन्द ख्यालात और कलमी सेवा की वजह से, जो उन्होंने दुनिया में रह कर की, हमेशा के वास्ते अमर हो गए। आप प्रेम समाज के अनथक कारकुन थे और आपको महाराज बीर जी की तरफ से रुकने आला का खिताब मिला हुआ था।

—बचन सिंह

सैक्रेटरी, रूहानी दरबार,

23-6-63 प्रेम समाज, दिल्ली।

चंद अलफाज़

हज़ूर महाराज बीर जी के चरणों में आकर मेरी ज़िन्दगी को एक नई दिशा मिली है। उनके ख्यालात, प्रेम और सनेह ज़िन्दगी को बुलन्दी की तरफ ले जा रहे हैं। पं. जगदीश चंद्र जी से मैं मिला तो नहीं लेकिन उनकी लिखतों को पढ़ा है। रूहानियत की भेद भरी बातों को उन्होंने बहुत सादा और आम लोगों की भाषा में समझा दिया है। आम जीवन में से दृष्टांत लेकर उन्होंने रूहानी नुक्तों की व्याख्या की है। यही इस पुस्तक में दिए सभी मज़बूनों की विशेषता है। उनके इन मज़बूनों से जीवन के कई भेद मेरे सामने उजागर हुए हैं। उम्मीद करता हूं कि सभी लोग इन मज़बूनों को पढ़ कर फैज़याब होंगे।

—सुरिन्दर सिंह साहनी

एम.ए., एल.एल.बी.

प्रधान, रूहानी सत्संग,

प्रेम समाज, लुधियाना।

17-4-93

बीर क्या चाहता है ?

जब मैं लोगों के दरम्यान अपने परम गुरु शहनशाह रूहानियत बीर की अतुल महमा को बड़ो श्रद्धा और प्रेम से बयान करता हूं तो लोग पूछते हैं कि आपके गुरु बीर क्या चाहते है ?

आज हम इस बात पर विचार करते हैं कि बोर क्या चाहता है ?

एक दफा पांच आदमी—एक मौलवी, पण्डित, दुकानदार, पहलवान और जैंटलमैन, इकट्ठे मिल कर सफर कर रहे थे। उन्होंने रास्ता में जंगल के दरम्यान एक तीतर बोलता सुना। वो आपस में कहने लगे कि बतलाओ, तोतर क्या कहता है ? मौलवी साहब झट बोले कि तोतर कहता है, "सुभान तेरी कुदरत, सुभान तेरी कुदरत"। पंडित जी ने कहा कि नहीं, तीतर तो कहता है, "सीता राम दशरथ, सीता राम दशरथ"। दुकानदार बोला, पंडित जी आप भी नहीं समझे यह कहता है "लूण तेल

अदरक, लूण तेल अदरक"। पहलवान ने कहा, आप तीनों ही नहीं समझे। तीतर कहता है,, "खेल कूद कसरत, खेल कूद कसरत"। जैंटलमैन हंसने लगा, बोला, आप तो सब पुराने आदमी हैं, मैं अंग्रेजी पढ़ा हूं, इस लिए इस की बोली समझता हूं। यह तो कहता है, "पान बीड़ी सिग्रेट, पान बीड़ी सिग्रेट"।

पांचों ने तीतर की बोली को सुनकर अपनी अपनी समझ के मुताबक अंदाजा लगा लिया कि तीतर क्या कहता है। वास्तव में तीतर क्या कहता है, यह या तो तीतर ही जानता है या वह जान सकता है जो तीतर की बोली समझता हो। इस तरह बीर क्या चाहता है इसको या तो बीर ही जानता है या वो प्रेमी जानते हैं जिन को बीर की कृपा दृष्टि हासल हुई है।

बीर मज़हबी दुनिया में एक इन्कलाब ला रहा है। इस लिए बीर की चाह को समझने से पहले हमें मुखतलिफ मुज़ाहब की चाह को यानि वो क्या चाहते हैं, समझ लेना जरूरी है। फिर हम उनकी निसबत से आसानी से इस बात को समझ जाएंगे कि बीर क्या चाहता है।

इस वक्त दुनिया में ईसाई मज़हब को माननें वाले लोगों को संख्या ज्यादा है। ईसाई मज़हब चाहता है कि सब लोग ईसाई हो जाएं, अंजील को अपना धर्म ग्रन्थ मानें और इसी के अनुकूल अपनी सारी रस्में अदा किया करें। जो लोग ऐसा नहीं करते, उन्हें यह अपने से कमतर समझते हैं, निजात का हकदार नहीं समझते। जिसका नतीजा यह होता है कि इन्हें अपने ही मज़हब वालों से प्यार होता है। दूसरों से चाहे वो ज़ाहिरा नफरत न करें, पर दिल की गहराईयों में नफरत की तस्वीर बनी ही रहतो है। दूसरे नम्बर पर मुसलमान हैं जो यह चाहते हैं कि सब लोग मुसलमान हो जाएं और खुदा और रसूल पर इमान लाएं। जो लोग ऐसा नहीं करते, वो काफिर हैं, मश्रक हैं। उन्हें किसी तरह से भी मुसलमानों की बराबरी का हक हासल नहीं।

तैदाद के लिहाज़ से तोसरे नम्बर पर हिन्दू हैं। यह चाहते हैं कि सब लोग चोटी रखें और जनेऊ पहनें। वेद को अलहामी किताब तसलीम करें और इसके फरमान के मुताबक संध्या, जप, पाठ और तीर्थ यात्रा करें। जो ऐसा नहीं करते वो पतित हैं। उनके हाथ का खाना

भी रवा नहीं। इसी तरह से सिख भी यही चाहते हैं कि सब लोग पांच कक्के धारण करें। ग्रंथ साहब के अनुसार जीवन बसर करें।

मुखतसर तौर से हम समझ गए कि ईसाई, मुसलमान, हिन्दु या सिख क्या चाहते हैं। हम उनकी चाह पर कोई बहस या तनकीद नहीं करते और न ही यह बहस करते हैं कि किस की चाह सब से अच्छी है। हमें तो सिरफ यह बतलाना जरूरी है कि उनकी क्या चाह है। इस बात का ज़िक्र हम जरूर करेंगे कि उन सबकी चाह अलग अलग है और अपने अपने ख्याल के मुताबक, इसी के अनुकूल जिन्दगी बसर करने की तलकीन करने का फर्ज़ समझते हैं। मुखतलिफ राए रखने वाले लोगों के दरम्यान, खास कर इस सूरत में जब कि हर एक अपनी ही राए को सब से बेहतर और मुक्कदम समझे, नफरत का होना जरूरी है क्योंकि यह नफसयाती यानि मानसिक मसला है कि जब हम अपनी ही राए को सब से आहला और अच्छा समझते हैं तो दूसरे की राए को अदना और हकीर समझेंगे अगर ऐसा नहीं करेंगे तो अपनी राए को कभी भी मुक्कदम या ऊंचा नहीं ठहरा सकेंगे।

अगरचे सारे मज़हब और फिरके आपस में सुलह सफाई, मुहब्बत और अमन और आपसी मेल-जोल का उपदेश देते हैं लेकिन दिलों में छिपे हुए दूसरे के ताईं नफरत और हकारत के यह जज़बात कभी न कभी किसी सूरत में ज़ाहिर हो ही जाते हैं और जब यह शिदत से ज़ाहिर होते हैं तो झगड़े फसाद और कतलो गारत तक नोबत आ जाती है।

अब जब कि सब मज़हबों और फिरकों की चाह अलग-अलग है और सब एक दूसरे से अपने को ही अच्छा समझते और काबल मानते हैं तो फिर दुनिया में हमेशा के लिए मुस्तकिल और देर तक रहने वाला अमन कायम होना मुश्किल ही नहीं बल्कि असंभव है।

हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई—सबके सब दुनिया में अमन लाने के दावेदार हैं। बीर भी दुनिया में अमन चाहता है। वह भी लड़ाई-झगड़े फसाद खून-खराबे में उलझी हुई दुनिया को अमन और शान्ति का पैगाम दे रहा है लेकिन उसका पैगाम निराला है। हिन्दू मुसलमान ईसाई के नाते दुनिया में अमन लाने का दावेदार नहीं। वह तो बरमला कहता है कि,

1. न हिन्दु ही बन न मुसलमान बन
   तू इन्सान है भाई इन्सान बन

2. न हर इक बात में अन्जान बन तू
गुनाह करके न नादान बन तू
तुझे अशरफ बनाया है खुदा ने
अगर इन्सान है इन्सान बन तू

बीर की इस पवित्र बाणी से अब स्पष्ट हो गया कि बीर क्या चाहता है। बीर चाहता है कि सब लोग इन्सान बन जाएं। सब लोगों को प्रेम समाज के प्लेटफार्म से यह आवाज़ सुनाई देती है कि भाईयो, इन्सान बनो। तो बहुत से लोग हैरानी से पूछा करते हैं कि क्या हम इन्सान नहीं हैं या इन्सानों की कोई अलग नसल है। हम कहते हैं कि इन्सान की कोई अलग नसल नहीं। आप इन्सानी नसल से हैं और पूरे इन्सान हैं लेकिन शकलो सूरत के लिहाज़ से हैं, सोच विचार और निरख परख की कसौटी पर आप इन्सान बनकर पूरे नहीं उतरे।

किसी को छेड़ कर हैवान बनना
किसी को मार कर शैतान बनना
अगर इन्सानियत है बीर ये हो
तो लाहनत है तेरा इन्सान बनना

जितना प्रचार इस ज़माने में मज़हबी और रूहानी किताबों का है, इसका सौवां हिस्सा भी पहले ज़माने में

नहीं था। जितने उपदेशक और प्रचारक अब जगह जगह घूम कर धर्म उपदेश दे रहे हैं इतना प्रचार इससे पहले कभी नहीं हुआ फिर भी इस ज़माना के लोग इन्सानियत से इतने आरी हैं कि अगर पिछले ज़माने का कोई आदमी जी उठे और इनकी करतूतों को देखे तो शायद वह एक मिन्ट भी यहां ठहरना नहीं चाहेगा। श्री रामचंद्र जी को दशरथ ने नहीं कहा कि चौदह वर्ष के लिए वन में चले जाओ। ककई से बाप का इशारा पाकर रामचंद्र जी नें अयोध्या को त्याग दिया और खुशी खुशी वन को चले गए लेकिन अब लायक बेटों को सुनिए। एक ग्रेजुएट नौजवान ने अपने घर वालों से पूछे बिना हो शादी कर ली। जब जोड़ा घर पहुंचा तो बाप ने कहा, बेटा! मेरे से पूछे बगैर ही शादी कर ली। सादतमंद और नेक बेटे ने जवाब दिया कि अब्बा, जब आपने शादी की थी तो मेरे से कब सलाह ली थी।

बनवास अकेले रामचंद्र को मिला था लेकिन सीता साथ जाती हैं। कौशल्या और दूसरी स्त्रियां रोकती हैं तो सीता कहती है कि मैं अर्धांगिनी हूं, यह कैसे हो सकता है कि आधा जिस्म तो जंगल में रहे और आधा महलों में। साया जिस्म के साथ रहता है, मैं भी राम

के साथ रहूंगी। लेकिन क्या आज की देवियां ऐसी हैं और अगर आप यूरोप और अमरीका के तलाक की अदालतों के मुकदमे पढ़ें तो सिर पीट कर रह जाएं। न्यूयार्क की अदालत में एक स्त्री ने दरखास्त दी कि मुझे मेरे खाविंद से तलाक दिलाई जाए क्योंकि वह रात को जोर से खर्राटे भरता है और मुझे नींद नहीं आती।

एक और स्त्री ने अपनी तलाक की दरखास्त में लिखा कि मेरा पति कलब से देर से आता है। मैं इतनी देर इन्तज़ार नहीं कर सकती और इसलिए मुझे तलाक चाहिए।

आज से चार सौ साल पहले गुरु नानक देव मरदाना के साथ अरब तक घूम आए लेकिन अब बगैर वीज़ा के कोई वाघा की सरहद से आगे कदम नहीं रख सकता और कोई दलेरी करे तो जेल की कोठड़ियां उसके लिए खुली हैं। यहां ही नहीं, दुनिया भर के मुल्क एक जेल खाना की सूरत अख्तयार किए हुए हैं। किसी एक मुल्क का आदमी दूसरे मुल्क में बगैर वीज़ा या पासपोर्ट हासिल किए जा नहीं सकता। यह मुलको तकसीम कोई खुदाई तकसीम नहीं और न ही मुल्क या जमीन के यह हिस्से किसी खास कौम फिरका या गिरोह की अज़ली

मलकियत हैं लेकिन फिर भी इस कदर आपस में रंजिश है कि हम यह गवारा नहीं कर सकते कि कोई गैर मुल्की आदमी इस मुल्क में अज़ादाना तौर पर आए जाए।

पिछले साल हदबंदो कमीशन को रिपोर्ट छाया होने पर कितने हंगामे हुए और कितना जानी व माली नुकसान हुआ, यह अखबार पढ़ने वाले लोगों को पता ही है। सोचिये, यह इन्सानियत थी या हैवानियत।

बंगाल और बिहार के मुख्यमंत्रियों ने एक मुशतरका बयान जारी किया कि हम दोनों सूबों को मिलाकर एक सूबा बनाने के लिए रज़ामंद हैं। बयान का छाया होना था कि एक आग सी लग गई। प्रोटेस्ट किए गए, हड़तालें हुईं, जलसों में उनके खिलाफ तकरीरें हुईं। मजबूरन दोनों मुख्यमंत्रियों को अपने बयान वापस लेने पड़े। बताइये, बंगाल और बिहार की तक्सीम क्या खुदाई तक्सीम है जिसको मनसूख करने का किसी आदमी को अख्तयार नहीं या बंगाल और बिहार में अलग-अलग शकल और सूरत के इन्सान बसते हैं कि उनके एक हो जाने पर उनका निबाह मुश्किल हो जाएगा। कोई बात भी नहीं, दोनों सूबों में एक ही तरह के इन्सान रहते हैं। एक ही तरह के कानून हैं। एक ही किसम का तरज़े

हकूमत है लेकिन बाहमी रंजिश और नफरत मिलाप होने में रुकावट पैदा कर रही है और इसी के सबब हम एक दूसरे को हकीर यानि छोटा समझ कर उससे मिलने को हतक समझ रहे हैं।

खतरनाक किस्म की ज़ेहनियत

एक आदमी ने सख्त तपस्या करने के बाद अपने देवता को प्रसन्न कर लिया। देवता ने कहा, मांगो क्या चाहिए ? उस आदमी ने कहा, महाराज, जो मैं चाहूं वो ही हो जाए। देवता ने कहा, तुम्हारी बात मंजूर है लेकिन एक शर्त के साथ। वह यह कि जो कुछ तुम चाहोगे, इससे दोगुना तुम्हारे पड़ोसी को मिल जाया करेगा। उस आदमी ने यह शर्त मंजूर कर ली। घर आकर उसने कहा, मेरे लिए एक महल तैयार हो जाए। वर के प्रभाव से फौरन एक महल तैयार हो गया। उसके साथ ही उस जैसे दो महल पड़ोसी के लिए बन गए। फिर उसने कहा, मेरे लिए एक कैडलिक कार आ जाए। कार फौरन आ गई और साथ ही दो कारें पड़ोसी के भी पहुंच गई। इसी तरह से वह जो चाहता, उसे मिल जाता और साथ ही दोगुना पड़ोसी के पास पहुंच जाता। चंद महीनों में

उसके दिल में ईर्ष्या की आग पैदा हुई। उसने सोचा कि पड़ोसी के पास महल, कैडलिक कार, नौकर-चाकर क्यों हों और यह क्यों मेरी तरह सुख और आराम भोगे। नफरत और ईर्ष्या के जोश में उसने कहा, मेरी एक आंख फूट जाए। उसकी एक आंख के बंद होते ही पड़ोसी की दोनों आंखें बंद हो गईं। अब उसने इस पर भी सबर नहीं किया। चंद दिन बाद कहा, मेरी एक टांग टूट जाए। उसकी एक टांग टूट गई और पड़ोसी की दोनों। वह आलती-पालती मारकर मेढक की तरह उछल-उछल कर चलने लगा। उस पर भी उसके मन को शांति नहीं हुई। चंद दिन बाद फिर कहा कि मेरे दरवाज़े के बाहर एक कुआं खुद जाए। वहां कुआं खुद गया और पड़ोसी के दरवाज़े के आगे दो कुएं खुद गए। एक रोज़ आंधी आई। पड़ोसी को पता न चला, कुएं में गिर गया और उस आदमी को भी धक्का लगा। वह भी अपने कुएं में गिर गया और दोनों मर गए।

आज कल के इन्सानों की ऐसी ही खतरनाक जेहनियत हो रही है। अपने पास सब कुछ रखते हुए भी वो यह कभी सहन करने के लिए तैयार नहीं होते कि उसके सौवां हिस्सा भी उसके पड़ोसी के पास हो जाए।

हर आदमी की इच्छा बनी हुई है कि दुनिया में मेरी ही इज्जत हो, मुझे ही रुतबा मिले, मेरी हो हकूमत हो, मैं ही अकेला सुखो रहूं। इसका नतीजा यह होता है कि खतरनाक क़िस्म के हथियार बनाए जाते हैं, लड़ाईयां लड़ी जाती हैं। नतीजा के तौर पर आप भी तबाह होते हैं और पड़ोसी को भी बर्बाद कर देते हैं। हर नेक आदमी की यह ख्वाहिश है कि इस किस्म की खतरनाक ज़ेहनियत का खातमा होना चाहिए और इसके लिए वो अपनी-अपनी मज़हबी तदबीरें अख्तयार करते हैं लेकिन उनकी इन तदबीरों से खुदगर्जाना ज़ेहनियत का खात्मा तो होता नहीं लेकिन यह और जोर पकड़ जाती है।

इस खतरनाक ज़ेहनियत के समाप्त करने का एक ही वाहद तरीका है जो बीर हमको बतला रहा है और वह यह है कि इन्सानियत के पुजारी बनें, हममें इन्सानियत आए और हम सच्चे मायनों में इन्सान बनकर इस धरती पर जीवन बसर करें।

चार दिहाड़े दी जिन्दगी है
नेक बण के वक्त गुजार भाई
कम नेक कर नेक इन्सान बन जा
कहिन्दे वेद कुरान पुकार भाई

पूजा पाठ नमाज़ सब हैन चंगे
चंगी होर इक चीज विचार भाई
पूजा पाठ सब बीर कबूल उसदे
जेहड़ा होवे सबदा सेवादार भाई

इन्सान बनना आसान नहीं

दुनिया में हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई बनना आसान है लेकिन इन्सान बनना आसान नहीं। किसी मौलवी के पास चले जाइये, उसके कलमा पढ़ाते ही आप चंद मिनटों में मुसलमान बन जाएंगे। पादरी आपके सिर पर चंद मुक्कदस पानी की बूंदें डालकर आपको ईसाई बना देगा। हिन्दु आपको गंगा जल में नहलाकर हिन्दु बना देगें और सिख अमृत छकाकर आपको उसी वक्त सिख कहने लग जाएंगे। बौद्धों ने तो इन सब को मात कर दिया। डाक्टर अम्बेदकर की अर्थी के साथ हजारों की संख्या में हरिजन थे। शमशान भूमि में उन्हें कहा गया कि हाथ खड़े करो कि तुम बौद्ध हो। उन्होंने हाथ खड़े कर दिये और वो सब के सब बौद्ध मान लिए गये। लेकिन इन्सान इस ढंग से इन्सान नहीं बनता। उसे अपने में इन्सानियत का जोहर पैदा करना होता है। इसीलिए तो कहा है :

फरिश्ते से बढ़कर है इन्सान होना
मगर इसमें होती है मेहनत ज्यादा

सौ साल की बात है कि कलकत्ता में ईस्ट इंडिया कम्पनी का गुमाशता लखी राम उगराही करके दफतर को वापस जा रहा था। बाज़ार में एक जगह भीड़ देखकर ठहर गया। वहां एक डूबते जहाज़ की नीलामी हो रही थी। लखी राम ने भी बोली दे दी। बोली उसके नाम खत्म हो गई। लखी राम के पास जो रुपया उगराही का था, वो उसने वहां दाखल कर दिया। घंटा भर बाद तार आई कि जहाज़ सही सलामत साहिल पर पहुंच गया है। जहाज़ में जो माल लदा था अब उसका मालिक लखी राम था। उसकी कीमत के तौर पर लाखों रुपया लखी राम को मिल गया। उसने वह सारा रुपया दफतर में जाते ही जनरल मैनेजर की मेज पर रख दिया और कहा, यह आज की उगराही है। जनरल मैनेजर ने हैरानी से पूछा, इतना रुपया कैसे ? लखी राम ने सारी बात बतलाते हुए कहा कि कम्पनी के रुपए से सौदा किया था। इसलिए मुनाफा भी कम्पनी का है, मेरा इसमें क्या है ?

शिवाजी मराठा ने दरबार लगाया हुआ था। एक निहायत ही नौजवान खूबसूरत स्त्री सामने आई। शिवा

जी ने पूछा कि क्या चाहती हो ? उसने बेबाकी से कहा कि आप जैसा लड़का चाहती हूं। इसका मतलब था कि मैं आपसे शादी करके आप जैसा लड़का पैदा करना चाहती हूं। शिवा जी ने कहा, माता मुझे ही अपना लड़का समझ लो।

यह है इन्सानियत। अब देखिए, ऐसा बनना आसान है या मुश्किल। अब अपने आप इन्सान बनना मुश्किल है। गुरु कृपा यानि सच्चे रहबर से ही इन्सान इन्सान बनता है। इसलिए अपने में इन्सानियत की सिफतें पैदा करने के लिए कामल रहबर की मदद जरूर लेनी चाहिए। जब रहबर की आहला शख्सीयत और इन्सानियत सामने होती है तो वही सिफतें शागिर्द में भी पैदा हो जाती हैं और वह भी फिर उसी नमूना में ढल जाता है।

इन्सानियत की तहरीक (Movement)

बुगज़ो फसादो कीना ओ सोरश हैं रूनुमा
नायाब मुलके हिन्द में सूरत है प्रेम की
आसान ऐसी मुश्किलें होंगी अगर हुईं
अहले वतन को सख्त जरूरत है प्रेम की

ईसाई करोड़ों रुपया हर साल लोगों को ईसाई बनाने के लिए खर्च कर रहे हैं। मुसलमान भी दीन को

तबलीग के लिए इनसे पीछे नहीं। हिन्दु भी शुद्धि का सुदर्शन चक्र चलाते हैं और लाखों रुपया सनातम धर्म और आर्य समाज के प्रचार में खर्च करते हैं। सिखों का बजट भी अमृत प्रचार की तहरीक में लाखों रुपयों का होता है लेकिन खालस इन्सानियत के नाम पर किसी जगह भी एक पैसा खर्च करना मन्जूर नहीं किया जाता। मज़हबों की तबदीली पर ही यह सारा जोर लगा रहे हैं लेकिन दिलों की तबदोली को तरफ इनकी निगाह कभी नहीं जाती।

इस ज़माना में संत बूड़ सिंह जी बीर ही एक एसी वाहद हस्ती हैं जिन पर बज़ा तौर पर इन्सानियत फखर कर सकती है, जो इन्सानियत के वाहद झंडाबरदार हैं और दुनिया में इंसानियत के प्रचार के लिए बचपन से ही लगे हुए हैं। ज़माना की कोई तहरीक यानि Movement जिन पर कोई असर नहीं करती। हिन्दु मुसलमान सिख ईसाई बौद्ध जैन जिनकी निगाह में एक हैं।

अपने सीने से लगाता है हर एक इन्सान को
मम्बा ए दरिया उलफत है बूड़ सिंह
मशाले हक बन के रोशन कर रहा जुलमात में
रोशनी नूरे वाहदत है बूड़ सिंह

बीर क्या चाहता है ? यह खुद आप अपनी जुबान से "मेरी आजूं" में फरमाते हैं,

मेरी आजूं जो तेरे रूबरू है,
मेरे दिल का नक्शा यही हूबहू है
मुज़ाहिब के झगड़ों में हरगिज़ पड़ूं न,
हैं सारे ही भाई किसी से लड़ूं न
बुलन्दी पे अपने मकासद पहुंचाऊं,
मैं खुद अपनी दुनिया को आला बनाऊं
मैं नाकाम होना नहीं जानता हूं,
मैं हिम्मत को अपना गुरु मानता हूं
मुहब्बत के कलमे मैं हर रोज गाऊं,
न छेड़ूं किसी को न हरगिज़ सताऊं
सदाकत से शक्ति मैं ऐसी बढ़ाऊं,
मैं जो मुंह से कहदूं वही कर दिखाऊं
मैं खुद हूं मैं खुद्दारियां जानता हूं,
मुहब्बत को अपना खुदा मानता हूं
अगर मैं पहाड़ों से माथा लगाऊं,
करूं रेज़े रेज़े ज़मीं पर गिराऊं
यह बल बुद्धि दाता मैं तुझ से ही पाऊं,
तेरे बिन किसी को न माथा झुकाऊं

क्यूं मुझको माहदूद कोई बनाए,
मुज़ाहिब की कैदों में मुझको फंसाए
मैं इन्सान हूं बीर दुनिया वसीह है,
सभी कुछ ज़माने का मेरे मुतीह है

बीर यह कभी नहीं चाहता कि दुनिया में मज़हब का नाम न रहे। मज़हब रहें और खूब फूलें फलें लेकिन मज़हब की आड़ में जो ताअसुब और नफरत फैलाया जाता है और इन्सानियत की जो तौहीन होती है, इसे नहीं चाहता। बीर कहता है, सब इन्सान हैं, सब भाई-भाई हैं। रंग नसल ख्याल और अकीदे की बिना पर जो फर्ज़ी दीवारें खड़ी की गई हैं वो गिरा देनी चाहिए और आपसी नफरत का खात्मा करना चाहिए। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम जन्म है। इसी मनुष्य जन्म के लिए देवता भी तरसते हैं। अगर इस मनुष्य जन्म को पाकर भी हम इन्सानियत की तौहीन करते रहें और इन्सानी असूलों को पांव तले रोंदते रहें तो फिर और कौन सा जन्म होगा जिसमें हम निजात या मुक्ति हासल कर सकेंगे। बीर कहता है,

शुक्र कर रब दा हर वेले
जिसने आदमी जून विच पाया ए

तेरे वास्ते कीता है जगत पैदा
तैनूं खूब आनन्द दवाया ए
सोहणी देह दिती खूब अकल बक्षी
वाहवा ज्ञान विवेक सिखाया ए
बीरा जरा तू सोच के देख ते सही
मानुष जन्म दा लाभ की पाया ए

मानुष जन्म में ही इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति हो सकती है, किसी और योनि में नहीं। इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति ही मनुष जन्म का लाभ माना जाता है। बीर चाहता है कि सब आदमी मनुष्य जन्म के इस लाभ को हासल कर सकें। यह लाभ मज़हबों की कैदों में पड़े हुए लोग कभी भी हासल नहीं कर सकते। हजरत इब्राहिम रोज़ाना एक आदमी को खाना खिला कर आप खाया करते थे। एक दिन एक बूढ़े आदमी को खाना खिलाने के लिए घर पर लाए। जब खाना लाया गया और लुकमा उठाने लगे तो हजरत इब्राहिम नें बिसमिल्ला कहा लेकिन महमान चुप रहा। हजरत नें उनसे पूछा कि तूनें बिसमिल्ला क्यों नहीं कही। वह बोला मैं आतिश परस्त हूं। इस पर आप नाराज़ हुए और उसे खाने से उठा दिया। जब वह बाहर चला गया तो गैब से आवाज़

आई कि ए इब्राहिम, जो शख्स पैदाइश से ही मुझे नहीं मानता और कभी जिसने मेरा शुक्राना नहीं मनाया, मैं उसे रोज पैदाइश से ही रिज़क दे रहा हूं और तू उसे एक वक्त भी रोटी नहीं खिला सका। इस पर इब्राहिम पछताया और उसे दौड़ कर वापस लाया और मुहब्बत से खाना खिलाया। यह सिर्फ मज़हबी हकायत नहीं बल्कि अपने अंदर एक सच्चाई छिपाए हुए है और वह सच्चाई यही है कि हम कभी भी किसी इन्सान से नफरत न करें। हमेशा सबको प्यार भरी निगाह से देखें। आप एक जगह फरमाते हैं कि,

है इन्सां का मज़हब मुहब्बत मुहब्बत
बढ़ाये यह आपस में रिश्ता ए उलफत
जभी दुख में देखे किसी दूसरे को
उसे बीर लाज़म करे उसकी खिदमत

बीर क्या चाहता है ?

10.9.1948 को आपने जो रूहानी पैगाम दुनिया को दिया था, उसमें आपने आखिर में फरमाया है,

"मैं चाहता हूं कि दुनिया का हर एक बहन भाई प्रेम समाज में शामल होकर तमाम दुनिया के इन्सानों को

प्रेम रूपी लड़ी में पिरोने की कोशिश करे ताकि इस दुनिया में ही असली बहिशत का नज़ारा नज़र आए और वहमी बहिशत का ख्याल और तसव्वर आंखों से दूर हो जाए ।"

अब आप समझ गये होंगे कि बीर न तो शोहरत व गुरआई को पसंद करता है, न मज़हबी ताअसुब का रवादार है । वह तो सारो दुनिया के इन्सानों को प्रेम रूप लड़ी में पिरो कर इस दुनिया को बहिशत बनाना चाहता है। यही उसके जीवन का उद्देश्य है, यही उसकी चाहना है ।

—★—

बीर जी क्यों आए ?

शहनशाहे रूहानियत परम संत बाबा बूड़ सिंह जी बीर जब मेरी लड़की की शादी के अवसर पर रतिया में, जो एक देहाती कसबा है, तशरीफ लाए तो आम लोग आपस में यह कहते सुने गये कि शहर में रहने वाले यह संत जी, जिनके बड़े-बड़े आदमी शिष्य हैं और जो हमेशा रेलों या बसों में आरामदेह सफर करते हैं; यहां कच्चे रास्तों पर चलने वाली टूटी-फूटी लारी में धक्कमपेल होते हुए क्यों आए ? यह उनके लिए बड़ी अचम्भे की बात थी और वो बार-बार एक दूसरे से पूछ रहे थे कि बीर जी यहां क्यों आए ?

इस तरह से जालन्धर, होशियारपुर, कपूरथला और देहली के बहुत से आदमी, जो संत जी के मिशन से वाकिफ नहीं, अक्सर मरतबा हम से पूछा करते हैं कि बीर जी हर हफ्ता यहां किसलिए आते हैं ?

मेरी तबीयत ज़रा महसूस करने वाली वाक्या हुई है, इसलिए ज़रा सी बात मेरे लिए गोरो फिकर यानि

विचार करने का सबब बन जाती है। उनकी तरह अकसर मेरे दिल में भी यह सवाल पैदा होने लगा कि बीर जी क्यों आए हैं ? बीर जी रतिया, लुधियाना या देहली, रोहतक में क्यों आए या क्यों आते हैं ? यह मेरे लिए कोई नई बात नहीं, न मैंने कभी इस बात को बढ़ावा दिया है क्योंकि संतों के लिए शहर, कस्बा, गांव, बाग-बगीचे, जंगल, पहाड़ सब एक तरह के हैं। वो सब जगह सुन्दरता पाते हैं और हर शहर में उन्हें इक जोत प्रभु विराजमान नज़र आते हैं। मेरा अन्दाज़ सोचने का उनसे अलाहदा था। मैं सोचने लगा कि बीर जी इस संसार में हो क्यों आए ? जब कि उन्होंने अपने एक शब्द में अपने पहले रूहानी देश का हाल बयान किया है कि :

हमरे देस बसे जो कोई, हमरी बात पछाने सोई
हर कोई हमरा भेद न पावे, जो पावे हम सा हो जावे
देश हमारा ऐसा बीर, रहते हैं वहां मस्त फकीर
बिन बाती प्रकाश सुहावे, तेल बिना दीपक जल जावे
न कोई वैरी न कोई मीत, एक रंग में खेले नीत
चोर चक्कार वहां न कोई, मैं तूँ वहां सबकी मोई
एक रंग में खेलें सारे, एक जोत के हम बलिहारे
मोह तृष्णा का वहां न डेरा, न है शाम न वहां सवेरा

एक जोत का भया आनंद, हमको मिला है परमानंद
देश हमारे बसे जो बीर, उसके मन को आवे घीर

ऐसे सुन्दर देश को, इस कदर पवित्र मुलक को, जहां हर वक्त नूर की ही झलक दिखाई देती है और प्रेम की ही नूरानी झलकियां हैं, छोड़कर इल मुलक में, जहां :

तम्मदन की रयनाइयां मिट रही हैं
तसव्वर को रंगोनियां मिट रही हैं
वो दानिश को खुदबीनियां मिट रही हैं
वो नींदों की बेहोशियां मिट रही हैं
शिकन है एयां जलजलों की जबीं पर
वरसती हैं वीरानियां मौ तीं पर
धुयां सा है कुछ कसरे इलमो यकीं पर
क्यामत बपा हो रही है जमीं पर
अलम न मुरादी के लहरा रहे हैं
फसाने हकाये को ठुकरा रहे हैं
चमन अकलो दानिश के मुरझा रहे हैं
तबाही के लशकर चड़े आ रहे हैं
कड़कती है बिजली गरजते हैं बादल
लरज़ते हैं तूफां की जद में जलथल
किसी को नहीं चैन मिलता किसी पल
क्यामत की है बतने गेति में हलचल

हयाते इबन आदम को खुद डस रही हैं
ख्यालों में शोरीदगी बस रही है
तबाही की देवो कमर कस रही है
रही है जो कुछ आह बेबस हो रही है
घटायें फलक पर चली आ रही हैं
नई बिजलियां हैं कि लहरा रही हैं
फज़ां में तारोकियां छा रही हैं
खुदा बंदीयां ठोकरें खा रही हैं
चमन अपनो रयनाईयां खो रहा है
हर एक फूल तकदीर को रो रहा है

जीव संसार में क्यों आता है ?

बीर जी इस संसार में क्यों आए, यह समझने से पहले हमें यह जान लेना चाहिये कि जीव इस संसार में किन कारणों से जन्म लेता है। जोव के इस संसार में आकर जन्म लेने के तीन कारण होते हैं :

1. पहला कारण : जीवों का अपने पिछले जन्मों के अच्छे और बुरे मिले-जुले कर्मों का फल भुगतने के लिए जन्म लेना है।

2. दूसरा कारण : कुछ जीवों का अपने पिछले जन्म

में की गई प्रभु प्राप्ति की कोशिशों की तकमील करना है यानि ऐसे जीव जो पिछले जन्म में प्रेम और भक्ति मार्ग पर लग गये लेकिन मरने से पहले मंज़िल पर नहीं पहुंच सके, वो इस साधना का पूर्ण करने के लिए जन्म लेते हैं। ऐसे जीवों को गीता में योग भ्रष्ट कहा गया है।

3. तीसरा कारण जीवों का संसार में आने का यह है कि कुछ मुक्त जीव या ब्रह्मलोन या ब्रह्म को प्राप्त हुए महापुरुष संसार के दुखी जीवों के दुख दर्द को सहन न कर सके। उनके कल्याण के वास्ते अपने ब्रह्म आनन्द को छोड़कर यहां जन्म लेते हैं और अपने सत उपदेश और रूहानी ज्ञान से जीवन भर दुखी जीवों का कल्याण करते रहते हैं।

संसार में हजारों आदमियों से हमारा वास्ता पड़ता रहता है। यह कैसे पता लगे कि यह जीव किस कारण से इस दुनिया में आया है। यह पता लगाना हो तो हमें चाहिए कि हम ऐसे आदमियों की रुचि का पता लगाएं।

चंद दिन हुए मैं और श्री राम आसरा जी रईस लुधियाना चौड़ा बाज़ार से जा रहे थे। मेरे एक पुराने वाकफकार मिले और झट से उन्होंने पूछा, पंडित जी,

यहां कोई सत्संग है जो आप पधारे हैं? थोड़ी ही दूर गए थे कि मुझे मेरे गांव के एक लाला साहब मिले। मैंने उनसे पूछा, लाला जी, व्यापार का क्या हाल है, कितने सौदे किए? कुछ और आगे बढ़े तो सेठ जी के वाक्फकार मिले। सेठ जी ने पूछा कि बाबू जी, लुधियाना में इंडसट्रीयल नुमायश देखने आए? हमें तीन भिन्न-भिन्न आदमी मिले और हर एक से उसकी रुचि के मुताबक पूछा गया कि वह यहां क्यों आया। ऐसा नहीं हुआ कि मैं सत्संग का प्रेमी था, मेरे से यह पूछा जाता कि कहो पंडित जी, रुई की कितनी गांठें खरीदीं और बिनोलों का क्या भाव रहा या व्यापारी से मैं यह पूछता कि इंडसट्रीयल नुमायश में क्या कुछ देखने के काबल है या बाबू जी से सेठ जी पूछते कि आज के रूहानी दरबार में किस महात्मा का उपदेश था क्योंकि हम एक दूसरे की रुचि से वाक्फ थे इसलिए हमने उनसे उनकी रुचि के मुताबक पूछा और हमने उनके आने की वजह से उनकी पिछली रुचि को बिना पर यह समझ ली। इस तरह हम संसारिक लोगों की रुचियों को देख कर यह जान सकते हैं कि यह संसार में क्यों आए?

महाराज बीर जी के परमार्थक जीवन को छोड़ कर

अगर हम उनके गृहस्थ जीवन को देखें तो हमें फौरन पता लग जाता है कि आप गृहस्थ में होने वाले सुख-दुख और हानि लाभ से कतई बेपरवाह हैं। आपको अच्छे खाने, अच्छा पहनने और आहला रिहायश रखने से कोई प्यार नहीं। यहां तक जिस धर्म के ताईं अपने फर्ज़ की अदायगी का ताल्लुक है, आप उन्हें निहायत अच्छी तरह से अंजाम देते हैं। फर्ज़ अदा कर चुकने के बाद आप उन्हें कोई अहमियत नहीं देते और न कभी उनका ज़िक्र जुबान पर लाते हैं।

हज़ारों सत्संगियों में से किसी एक ने कभी आपको किसी रंजोगम से परेशान होते नहीं देखा और न कभी आराम के मौका पर गुंचे की तरह फूले पाया।

एक दफा राम आसरा ने गुफ़्तगू के दरम्यान फरमाया कि जब मैं पहली मरतबा हजूर के दौलत कदा यानि घर पर हाजर हुआ तो वहां टूटी चारपाइयां देख कर बेहैरत दुःख हुआ। इशारतन खिदमत के लिए अर्ज़ की तो महारज जी ने कमाल बेपरवाही से जवाब दिया कि संतों के लिए इन चीज़ों की चिन्ता न करो। अपने परमार्थ का फिक्र करो। अगर महाराज उस वक्त ज़रा भी इशारा कर देते तो कई बढ़िया नवारी पलंग भेज देता।

इससे पता चलता है कि आप हम दुनियादारों की मानिंद इस दुनिया में सुख दुख भोगने के लिए नहीं आए। दूसरे आप योग भ्रष्ट भी नहीं हैं क्योंकि शुरू से ही आपका अकीदा पक्का और इरादा मजबूत है। कभी आपने अपने असूलों में कोई तरमीम तजदीद या तनसीख नहीं फरमाई यानि कांट छांट नहीं की। कभी आपको किसी रूहानी अमर में कोई शक नहीं हुआ और न आपने आज तक किसी दीनी या रूहानी पेशवा की शागिर्दी अख्तयार की। इसलिए जीव के इस संसार में आने के पहले दो कारणों में से कोई कारण भी आपका संसार में तशरीफ लाने का नहीं है। लिहाज़ा तीसरा कारण। अपने प्रेम आनन्द को त्याग कर जीवों के कल्याण के लिए संसार में आना आपके शुभ जीवन की घटनाओं से ही स्पष्ट रूप से प्रकट है। हर घड़ी हर लम्हा आपको दीन हीन दुखी जीवों के दुख दर्द दूर करने का ख्याल बना रहता है और अक्सर आप उनके दुखों और कलेशों को देखकर इतने दुखी हो जाते हैं गोया वो दुख और मुसीबत आप की अपनी है। अज्ञान के गहरे सागर में डुबकियां लगाने वाले जीवों को बचाने के लिए आप हर वक्त फिक्रमन्द रहते हैं। अपने शरीर के आराम

को ज़रा भी परवाह न करते हुए हर इतवार को दिल्ली, रोहतक, फिरोजपुर, होशियारपुर, जालन्धर वगैरह मुखतलिफ जगहों पर उपदेश के लिए जाते रहते हैं।

आपका मिशन क्या है ?

दुनिया के लोग जब गुमराह हो जाते हैं तो उनको सही रास्ता पर लाने के लिए कोई महापुरुष अपने ब्रह्म आनन्द को त्याग कर इस संसार में जन्म ग्रहण करता है। भगवान रामचन्द्र ने मर्यादा कायम करने के लिए, श्री कृष्ण ने जुलम सितम और जबरोतादी और बेइन्सा-फियों का खातमा करने के लिए, महात्मा बुद्ध ने हिंसा को मिटाने के लिए और गुरु नानक देव ने एकता को फैलाने के लिए जन्म लिया। अवतारों पैगम्बरों संत महात्माओं की तवारीख़ पढ़ने से पता चल जाता है कि उस वक्त दुनियां में जो बुराई फैली हुई थी और जिसके सबब लोग गुमराह हो रहे थे, उसको जड़ से उखाड़ने के लिए उस वक्त के उन महापुरुषों ने जन्म लिया।

इस वक्त कौन सी गुमराही और हनेरा फैला हुआ है कि जिसको मिटाने के लिए बीर जी का नूर ज़हूर हुआ। यह बात दुनिया भर के अखबारों की खबरों,

सियासी रहनुमा के लैक्चरों और हकूमत के जंगी वचनों से जानी जा सकती है।

इस वक्त सबके लिए जंग ही बहस का मौज़ू (विषय) बना हुआ है। सब लड़ाई के ही मसलों में उलझे हुए हैं। किसी को हमला करने और किसी को बचाव करने की फिक्र पड़ी हुई है। हकूमतों और लीडरों की जंगी तैयारियां को छोड़कर घरों और बाज़ारों, मंदिरों और गुरुद्वारों, मस्जिदों और गिरजों में भी लड़ाई का माहोल बना हुआ है। हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी भी लड़ाई झगड़े में बदल चुकी है। घर में हों तो बाप बेटा, स्त्री पुरुष, बहन भाई, सास बहू आपस में लड़ते हैं। बाहर हों तो दफतर में अफसरों से और बाज़ार में दुकानदारों से, रिक्शा, मोटर बस, गाड़ी में हों कंडक्टरों, ड्राइवरों और टिकट कलैक्टरों से और मंदिर में हों तो पुजारियों से लड़ाई ठनी रहती है।

गृहस्थी तो आखिर गृहस्थी हैं। कोई न कोई बात लड़ाई के लिए बन ही जाती है पर यह गेरुए वस्त्र धारी साधु संत जिन्होंने दुनिया को त्याग दिया है वो भी आपस में जीव ब्रह्म एक हैं या दो या तीन हैं, बहस का विषय बनाकर लड़ते हैं। गर्ज़े कि दुनिया का कोई ऐसा

कोना खाली नहीं जहां कि लड़ाई न हो या लड़ाई के आसार न बन रहे हों।

जंग की तबाहकारियां

दुनिया के शुरू से अब तक की इन्सानी तारीख को अगर वर्क गिरदानी की जाए तो उसका एक एक सफा इन्सानी खून से रंगा नज़र आएगा। लड़ाईयों का जिक्र तो जानें दोजिए, दुनिया की सबसे बड़ी लड़ाई आज से पांच हजार वर्ष पेश्तर कुरुक्षेत्र के मैदान में लड़ी गई। उसमें 66 करोड़ एक लाख 35 हज़ार आदमी मारे गये। आज भारत की आबादी 36 करोड़ के करीब है गोया सारा भारत वर्ष इस लड़ाई में नष्ट हो गया था।

इसके बाद बड़ी जंगों के लिए सीर बाबल और नन्नेवा के हालात पढ़िये। सिकन्दर आज़म और जूलियस सीज़र की खून रेज़ महिमों पर नज़र दौड़ाइये। रोमन सामराज के फातहाना रथों को देखिए जिनके पहिए के तले कोमों की कोमें पिस कर चूर हो गईं। चंगेज़ खान एटलागोड़ा तैमूर के तस्करे सुनिए कि उन्होंनें किस तरह लाखों इन्सानों को खाको खून में गर्क किया। इरान, युनान, मिस्र और कारथेज़ की लड़ाईयां, विजय नगर की

तबाही, सौ साला जंग, सलीबी लड़ाईयां खानदान यार्क और लंकास्टर की लड़ाईयां, तीह साल जंग इंगलिस्तान, मुगलों, मराठों और राजपूतों की लड़ाईयां, अमरीका फ्रांस और रूस के खूनो इन्कलाब, नेपोलियन की जंगी महिमों, 1812 को जंग, क्रीमिया जंग, फ्रांस और पर्शिया, अलबानिया अमरीका की जंग रूस और जापान की जंग, गुजश्ता जंग अज़ीम अवल और दोम से बनी-नौ-इन्सान को कितना नुकसान पहुंचा है, इससे कितने आदमी मौत के घाट उतरे और बेगुनाह शहरियों पर कितने जुलम सितम तोड़े गये, इसका तसव्वर भी जिस्म को कंपा देता है।

हर मुलक की जंगी तैयारियां, हर देश की हकूमतों की रोज़ाना जंग की धमकियों से हर इन्सान सहमा हुआ है कि न जाने कब जंग का लावा उब्बल पड़े और वो तबाही और बर्बादी की गार में धकेल दिए जाएं। यह डर कोमों और मुलक की हर किसम की तरक्की में रोड़ा बना हुआ है। जो रुपया आम दुनिया की बेहतरी के लिए खर्च किया जाना था वो जंग के डर के सबब निहायत ही खोफनाक एटम और हाईड्रोजन बम्बों के बनाने में सर्फ किया जा रहा है। यह डर और खोफ को

दूर करने के लिए और इन्सान की जंगेआना ज़ेहनियत को अमनो सुलह के ज़ेहनियत में तब्दील करने के लिए और हमेशा-हमेशा के लिए दुनिया से लड़ाई झगड़ों को मिटाने के लिए

बीर इस संसार में आया है ।

बीर किस तरह हकूमतों के चढ़े हुए इस जंगी बुखार को उतारेगा जब कि उसके पास न तो तबाह करने वाले बम्बों के जखीरे हैं, न लातादाद जंगी असला है, न फौजी सिपाहियों के दस्ते हैं, न हकूमत का सहारा है। यह सच है कि बीर के पास न तो फोजी ताक्त है, न फोजी असला है लेकिन बीर के पास उन रूहानी असूलों की बेइन्तहा ताकत है जिसके प्रचार से लड़ाई और झगड़े खत्म हो सकते हैं। बीर यह जानता है कि लड़ाईयां लड़ाईयों से खत्म नहीं होतीं। इसलिए वह इस असूल का हामी नहीं है कि लड़ाईयों को खत्म करने के लिए कोई बड़ी जंग लड़ी जाये बल्कि बीर तो लड़ाईयों के बुनियादी असूलों को ही इन्सानी ज़ेहन से मिटा देना चाहता है। 1945 के रूहानी पैगाम में आपने फरमाया था, "कभी तलवारों से भी अमन हुआ है। अमन बहाल करने के वास्ते अमन ही दरकार है।"

लड़ाईयां अकसर चार वजू की बिना पर लड़ी जाती हैं। अवल-नफस्याती (मानसिक), दौम-नस्ली, सोम-इक्तसादी (आर्थिक) और चारम-सियासी।

आम फहम अबारत में आप यूं कह सकते हैं कि जंग का ताल्लुक इन्सानी जज़बात से, जमाती मुकाबले से, समाज की मौजूदा जरूरीयात से और कौमी इकतदार के तगईयर और तबदील होने से है। इन वजूहात की फिलसफाना तशरीह में न पड़ते हुए हम महात्मा बीर की निहायत ही सादा और आसान जुबान में यह भी कह सकते हैं कि दुनिया की हर किसम की लड़ाईयों और झगड़ों की जड़ खुदगर्ज़ी और नफरत है। इस खुदगर्ज़ी और नफरत में ऊपर की चारों वजुआत आ जाती हैं। आप अपनी एक लिखत में लिखते हैं कि "बड़े गोरी खोज के बाद यानि सोच विचार के बाद मैं इस निश्चय पे पहुंचा हूं कि इसका कारण सिर्फ यही है कि आजकल के खुदगर्ज़ लोगों ने अपना मतलब पूरा करने के वास्ते एक दूसरे के ज़मीर को बिगाड़ दिया है। असली और हकीकी मकसद को हटा कर लड़ाई कतल और अशांति के प्रचार को बढ़ा दिया है।" 1945 में रूहानी पैगाम देते हुए आपने फरमाया था, "अगर तुम इस राज़ को समझते तो आज कौम-कौम,

मुलक-मुलक फिरका-फिरका और भाई-भाई में जंगो जदल और लड़ाईयां न होतीं मगर तुम खुदगर्ज़ी के सबब सब कुछ भूल गये।"

जब कोई आदमी यह सोचने लगता है कि मैं ही दुनिया में एक ऐसी वाहद इकाई हूं जिसे जिन्दा रहने का हक है बाकी मखलूक गर जी सकती है तो मेरे फायदे के लिए जी सकती है वर्ना उसे जीने का कोई हक नहीं और दुनिया के तमाम ओहदे मरतबे इज्जत और आबरू के मौके और हर किसम की हकूमत ताकत और दौलत मेरे खानदान के लिए ही वक्फ है और कोई इसमें न तो हिस्सादार बन सकता है तब लड़ाई की बुनियाद कायम हो जाती है।

अगर एक आदमी ऐसा सोचता है तो आदमियों के दरम्यान, अगर एक कौम ऐसा सोचती है तो दूसरी कौमों के दरम्यान, अगर एक मुलक ऐसा सोचता है तो दूसरे मुलकों के साथ लड़ाइयां शुरू हो जाती हैं जिससे लाखों आदमी मौत के घाट उतर जाते हैं।

बीर जी ने इस खुदगर्ज़ी और नफरत को मिटाने के लिए ही इस धरती पर जन्म धारण किया है आप अपनी ज़ुबान मुबारक से अपने आने का सबब ब्यान करते हुए

फरमाते हैं,

प्रेम धर्म और प्रभु को अपने मन में धार
सारे जग में घूम कर बीर करूं प्रचार
हर मानुष को जगत में ये निशचा करवाऊं
प्रेम ही खुद भगवान है सच्ची बात सुनाऊं
बीरा खुश हो कर करूं मैं जग में परउपकार
इससे ही इन्सान के दिल को भये करार
(मानुष व्रत)

जब आपको ब्रह्म आनन्द की प्राप्ति हुई तभी आपने इस इलाही सरूर को दूसरों में बांटने और अपनी तरह ही उनको मखमूर करने का धैया कर लिया था। चुनांचे आप "प्रेम प्याला" में फरमाते हैं,

साकी जद दा प्रेम प्याला मैनूं
तुध पिलाया मन मस्ताया
एदां कर मखमूर सगल नूं
एह मेरे चित आया आख सुणाया
पीके मस्त प्याला सारे मस्ती दे
विच आवण खुश हो जावण
अन्तर बाहर रोशन होवे
गुप्त खज़ाना पावण मंगल गावण

काया अंदर मान सरोवर जो इस
अंदर नावण सुरत टिकावण
इक जोत में मस्त होए के
नूर हकीकी पावण मौज मनावण
इको इक निहारन हरदम मन नूं
प्रभ नाल जोड़न खुदीयां मोड़न
इक प्रभ दे दर्शन बिन होर न
कुझ वीं लोड़न सब कुछ छोड़न
खुदी तक्कबर परे फेंक के प्रेमी
पक्का होवे सुख नाल सोवे
हसे ते खुश थीवे हरदम गम नाल
कदी न रोवे दुख सब खोवे

जन परउपकारी आए

वृक्ष फले न आपको नदी पिए न नीर
परमार्थ के कारने संतन धरा शरीर

नदी अपना पानी आप नहीं पीती, वृक्ष अपने फल आप नहीं खाते। इस तरह सतपुरुष और महापुरुष दूसरों के भले के लिए जन्म लिया करते हैं। कितने ही जन्मों की भक्ति, त्याग और तपस्या के पश्चात जब उन्हें ब्रह्म ज्ञान और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति होती है तो वो

इसी में संतुष्ट होकर आनन्द में मग्न नहीं होते बल्कि वो स्वभाविक दया से इस आनन्द को छोड़कर इस दुखिया संसार में आते हैं और दुखो और अज्ञानी जीवों का अपने सत उमदेश और सद व्यवहार से कल्यान करते हैं। पूर्ण आनन्द की प्राप्ति हुई तो आपने इक जोत परमेश्वर से प्रार्थना की कि मैं आपकी मेहर से पूर्ण प्राप्ति पाकर आलम बाला में नहीं रहना चाहता। इक जोत परमेश्वर ने पूछा कि बीर, तुम क्यों संसार में जाना चाहते हो, वहां से कितनो ही भक्ति और प्रार्थना के बाद छुटकारा पाया है तब बीर जी नें इक्र जोत परमेश्वर के हजूर में अर्ज़ की कि—

दबिस्तानें उलफ़त का बन के मुअल्लम,
मैं दरसे मुहब्बत पढ़ाऊंगा सबको
करें पर्दा पोशी रियाकार बेशक,
मैं राज़े हकीकत बताऊंगा सबको
रहें मस्त गम को भुला दुनिया वाले,
मुहब्बत की मय मैं पिलाऊंगा सबको
सच्चाई से कर कर के रूह को मुज्जला
नजारा ए बातन दिखाऊंगा सबको
कभी न मरेंगे मेरे मिलने वाले,
अनोखा सा अमृत पिलाऊंगा सबको

है इन्सान सारे ही आपस में भाई,
लड़ो बीर मत ये पढ़ाऊंगा सबको

तब इक जोत परमेश्वर ने प्रसन्नता से आपको अपना दया पात्र बना कर इस सृष्टि में भेजा और आप शुरू से ही प्रेम और मुहब्बत का प्रचार करके दुनिया से लड़ाई और झगड़ों को खत्म करने में लगे हुए हैं। आपके प्रचार की गर्ज़ सिवाय अज्ञानी और मोह माया में लिपटे हुए जीवों को सतमार्ग पर लाने के और कुछ नहीं। इसलिए जो भी दुखी इंसान अकीदत और श्रद्धा से आकर आपके उपदेश को सुनता है और उस पर यकीन करता है, वह उसी वक्त अज्ञान और अंधकार की मुसीबत से पाक और साफ हो जाता है और आपके बारे बेसाखता कह उठता है कि जन परउपकारी आए।

फर्ज कीजिए

बिनवत हूं कर जोड़ के सुनिये कृपा निधान
साध संगत सुख दीजिए दया गरीबी दान
मैं अपराधी जन्म का नक सख भरा विकार
तुम दाता दुख भंजना मेरी करो संभार
कर जोड़े बिनती करूं भवसागर अपार
बंदा ऊपर मेहर कर आवागमन निवार
अन्तर्यामी एक तुम आत्म के आधार
जो तुम छोड़ूं हाथ मैं कौन उतारे पार
भक्ति दान मोहे दीजिए गुर देवन के देव
और नहीं कुछ चाहिए निस दिन तेरो सेव

(कबीर साहब)

प्रेमी सत्संगी भाईयो, प्रेम समाज के सत्संग के सिलसिले में मेरा यह तीसरा लैक्चर है। आज के लैक्चर का अनुमान (Heading) है-फर्ज कीजिए। आप चाहे ज़ाहिर न करें पर मन में जरूर सोचते होंगे कि सत्संग में तो प्रभु भक्ति, विश्वास, विनय, प्रेम, बिनती, भोग पदार्थों की

असारता, मनुष्य जीवन की सार्थकता पर व्याख्यान होने चाहिए। यह फर्ज कीजिए कि कौन सा विषय ढूंढा है। सत्संग का प्रोग्राम निभाने के लिए हमारा कीमती समय तो यूं ही नष्ट नहीं किया जा रहा है। भाईयो! समय की जो कदर आप करते हैं, उसके लिए आप धन्य हैं। सत्संगी को सबसे पहले समय की महिमा जाननी चाहिये। जब तक समय की कदर मनुष्य नहीं समझता तब तक वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं होता। मनुष्य और पशु में यही भेद है कि मनुष्य समय की महिमा जानकर समय के साथ-साथ उन्नति करता जाता है परन्तु पशु जैसा आज है वैसा ही दस साल बाद होगा। उसके स्वभाव में, रहन-सहन में कोई फर्क या तबदीली न होगी। महात्मा कबीर का वचन है :

कबीर ये तन जात है सके तो ठोर लगाओ
कै सेवा कर साध की कै गुर के गुन गाओ
कबीर जो दिन आज है सो दिन नांहि काल
चेत सके तो चेतयो मीच रही है ख्याल

हमारे पूज्य महाराज बीर जी भी यही इरशाद फरमाते हैं :

ए मन गैहले बावरे समा न भूल गवा
जन्म बड़ा दुर्लभ है बिर्था नहीं गवा

नाम प्रभु का बीर तू गाले हर हर स्वास
सब कुछ अपना वारके होजा उसका दास

(संत बचन)

ऐसी पवित्र रूहानी तालीम की रोशनी में और श्री महात्मा बीर की प्रधानता में मैं यह साहस कैसे कर सकता हूं कि दूर दराज़ से सफर की तकलीफ बर्दाश्त करके आए हुए प्रेमियों का समय नष्ट करूं। हां, यह अवश्य कहूंगा कि यह सत्संग, यह बचन और यह बातें साधना में लगाने के लिए कही जाती हैं परन्तु साधन गुरु से मिलता है। अब मैं अपने मज़बून की जानिब लौटता हूं। फर्ज कीजिए—यह शब्द मैंने हिसाब में से लिए हैं। आदादी हिसाब (Algebra) में किसी नामालूम अशया की कीमत मालूम कर ली जाती है। हमारे लिए भी यहां एक नामालूम चीज़ है जिसको हम मालूम करना चाहते हैं और उसे प्राप्त करने को भी ख्वाहिश रखते हैं। वह चीज़ है सच्चा सुख, न खत्म होने वाली राहत, परम आनन्द और अबदी सरूर। अब हम उसकी प्राप्ति के लिए फर्ज करते हैं।

फर्ज कीजिए

आपका ख्याल है कि सच्ची खुशी और परम सुख

रुपया के ज्यादा होने से मिल सकता है क्योंकि इन्सान की वह तमाम जरूरतें और तमाम चीज़ें और सब सामान, जिनसे कि सुख की प्राप्ति हो सकती है, रुपया से खरीदी गई हैं। रुपया अगर हो तो इससे जायदाद बना ली जाएगी। बेहतरीन आहला सूट पहनने को और खाने को लज़ीज़ और नफीज़ भोजन मिलेंगे। नौकर हाथ बांधे दरवाजे पर खड़े होंगे। सैकड़ों लोग अपनी हाजतों की पूर्ति के लिए हुक्म के इन्तजार में रहेंगे, राग-रंग की महफिलें लगेंगी। गर्ज़ कि रुपया होने से कोई ऐसी खाहिश न होगी जो पूर्ण न हो सके। धन या सम्पत्ति का, जिससे आपने अपने सुख या आनन्द की कल्पना को जोड़ लिया है, यह रोशन पहलू है। अब धन या सम्पत्ति के दूसरे पहलुओं पर गौर कीजिए। फर्ज कीजिए, आपको लाइन्तहा दौलत का खजाना मिल गया। यह खजाना कहां से मिला और कैसे मिला, इस पर बहस न कीजिए क्योंकि लक्ष्मी बिना अनर्थ के प्राप्त नहीं होती। हजारों गरीबों का गला घोटने और लाखों फरेबकारियों से दौलत मन्द कहलाया जा सकता है लेकिन हम तसव्वर कर लेते हैं कि इन गुनाहों से आपका दामन पाक रहा। हमने फर्ज कर लिया कि आपको किसी से दबा हुआ खजाना

मिल गया या आपके घर हुन बरसा और आप रात गरीब सोये, सुबह अमीर उठ पड़े। अब क्या होगा आप ऐशो इशरत में मसरूफ हो जाएंगें। रुपये के बल बूते पर आप हर अच्छी चीज़ को अपने मन्तव्य के लिए लाने की कोशिश करेंगे। इस बेजा मन्तव्य में आपको ऐसे आदमियों से भी वास्ता पड़ेगा जो दौलत के सामने झुकने से इन्कार कर देंगे। इस इन्कार से आपकी अनानियत (खुदी) को जबरदस्त चोट लगेगी और आपके हृदय में क्रोध की आग भड़क उठेगी। विषय वासनाओं की पूर्ति के लिए उनके इन्कार से अपनी मनमानी कारवाईयों में रुकावट पड़ती देखकर आप चाहेंगे कि दौलत के जोर से उनका नाम जमीन से मिटा दें और अपने रास्ते से उन कांटों को हटा दें। इस गर्ज़ के लिए आपको गुण्डों और बुरे आदमियों से याराना ज़ोड़ना होगा। यूं ही यह आपके दर-बान में आने लगे, आपका हौसला बढ़ने लगा और आप पहले की निसबत ज़्यादा मनमानी कारवाईयां करने लगेंगे। इन धन्धों में पड़कर आप कमा तो कुछ नहीं सकेंगे अलबत्ता खर्च कई गुना बढ़ाएंगे। खर्च को देखकर आपको रुपया बटोरने का फिर ख्याल आएगा और आप अपने अपार दोस्तों की मदद से जालसाज़ी और धोखेबाजी

के काम करने लगेंगे। गर्ज़ कि इन हरकात के सबब आपके तमाम अच्छे गुण, शील, सन्तोष, धर्म, उदारता, वैराग्य, विचार, दया नाश हो जाएंगे। जब यह अच्छे गुण नाश हुए फिर सुख कहां से हासिल होगा। मुसीबतें ही आएंगी। याद रखिये, इस जीव में गुण तभी तक हैं जब तक लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती। जब लक्ष्मी आ जाती है तो सब गुण जाते रहते हैं। जब तक हवा नहीं चलती तब तक बादल रहते हैं और जब हवा चलती है तब बादल जाते रहते हैं। ऐसे लक्ष्मी के आने से गुण चले जाते हैं और गरूर पैदा होता है। जब गरूर आता है तो मौत अपने साथ लाता है। महात्मा कबीर कहते हैं :

आहम अग्नि हिरदे जरे गुर से चाहिए मान
तन को यम निओता दिया हो हमरे महमान

जैसे शूरवीर हो कर अपने मुंह से अपनी बढ़ाई न करे, ऐसा आदमी मिलना मुश्किल है और हकूमत हासल होने पर भी किसी के साथ बुराई न करे, सब कुछ बराबर समझे, यह भी असंभव है। ऐसे ही अमीर हो कर सब गुणों से सम्पन्न हो, यह भी दुर्लभ है। श्री राम चन्द्र जी महाराज योग वशिष्ट में फरमाते हैं,

"इस जीव में गुण तब तक हैं जब तक लक्ष्मी

प्राप्त नहीं होती। जब लक्ष्मी आती है सब गुण जाते रहते हैं। जैसे बसंत ऋतु की मंजरी तब तक हरी रहती है जब तक जेठ-आषाढ़ नहीं आता और जब जेठ आषाढ़ आया तब मंजरी जल जाती है। ऐसे ही जब लक्ष्मी आती है तब सब सदगुण जल जाते हैं, तब कोमलता (मुलायमत) जाती रहती है। कठोरता (सख्ती) आ जाती है। जैसे पानी पतला तब तक रहता है जब तक उसमें सर्दी नहीं पहुंचती और जब सर्दी उसमें आ पहुंचे, तब बर्फ बन जाता है। ऐसे ही यह जीव शक्ति पाने से जड़ हो जाता है।" इसी कारण महात्मा जन भगवान से गरीबी के लिए प्रार्थना किया करते हैं। महात्मा चरन दास का वचन है,

सत्गुर से मांगू यही मोहे गरीबी देहो
दूर बढप्पन कीजिए नन्हा ही कर लियो

माता सहजो बाई फरमाती हैं,

भली गरीबी नम्रता सके न कोई मार
सहजो रूई कपास की काटे न तलवार
शाहन को तो भय घणा सहजो निर्भय रंक
कुंचर के पग बेड़ियां चींटी फिरे निसंग

शहनशाह रूहानियत संत बीर जी कहते हैं,

विच गरीबां वसदा मेरा करता राम
बीरा इसदे वास्ते धार गरीबी नाम
खुदगर्ज़ी को त्याग के बीर गरीबी धार
फिर तो तुझ को आप ही मिल जाए करतार
खुदगर्ज़ी को त्याग के बीर गरीबी धार
भूषण अच्छा जान ले जग में परउपकार
काम किबर को छोड़ के खिमा गरीबी धार
बीरा प्रभ दर जान हित नेक विचार विचार

यह तो बात में बात आ गई थी कि लक्ष्मी के आने से सत्गुण नष्ट हो जाते हैं और महात्मा गरीबी के आशक होते हैं। हम तो फर्ज कीजिए की दुनिया में घूम रहे थे, वहीं वापस लोटिये । अच्छा, फर्ज कीजिए, आप धनवान होते हुए भी सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के विकारों से बचे हुये हैं। दौलत का नशा आपको नहीं चढ़ा और आपके मन में इसके लिए जरा भी मोह नहीं है लेकिन बाकी दुनिया तो आपके बस की नहीं। सबको तो आप अपने जैसा नहीं बना सकते। आपके बेइन्तहा दौलत के खजानों को देखकर सैंकड़ों आपके ईष्यावादी पैदा हो जाएंगे जिनको आपकी दौलत बिछू के डंक की तरह हर वक्त

तड़पाती रहेगी। वो चाहेंगे कि आपकी दौलत किसी तरह से नष्ट हो जाये। जलजला आ जाए जिससे आपके तमाम मकान तह जमीन हो जाएं, वो बैंक फेल हो जाएं जिनमें आपका रुपया जमा है। कारोबार फेल हो जाएं। आढ़ती रकम को अदायगी से इन्कार कर दें। वगैरह-वगैरह। यह भी न सही, चोर डाकूयों को कौन रोकेगा। डाका न पड़े लेकिन उसका डर तब तक बना ही रहेगा जब तक रुपया आपके पास है। इनको भी नज़र अंदाज़ कर दीजिए। आपके रिश्तेदार आपसे इमदाद चाहेंगे, कर्ज़ मागेंगे और फिर इसे हजम कर जायेंगे। मान लीजिए, आपके सब सम्बन्धी धनी और सन्तोषी हैं पर लड़के तो काबू से बाहर हो जायेंगे, आप रोकेंगे, समझाएंगे पर वो नहीं मानेंग। आखिर वो आपको मौत के दर पे होंगे और किसी न किसी तरह आपको खतम करने की कोशिश करेंगे ताकि आपको रास्ते के रोड़े की तरह दूर फेंक दें। जहांगीर ने अकबर से इसी तरह बगावत की थी। तारीख में बहुत कुछ लिखा है। वहां देख लें। फर्ज कीजिये, आपके लड़के भी आपकी मानिंद सुशील और सदाचारी हुए मगर लक्ष्मी के स्वभाविक गुण को नष्ट करना तो आपके बस का नहीं है जैसे आग का स्वभाविक गुण

जलाना, पानी का स्वभाविक गुण शीतलता, हवा का स्वभाविक गुण सुखाना है ऐसे ही लक्ष्मी का स्वभाविक गुण चंचलता और अस्थिरता है। यह हजार यत्न करने पर भी किसी जगह हमेशा के लिए नहीं ठहरती। इसी कारण सल्तनतें दरम बरम हो जाती हैं, अमीर गरीब हो जाते हैं। योग वशिष्ट में लिखा है,

"जैसे पत्ते के ऊपर पानी की बूंद नहीं ठहर सकती, ऐसे ही लक्ष्मी भी नहीं ठहर सकती। जैसे पानी में लहर उठकर मिल जाती है ऐसे लक्ष्मी भी हो कर मिट जाती है। हवा को रोकना कठिन है। वह भी कोई रोक सकता है। आकाश को पीसना यानि सफूक करना बहुत मुश्किल है। वे भी कोई कर सकता है और बिजली का रोकना बहुत कठिन है, वह भी कोई रोक सकता है। पर लक्ष्मी कोई नहीं रोक सकता। जैसे खरगोश के सींगों से कोई मर नहीं सकता और आरसी के ऊपर जैसे मोती नहीं ठहर सकता और जैसे लहर में गांठ नहीं पड़ती वैसे ही लक्ष्मी भी नहीं ठहर सकती। लक्ष्मी भी बिजली की चमक होती है और मिट जाती है। जो लक्ष्मी पाकर अमर हुआ चाहा, उसको महामूर्ख जाना।"

महात्मा भर्तृहरि जी ने नीति शतक में लिखा है

कि दान, भोग और नाश, ये तीन गुण धन के हैं। स्थिरता या एक जगह ठहरना इसका गुण नहीं है। जब स्थिरता गुण न हुआ तो फिर अस्थिर पदार्थ की प्राप्ति में लाभ क्या हुआ। कुछ भी नहीं। हां, वियोग से दुःख जरूर होगा क्योंकि यह नेम है कि जो पदार्थ चाहे जड़ है या चिश्ती, कुछ समय हमारे पास रहेगा। इससे हमारा मोह हो जाएगा चाहे हम विराग की रट लगाते ही रहें लेकिन आंतरिक मन में इसकी प्रीति के संसकार जम ही जाएंगे। इस नेम से चाहे हम लक्ष्मी से कितने ही वैराग्यवान रहें प्रन्तु उससे मोह हो ही जाएगा और जब यह सम्बन्ध टूटेगा तो महादुःख की प्राप्ति होगी। महात्मा कबीर जी फरमाते हैं,

कबीर माया वेसवा दोनों की इक जात
आवत को आदर करें जात न पूछें बात

भगवान रामचंद्र वशिष्ट से कहते हैं, "जो कुछ सम्पदा है वो आपदा यानि मुसीबतों की जड़ है क्योंकि जब लक्ष्मी पाता है तब बड़े-बड़े सुख भोग करता है और जब लक्ष्मी नहीं रहती है तो तृष्णा से जलता है और जन्म पे फिर जन्म पाता है। लक्ष्मी की इच्छा ही मूर्खता है। यह तो क्षण भंगुर है। इससे भोग उपजते

नाश होते हैं। जैसे पानी में लहर पैदा होती है मिट जाती है।" यह तो हुई शास्त्रीय बातचीत। अब आप दो धनवानों के अनुभव सुन लीजिये ताकि आपके मन में यह न रहे कि यह तो निरी ख्याल की परवाज़ है वर्ना आनंद तो दौलतमंदों को ही हासिल होता है। गरीबी का जीवन भी कोई जीवन है। राकफैलर का नाम आपने सुना होगा। यह संसार के प्रसिद्ध धनवानों में से एक हैं। उनके धन की गिनती तो क्या हो सकती है, दान का भी शुमार नहीं हो सकता। पहले उनके दान की एक बात सुन लीजिए। एक दफा उन्होंने एक रिसर्च के काम में डेढ़ करोड़ रुपया दान दिया। इस दान का ऐलान एक जलसा में, जिसमें आप खुद मौजूद थे, किया गया तो कहा गया, "मिस्टर राकफैलर का बहुत धन्यवाद किया जाता है प्रन्तु जिस कार्य के लिए आपने यह रुपया दान दिया है उसके लिए यह रकम काफी न होगी। इस पर राकफैलर ने बगैर किसी पशोपेश के एक करोड़ और इज़ाफा कर दिया यानि बजाय डेढ़ करोड़ के अढाई करोड़ रुपया कर दिया। अब आप उनकी दौलत का अंदाज़ा कीजिएगा लेकिन इस कदर धनवान होने पर जब आपसे पूछा जाता है कि क्या आप पूर्ण सुखी हैं तो आप कहते

हैं कि बावजूद इस कदर माल दौलत के होने से मुझे दिली राहत और दिली खुशी नसीब नहीं बल्कि हमेशा फिकरो रंज में गलतान रहता हूं।"

एक और धन कुबेर अपने जीवन के बारे में लिखता है, "मेरा जीवन भो कितना दुखमय जीवन है जिसका अंदाजा हो ही नहीं सकता। लोग समझते हैं कि मैं पूर्ण सुखो होऊंगा लेकिन ऐसा नहीं है। मैं तो जान के बचाव के फिक्र में ही घुला जाता हूं। किसी शहर या जलसे में जाना हो तो ऐलान पूर्व के रास्ते जाने का करता हूं और जाता हूं चक्र काट पश्चिम के रास्ते ताकि ऐसा न हो कि रास्ते में कोई बम न रख दे, हमला न कर दे। अज़ादाना तौर पर घूमने की सोच ही नहीं सकता। इसी तरह से खाने पीने के बारे में है। कोई ज़हर मिला कर न दे दे, कोई नशा वगैरह न खिला दे। इसी फिक्र में पहले औरों को खिलाता हूं। ज । देखता हूं कि उन पर ज़हर का असर नहीं हुआ तब कुछ लुकमे लेता हूं। यही हाल सोने का है। सख्त पहरों के दरम्यान करवटें लेकर रातें गुजारता हूं। गर्ज़ कि दिन और रात में एक घड़ी भी चैन की नसोब नहीं होती। अब आप अंदाज़ा कीजिए कि मैं धनवान होता हुआ सुखी हूं या गरीब

होता हुआ एक मजदूर सुखी है जिसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं। जो सुख से पांव पसार कर सोता है और भूख लगने पर बड़े आनंद से सूखी चपाती से अपने पेट की आग बुझाता है।" एक विद्वान लिखता है,

"जब मैं देखता हूं कि एक आदमी दिन रात बर्फ के खिलौने बनाने की कोशिश कर रहा है और उसे खुशी की बुनियाद बनाना चाहता है तो मैं कहता हूं, देखो यह शख्स बर्फ के खिलोने बनाने की कोशिश कर रहा है। जिस तरह बर्फ से खिलोने बनाना असंभव है इसी तरह दौलत से खुशी की उम्मीद रखना फजूल है क्योंकि यह दौलत नहीं है जो खुशी दे सकती है। अगर दौलत खुशी देने वाली होती तो हम लखपतियों और करोड़पतियों को हमेशा सुख में ही देखते। मगर अमर वाक्या क्या है? जाओ उनके सीने टटोलो। तुम को आग धधकती हुई नज़र आयेगी।"

इस प्रकार लक्ष्मी से आनंद प्राप्ति पर विचार करने से यह साफ प्रकट हो गया है कि आनन्द और खुशी के हासल करने के लिए जो अनुभव हम अपने जेहन में बनाए हुए हैं वो सब बेबुनियाद है और सच्चाई से खाली है। दौलत के वृक्ष पर दुख और तकलीफ के

ही फल लगते हैं जो देखने में तो बहुत सुन्दर जान पड़ते हैं प्रन्तु होते हैं ज़हर की पुड़िया।

अब हम इस प्रकार की एक और कल्पना पर विचार करते हैं जिससे हमने मानवी सुख को सम्बन्धित किया हुआ है और यकीन किया हुआ है कि मेरी यह वस्तु प्राप्त हो जाए तो हमारे सुख की सीमा न रहे। यह कल्पना है। बहुत समय तक जोने को इच्छा, काफी लम्बो उम्र जिसे हम सालों को हदबन्दो से दूर रखना चाहते हैं। उसके साथ हो संसारिक भोग पदार्थों की प्राप्ति और उनके भोगने को प्रबल शक्ति।

फर्ज कोजिए, आपको इतनी लम्बी उम्र हासिल हो गई जिसकी गिनती सालों में नहीं हो सकती लेकिन इस लम्बो उम्र की खुशो आपको तभी हो सकती है जब औरों को इस कदर लम्बो उम्र न मिले क्योंकि किसी वस्तु को महानता उसी समय तक है जब तक कि वह आम नहीं और किसी आप जैसे तक ही सम्बन्धित है। आम हो जाने पर न तो चीज की कदर होती है न खाहिश। फर्ज कीजिए कि आपको लम्बी उम्र, जितनी आप चाहते हैं, प्राप्त हो गई। उसके साथ ही बइन्तहा सामान ऐशो इशरत भो मुहईया हो गया और आप दिन

रात का विचार छोड़ कर भोग भोगने में तत्पर हो गये प्रन्तु कल्पना के संसार में भगवान के नेम को तो नहीं तोड़ा जा सकता। चिरकाल के भोग से भोग्य वस्तुओं का नष्ट होना जरूरी है। तब उनसे वियोग का होना बहुत दुखदाई होता है और चित की शांति जातो रहती है। यदि यह कल्पना की जाये कि आपको उम्र और जवानी चाहिये, पदार्थ तो प्राप्त होते हो रहेंगे हमें तो भोग से मतलब है, भोग पदार्थों से नहीं। तब इस नियम को टाला नहीं जा सकता कि विषय भोगों से तृष्णा बढ़ती है, पूर्ण नहीं होती। जैसे आग पर घी डालने से आग शांत नहीं होती बल्कि और प्रचंड रूप धारण कर लेती है इसी प्रकार विषय वासनाओं की पूर्ति से चित्त को शांति प्राप्त नहीं होती और लालसा बढ़तो है। इसीलिए शास्त्रों में कहा है कि जो भोग को सुख रूप जान कर उसके पाने की इच्छा करता है वो परम दुख का कारन है। जैसे शराब का भरा हुआ घड़ा देखने में ही सुन्दर लगता है प्रन्तु जब उसको पिये तो मनुष्य मतवाला होकर दुखी हो जाता है, निरादर पाता है। ऐसे ही संसारी भोग देखने में अच्छे लगते हैं प्रन्तु जब उनको भोगता है तब तृष्णा में मतवाला हो कर गुलाम

बन जाता है, महादुख को प्राप्त होता है। जैसे पानी देने से वृक्ष बढ़ता है ऐसे ही भोग भोगने से शक्ति क्षीण होती है और तृष्णा बढ़ती है और फलती फूलती है और फिर यही तृष्णा है जो मनुष्य को आवागमन के चक्कर में घुमाती है और तरह-तरह के दुखों में फंसाती है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

तृष्णा वडा नर्क है बात यह सच्ची जान
तृष्णा में फंस जीव यह भोगे कष्ट महान
तृष्णा वडा नर्क है जाले करे स्वाह
तृष्णा में फंस आदमी बीर होवे गुमराह
तृष्णा वडा नर्क है करे जीव को ख्वार
दर दर भटकावे देवे बड़ा अज़ार
तृष्णा वडा नर्क है इसमें फंस के बीर
मानुष सुख न पा सके न मन होवे धीर
तृष्णा वडा नर्क है ऐसी जगह फंसाये
साच कहूं इस कैद से बीर न निकला जाये
तृष्णा वडा नर्क है करे बीर गुमराह
खुद्दारी को छोड़ के मानुष होए तबाह
तृष्णा वडा नर्क है इसका इक इक दुःख
बीरा मसल सुमेर के कैसे बचे मनुष

एक प्राचीन इतिहास

लम्बी उम्र और ऐशो इश्रत से राहत नहीं मिलती। प्राचीन समय में भारत में ययाति नाम के एक राजा राज करते थे। वह बहुत ही धर्मात्मा और साधु स्वभाव नृप थे। उन्होंने एक हजार वर्ष तक खूब जी खोल कर ऐशो इश्रत की लेकिन उनका मन संसारी विषय भोगों से न भरा। जब उनके अन्दर ऐशो इश्रत की और तम्मन्ना बाकी रही तो उन्होंने अपने बेटों से कहा, पुत्रो, अभी तक मेरी इच्छाएं पूर्ण नहीं हुई हैं। इसलिए तुम अपनी जवानी की उमर एक हजार वर्ष के लिए मुझे देकर मेरा बुढ़ापा ले लो। इस अर्सा के बाद में अपना बुढ़ापा ले लूंगा और तुम्हारी जवानी तुम्हें वापस कर दूंगा लेकिन परू के सिवाय किसी ने भी ययाति की बात न सुनी। परू ने नम्रता पूर्वक पिता की बात स्वीकार कर ली। उन्होंने ययाति को अपनी जवानी देकर उनका बुढ़ापा ले लिया। तब बुढ़ापे के सारे लक्षण उनमें आ गये और ययाति को मन चाही वस्तु प्राप्त हो गई यानि उनके बुढ़ापे के आसार गायब हो गये और वह जवान बन गये। फिर क्या था उन्होंने नये जोश के साथ विषय सुख लूटना आरम्भ किया और पूरी लग्न

के साथ विषय रूपी प्रेम अग्नि में अपने को भसम होने दिया। वह अपनी इस अवस्था से बहुत प्रसन्न थे लेकिन जहां उनको उम्र समाप्ति की बात याद आती थी वह दुखी हो जाते थे। जब निश्चित समय बीत गया तो परू के पास जाकर ययाति ने कहा,

"मेरे पुत्र, तुम्हारी जवानी की उम्र लेकर मैंने पूर्ण रूप से अपनी इच्छा के अनुसार ऐशो इश्रत किया लेकिन इच्छाएं अभी तक कमजोर नहीं हुईं। भोग विलास ज्यादा से ज्यादा बढ़ रही है। आग में घी डालने से जैसे उसकी लपटें बढ़ती हैं इसी प्रकार काम रूप भोग वाससायें बढ़ती हैं। अगर दुनिया भर की सब चीज़ें किसी आदमी को प्राप्त हो जाएं तब उसकी वासना की तृप्ति नहीं होगी और उसको सबर नहीं आएगा। लेकिन आनन्द इसके नाश में ही है। हजार वर्ष तक मैं खाहिशों को पूरा करने में लगा रहा। अब समझ में आया कि ब्रह्म को पाने से ही सुख और शांति मिल सकती है। विषय भोगों की प्राप्ति से नहीं। इसलिए अब मैं इसके लिए ही प्रयत्न करूंगा और अपने जीवन के बाकी दिन मैं भगवत भक्ति में लगाऊंगा।" इसके बाद उन्होंने परू को गद्दी पर बिठाकर जंगल का रुख किया और तपस्वी का जीवन व्यतीत करने लगे।

महाराज ययाति जो भारत के सम्राट थे, जिन्हें हर प्रकार के भोग पदार्थ एक इशारे पर ही प्राप्त होते थे, जिन्हें लम्बी आयु अपनी इच्छा के अनुसार मिल गई थी, जो पूरे ज्ञानवान थे, उनकी इस गवाही से आप पर प्रकट हो गया कि दीर्घ आयु और भोग पदार्थ की प्राप्ति से परम आनंद का हासिल होना असंभव है। प्राप्ति से पहले समय और संसारिक पदार्थ महान और उत्तम मालूम पड़ते हैं परन्तु समय व्यतीत हो जाने पर और भोग पदार्थ भोगे जाने पर बेकीमती जान पड़ते हैं। हजारों साल का लम्बा अर्सा एक सैकिन्ड ही मालूम पड़ता है और गया ऐशो आराम सिर्फ सपना ही मालूम देता है। यही माया की विचित्रता है और यही सुराब है कि दुनिया को अपने धोखे में फंसाये हुए हैं। जैसे रेगिस्तान के धोखे में पानी का सुन्दर झरना और हरे भरे वृक्ष नजर आते हैं और ज्यों-ज्यों उनके पास जाने का यत्न किया जाता है वो वैसे ही दूर होते जाते हैं। आखिर जान से हाथ धोने पड़ते हैं परन्तु उस सुन्दर झरने की प्राप्ति नहीं होती। ऐसे ही संसार रूपी रेगिस्तान में दीर्घ आयु और भोग पदार्थों में आनन्द की झलक नज़र आती है परन्तु हजार कोशिश करने पर भी इसको हासिल नहीं किया जा सकता और आदमी तड़प-तड़प कर जान गंवा देता है।

परम आनन्द कहां है ?

तब परम आनन्द कहां है और कैसे प्राप्त किया जाता है ? यह विचारने की बात रह जाती है। इस गुत्थी को वही हल कर सकता है जो विषय वासनाओं के दुर्गम वन को लांघ गया है, जो मोह माया के सागर को पार कर चुका है, जो कमल की भांति जल में रहता हुआ जल के ऊपर ही रहता है। संसार को न त्यागकर संसार में रहता हुआ ही परम धाम की प्राप्ति कर चुका है। ऐसे किसी महा आत्मा की शरण पकड़ने पर ही इस भेद का पर्दा उठेगा, माया का मोह मिटेगा और ज्ञान का प्रकाश होगा वर्ना भटकता ही रहेगा और माया का यह चक्र खत्म नहीं होगा, चलता ही रहेगा। ऐसे ही एक उच्च महात्मा का ज़हूर पुरनूर इस तारीक दुनिया में प्रभु इच्छा से अज्ञानी और अंधकार में डूबे हुए प्राणियों के उद्धार करने के लिए इस भारत वर्ष में हुआ है। आज तक रूहानियत में भारत सारे संसार का गुरु रहा है। यहां से ही शांति का उपदेश मिलता रहा है और मिलेगा। जैसे सूरज के निकलने का मुकाम हमेशा से मशरक रहा है और आईन्दा मशरक ही रहेगा, इसी तरह संसार को आनन्द और अमृत पिलाने का चश्मा भारत ही रहा है और भारत ही रहेगा।

संसार में इस समय जो दुख और अशान्ति की ज्वाला धधक रही है जिसके कारण हर एक प्राणी चारों तरफ दुख ही दुख की गर्मी महसूस कर रहा है और सही रहनुमाई न होने के कारण विषय भोगों में सुख और शांति जान रहा है और इन विषय भोगों में पड़ कर पहले से भी ज्यादा अपने शरीर और रूह को जला रहा है, इसको शान्त करने के लिए श्री संत बूड़ सिंह जी बीर के रूप में प्रेम शक्ति का जहूर हुआ है। इस प्रेम शक्ति की रहनुमाई हासल करके, इस प्रेम शक्ति का सहारा लेकर इस प्रेम शक्ति रूपी कोच धार कर मनुष्य समाज निर्भय होगा और आनन्द लाभ करेगा। बीर जी प्रेम की महमा का वर्णन करते हुए फरमाते हैं,

बीरा सच्चे प्रेम में लुत्फ बड़ा है मीत
मन रहता मसरूर है करके देखो प्रीत
जेकर होती शांति धनवानों के पास
बीरा होते जगत में धनी न मूल उदास
लेकिन बीरा शांति साच बिना न होए
जो हिरदे में धार ले उसे प्राप्त होए
कंचन मोती लाल से राम मिले न बीर
मन दे उसको मोल ले गर हिम्मत है बीर

साचे धंधे लाग के झूठे धंधे छोड़
बीरा धीरज आएगो प्रीत प्रभु से जोड़
जो चतुराई छोड़ के राम भक्ति मन लाए
बीरा मंजिल पहुंच कर वो ही सब कुछ पाए

इन पद्यों में श्री महाराज ने पूर्ण शांति और पूर्ण आनन्द की प्राप्ति का महान पर सरल और सादा साधन प्रेम बतला दिया है। धन की और संसारिक पदार्थों की असारता समझा दी है और साफ तौर से दरशा दिया है कि इस दुनिया के यह सामान, यह सारे धंधे, धन दौलत, हीरे मोती सच्ची शान्ति की प्राप्ति में कुछ भी सहायक नहीं हो सकते। इनके बलबोते पर, इनके सहारे पर जो भवसागर तरना चाहे; जो मोह माया के जाल से निकलना चाहे और बन्धन से मुक्त होना चाहे तो भ्रम मात्र है, धोखा ही धोखा है। इससे बन्धन और मजबूत होते हैं। इनकी ताकत बढ़ती है, पकड़ पुख्ता होती है। फिर गृहस्थ का क्या बनेगा, यह सवाल सामने आता है। श्री महाराज के प्रेम योग में यही विशेषता है, यही खूबी है कि वो गैर कुदरती नहीं। संसार या उसके पदार्थों के त्याग करने की तालीम नहीं देता। तन पर भभूत रमाने और बाल

बच्चों को रोते चीखते घर छोड़ कर जंगल की राह लेनें का हुक्म नहीं देता बल्कि बीर जी फरमाते हैं कि प्रेम में छोड़ना नहीं होता, नफरत का सबक पढ़ना नहीं होता, प्रेम में तो ग्रहण करना होता है। सिर्फ एक बात की एतहाद करनी होगी, वह जो ऊपर दर्ज की गई है, जो महाराज के आखरी पद्य में वर्णन हुई है यानि चतुराई छोड़ना। चतुराई का मतलब है कि भगवान की साता से इन्कार करके उनके पवित्र नेमों का विचार न करते हुए अपनी मनमानी कारवाई करते रहना। यह चतुराई सब मुसीबतों की जड़ है। इस चतुराई के सहारे लड़ाईयां होती हैं, झगड़े होते हैं, फिरके बनते हैं, गद्दियां कायम होती हैं और आदमी एक दूसरे के खून के प्यासे होते हैं। यही चतुराई खुदी की जड़ और अनानियत की बुनियाद है। यही चतुराई ब्रहम से जीव और जीव से पशु बनाती है। यही चतुराई जन्म मरन के चक्कर में घुमाती है। इस चतुराई को छोड़कर प्रभु भक्ति में मन लगाना चाहिये। जिसने यह चतुराई छोड़ दी, खुदी को मार लिया, अनानियत से ऊपर उठ गया, वो ही मुक्त हुआ, वो ही मंज़िल पर पहुंचा, उसी ने सब कुछ पाया।

कैसा सुख ?

संसार में ऐसा कौन सा मनुष्य है जो सुख नहीं चाहता। यह सारे पापड़ सुख के लिए ही तो बेले जा रहे हैं। मगर मनुष्य कैसा सुख चाहते हैं, इसमें भेद है। कुछ मनुष्य झूठे सुख के पीछे गुमराह हुए हैं, इसको हम इंद्रिय सुख कह सकते हैं। यह कुछ अर्सा के लिए होता है। दूसरा सुख अटल है। यह हमेशा का है। इसमें कमी नहीं होती। यह खत्म नहीं होता। इसे छीना नहीं जा सकता। इसकी लज़्ज़त में फर्क नहीं आता। इसे आत्मिक सुख भी कहते हैं। अब आप कैसा सुख चाहते हैं ? यकीनन आत्मिक सुख या अमलो राहत। यह आत्मिक सुख खरीदा नहीं जा सकता, उधार नहीं मिलता। किसी जगह जखीरा या ढेरी की शक्ल में मौजूद भी नहीं। इसे कोशिश से, मेहनत से और साधनों से और गुरु कृपा से पाया जा सकता है। अगर आप इसकी जरूरत महसूस करते हैं तो इसकी प्राप्ति के फर्जी साधन, धन दौलत, कुटम्ब, ओहदा, मर्तबा, लम्बी उम्र वगैरह का ख्याल छोड़ कर प्रेम समाज के सत्संग की

शरण आएं, बीर से रोशनी हासिल क। रें आपको सच्चा मार्ग मिलेगा क्योंकि वह तो खुद चाहते हैं कि,

हम चाहते हैं जगत में फैले प्रेम महान
इक दूजे से प्रेम कर सुखी हो बीर जहान
दाता मैं कर जोड़ के मांगूं तुझ से दान
प्रेम सिखाऊं बीर मैं हिम्मत दे भगवान

—★—

क्या आप मेरा साथ देंगे ?

लाखों साल पहले की बात है, मध्य भारत के जंगलों में एक डाकू रहता था। राह चलते मुसाफिरों को लूटना उसका पेशा था। इसमें और दूसरे डाकुओं में इतना फर्क जरूर था कि जहां दूसरे डाकू बेशुमार धन दौलत जमा करने के लिए डाके मारा करते थे वहां यह सिर्फ अपने बूढ़े मां बाप और छोटे बाल बच्चों का पेट पालने के लिए यह काम किया करता था। एक दफा उसके करीब से एक साधु का गुजर हुआ। वह ताक में था। फौरन ललकारा, "ओ जाने वाले, ठहर जा, वर्ना जान की खैर नहीं।"

साधु ने हैरानी से जो पीछे मुड़ कर देखा तो एक डरावनी शकल के आदमी को अपने पीछे खड़ा पाया जो उसकी तरफ घूर कर देख रहा था। साधु ने कहा, "बच्चा क्या चाहते हो ?"

डाकू बोला, "बस यही कि जो कुछ तुम्हारे पास है,

यहीं रख दो वर्ना एक ही वार से सिर धड़ से अलग कर दूंगा।"

साधु बोला, "मेरे पास धन दौलत तो है नहीं। यह एक चादर, कमंडल और चंद पुस्तकें हैं, तुम ले लो।"

डाकू ने कहा, "हां, हां, जो कुछ तुम्हारे पास है जल्दी से यहां रख दो।"

साधु ने कमाल बेपरवाही से चादर कमंडल और पुस्तकें उसके आगे रख दीं। फिर कहा, "बेटा, यह चीज़ें तुम सम्भाल लो लेकिन एक बात मुझे जरूर समझा दो कि तुम यह लूट खसूट का काम क्यों करते हो?"

साधु का निर्भय चेहरा देख कर और मीठी बातें सुन कर डाकू का दिल भी किसी कदर पसीज गया और जो नफरत और हकारत लूट के समय उसमें मौजूद थी, अब उसमें नहीं रही। एक लम्हा चुप के बाद डाकू ने कहा, "बाबा, यह काम मुझे अपने बूढ़े मां बाप की सेवा और छोटे बच्चों की परवरिश के लिए करना पड़ता है।"

साधु नें कहा, "बच्चा, जब उनके लिए ही कर रहे हो तो क्यों और अच्छा काम नहीं करते।"

डाकू ने कहा, "बाबा, इसमें अच्छे और बुरे का क्या सवाल है। जब मैं यह काम उनके लिए ही कर

रहा हूं तो इसके जिम्मेवार भी वह खुद ही बनेंगे।"

साधु ने कहा, "नहीं बच्चा, यह ठीक नहीं है। जो काम तुम करते हो चाहे अपने लिए या किसी और के लिए, इसके जिम्मेवार तुम ही ठहरोगे। भला आज तुम्हें हकूमत पकड़ ले तो इस लूटमार की सजा तुम अकेले ही भुगतोगे, तुम्हारे मां बाप और बाल बच्चे तुम्हारा साथ नहीं देंगे। जब यहां की हकूमत का यह कानून है तो फिर धर्मराज की अदालत में तुम्हारा कौन साथ देगा। सुनो, साधु ने इक तारा उठाकर कहा कि,

तेरा तेरे बिना कोई नांहि

तेरा तेरे बिना कोई नांहि,
तू देख ले सोच विचार के
जगत पदार्थ जितने भी दिसदे,
दस खां नाल गये नी किसदे
पल पल छिन छिन जांदे नी खिसदे,
उड़ गये जो पन्छी डार दे
काहनूँ पै गयां उल्टे राहीं,
तेरा तेरे बिना कोई नांहि
निस दिन लोभ लालच विच लग के,
जावें माल बेगाने ठग के

सुत दारा सम्बन्धी जग के,
कोई महरम नहीं आखरकार के
जेहड़ा चुक के लड़ेगा बांहि,
तेरा तेरे बिना कोई नांहि
मेरी मेरी न कर प्यारे,
छड के जाणे चमन प्यारे
रोंदे बैठे सम्बन्धी सारे,
कोई कैंहदा नहीं दम मार के
रह जा अज दी रात इस थाईं,
तेरा तेरे बिना कोई नांहि
कैंहदा सुरजन दास प्राणी,
बहुत माण थोड़ी ज़िन्दगानी
निकले दम ते लै गए मसाणी,
जिहड़े भुखे सी तेरे दीदार दे
सब बह गए मार के ढाईं,
तेरा तेरे बिना कोई नांहि
तू देख ले सोच विचार के,
तेरा तेरे बिना कोई नांहि

डाकू बोला, "ओ बाबा, एक चादर कमंडल ले कर झूठे झूठे राग क्यों गाते हो ? भला जिनके लिए मैं इस

कदर पाप ढो रहा हूं वो मेरा साथ क्यों नहीं देंगे।" साधु ने कहा, "अगर तुम मेरी बातों को झूठ समझते हो तो जाओ, अपने घर वालों से पूछ आओ। अगर वो कह दें कि हम तेरा साथ देंगे तो मैं झूठा ठहरा।"

डाकू ने कहा, "बाबा, बहुत चालाक हो। इस बहाने मुझे घर भेजकर खुद यह चीजें लेकर भाग जाना चाहते हो।"

साधु ने कहा, "अगर तुम्हारा यह ख्याल है कि मैं भाग जाऊंगा तो उस सामने वाले वृक्ष से तुम मुझे बांध जाओ।"

डाकू को यह तजवीज़ पसन्द आई। उसने एक मोटे रस्से से साधु को खूब जकड़ कर वृक्ष के तने से बांध दिया और खुद जल्दी जल्दी घर को चल दिया। खाली हाथ घर आते देख कर बाप ने कहा, "बेटा, आज इतनी जल्दी क्यों लौट आए?" डाकू बोला, "वहां बहुत इन्तजार करने पर भी कोई मुसाफिर इस रास्ते से नहीं गुजरा, वहां बैठे बैठे एक बात अचानक जेहन में आ गई वह पूछने के लिए आया हूं।" बाप ने कहा, "पूछो।"

डाकू बोला, "मैं जो हर रोज़ आपके लिए पाप करता हूं। मौत के बाद जब यमराज मुझे सजा देंगे तो उस वक्त

क्या आप मेरा साथ देंगे ?" बाप ने लेटे-लेटे ही कहा, "नहीं बेटा नहीं। अपनी करनी आप भरनी। जब तुम बच्चे थे, जिस तरह बन सका हमने तुम्हारी परवरिश की और तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होने दी। अब हम बूढ़े हैं। तमाम ऐज़ा जवाब दे गये हैं और तुम्हारे सहारे हैं। जिस तरह बने, तुम हमारी सेवा करो।" डाकू को यह जवाब सुन कर कुछ पछतावा हुआ। फिर वो अपनी स्त्री और बच्चों के पास गया और उनसे भी यही पूछा। जब वहां से भी यही जवाब मिला उसकी आंखें खुल गईं। वह अपने किए पर पछताने लगा। वह बेहद अफसोस में डूबा उस साधु के पास पहुंचा। उसको वृक्ष से खोलकर निहायत शर्मिन्दगी के साथ कदमों में गिर कर बच्चों की तरह रोने लगा। जब कुछ हलका हुआ तो बोला, "महाराज, जिनको मैं अपना समझता था वो सब पराए निकले। इनमें कोई भी मेरे आखिरी वक्त का साथी नहीं बना। मैं अपने किए पर पछताता हूं, मुझे बचा लो, मुझे बचा लो।" यह सुन कर साधु ने इक तारा उठाया और मधुर सुरों में यह कह कर गाने लगा कि क्या तुझे मैंने पहले नहीं कहा था,

झूठा है संसार सगल यह झूठा है संसार
अपने सुख के सब हैं लागू कौन किसी का यार

बिपत पड़े तो संग त्यागे कोई न लेवत सार
झूठी काया झूठी माया झूठा कारोबार
मतलब के सब भाई बन्धु मतलब के नर नार
सुत दारा की प्रीत है झूठी कोई नहीं गमखार
सुपन समान है जोबन झूठा क्या इसका एतबार
मरना सच्चा जीवन कूड़ा संत कहें हर बार
जो प्रपंच जगत में दीखे अंत हो जाए छार
बोरा सगल जमाना झूठा सच्चा सिरजनहार
झूठा है संसार सगल ये झूठा है संसार

साधु के इन शब्दों ने कि ए डाकू, जिनसे तुम्हारा सम्बन्ध या वास्ता है उनसे यह पूछो कि "क्या तुम मेरा साथ दोगे ?" और इसके जवाब के पश्चात तुम अपने जीवन के बारे कोई निश्चय करो, ये डाकू पुरुष, बहुत बड़ा कवि और महा ऋषि बना दिया लेकिन क्या यह लफज़ उसके लिए ही मखसूस किए गए थे और उसके बाद इनकी कोई अहमियत नहीं रही। नहीं, नहीं। साधु के ये शब्द हर वक्त हर ज़माने के लोगों को चेतावनी देने के लिए इसी खूबी के साथ हैं। अब भी सब दुनिया-दारों को हर एक उस चीज़ से जिससे कि उनके दिल जुड़े हुए हैं, यह पूछना चाहिए कि "क्या तुम मेरा साथ

दोगे ?" धन-दौलत, इज्जत-आबरू, मान-बढ़ाई, महल-माड़ी, बाग-बगीचे, नौकर-चाकर, रिश्तेदार, स्त्री-पुत्र सब से पुछो कि क्या तुम मेरा साथ दोगे। अगर कुछ हिचकिचाहट है तो जिन्होंने पूछा है तो उनकी सुन लो। सिकन्दर महान का नाम तो आपने सुना है। यह दुनिया के महान फतह करने वालों में से एक हुआ है। जब मरने लगा तो अपने नोकरों चाकरों बेगमों और लोंडियों को अपने पास खड़ा कर लिया और एक तरफ धन दौलत के अम्बार लगवा दिए। तब उनको मुखातिब करके बोला,

बरगज़ीदा नोकरों से फिर हुआ यूं हमकलाम
है कोई जो इस वक्त मुश्किल में मेरा मुश्किल कुशा
यक जुबां होकर कहा सबने हम मजबूर हैं
कुंद हैं तदबीर के नाखुन अकल है नारसा
बेगमों और लोंडियों से फिर मुखातब यूं हुआ
नाज़नीनों इस घड़ी तुम से है उम्मीदे वफा
सर्द आहें भर के और बर चश्म तर कहने लगीं
बेबसो मजबूर हैं हम किस तरह से लें बचा
कुल खजायन और दफायन खोल कर कहने लगा
ए मेरे फखरे जहां अब साथ में चलना ज़रा
लक्ष्मी ने यूं कहा हसरत भरी आवाज़ से
मैं थी साथी इस जहां की वो मुलक है दूसरा

सबको इस बेवफाई को देख कर आखिर लाचार अकेला ही सिकंदर इस दुनिया से कूच कर गया। कोई भी आखिरी वक्त उसका साथी न बना। माता पिता स्त्री पुत्र दोस्त यार धन दौलत महल माड़ी बाग बगीचों की तो क्या बात है। खुद इन्सान के अपने जिस्म के अैज़ा-कान नाक हाथ पांव भी आखिरी दम तक साथ नहीं देते। यह भी रफता-रफता जवाब दे जाते हैं,

इक दिन ऐसा आएगा कोऊ काहू का नांहि
घर की नारी को कहे तन की नारी जांहि

यानि एक दिन ऐसा आएगा कि कोई आदमी का साथ नहीं देगा। घर की स्त्री को क्या कहिए, जिस्म की नाड़ियां भी जवाब दे देंगी।

शहनशाह रूहानियत महात्मा बीर दुनिया में उलझे हुए अज्ञानी जीवों को चेतावनी देते हुए फरमाते हैं,

1. मन दुनिया सेती रीझियों एंदुनिया साथ न जाए जीओ
एह तुध नूं नर्क पुचावसी जो काम रिहा भरमाए जीओ

2. मन माण करें क़िस चीज़ दा,
यहां तेरी शै न काई जीओ
सब साक हन कूड़ दे,
न भैया भाभी माई जीओ

तेरा दम भी नहीं हैं आपणा

हैं एह भी वस्त पराई जीओ

"काफियां बीर" में महाराज फरमाते हैं,

1. अंत वक्त कोई भरे न हामी न बाबल न माई ओए

सारे तुध नू छड खलोवन सक्के तुधदे भाई ओए

सभे साक कूड़ दे अणया चाचे ताये ताई ओए

पता नहीं फिर माण काहदा ए किस लई गरदन चाई ओए

2. ओह भी तेरा साथ न देवन जिहड़े तेरे जानी ओए

संगी साथी कोई न बणसी कली जान सिधानी ओए

मरने के बाद कौन साथी बनता है ?

यह बात ऐन रोशन है बल्कि अगर हर आदमी गौर करे तो यह हर रोज देख रहा है कि दुनिया की कोई चीज़ मौत के वक्त रूह का साथ नहीं देती, सब की सब चीज़ें यहां रह जाती हैं। पंजाबी की एक कहावत है,

जिहड़े कहिन्दे सी मरांगे नाल तेरे छड के मैदान भज गये

यानि जो हमें जिन्दगी भर यह यकीन दिलाते रहे कि मौत के वक्त भी जुदा नहीं होंगे वो हमारे मरने के वक्त सब वायदों को भुला कर दूर दौड़ गये। जब दुनिया की यह हालत है तो फिर हमें यह सोचना चाहिए

कि वह कौन सी चीज़ है जो आखीर तक हमारी रूह का साथ देती है। मनु जी महाराज कहते हैं कि इन्सान दुनिया में तन्हा पैदा होता है, अकेला ही मरता है, अकेले को ही उसके कामों को सज़ा गज़ा मिलती है। मौत के बाद इसका जिस्म तो एक पुराने दरख्त को मानिद ज़मीन पर पड़ा रहता है मगर उसकी नेकियां उसके रूह के हमराज चली जाती हैं। इसलिए चाहिए कि इन्सान नेकियां पैदा करे ताकि मौत के अंधेरे में, जहां से हर एक ने गुजरना है, अकेला न जाये। इससे जाहिर है कि मौत के पश्चात गर आदमी का कोई साथी हो सकता है वो इसकी नेकियां ही हैं और इन नेकियों के अलावा दूसरा कोई साथी नहीं है। महाराज बीर इस सच्चाई का अज़हार इन शब्दों में फरमाते हैं,

जिन्दे मैं समझावां तैनूं समझें नहीं नादान कुड़े
गफलत दे विच लुटी जावें न तू बन अन्जान कुड़े
नाल दीयां सब तेरीआं सइयां अजकल तुरीयां जान कुड़े
तू भी आपणे चलण दा कोई कर लै हुण सामान कुड़े
ओखी घाटी मुश्किल पैंडा होसी सुन मसान कुड़े
रस्ते दे विच कोई न बनसी तेरा जान पछान कुड़े
ओस वेले कोई बने न बेली जेहड़ा पकड़े आन कुड़े

डक्को डोले खावेंगी बस तेरी इकल्ली जान कुड़े
नेक कमाई जिन्हां कीती ओहनां नूं की हान कुड़े

भक्ति की बुनियाद नेकी पर है

आदमियत की शान यही है, धर्म यही, ईमान यही है,
मज़हब का फरमान यही है नेकी और भलाई

मज़हबी दुनिया में भक्ति को सब से बड़ी नेकी ख्याल किया जाता है। अब लगातार यही प्रचार हो रहा है कि भक्ति से मनुष्य का कल्याण होगा और यही भक्ति मरने के बाद साथ देगी लेकिन ऐसा प्रचार करने वाले उस भक्ति की जड़ को एकदम नज़र अन्दाज़ कर रहे हैं जिससे यह भक्ति हकीकी न रहकरसिर्फ जाहिरी रह गई है। जिस भक्ति से इसका हिरदा वसीह और खुला होना चाहिए, इससे यह तंग दिल और खुदगर्ज़ बन रहा है और सबको अपने तक ही महदूद रखने के लिए दुआएं और मुनाजातें कर रहा है। ऐसी भक्ति करने वाले को चेतावनी देते हुए महाराज बीर फरमाते हैं,

कोई मक्कार राज़े ज़िन्दगी को पा नहीं सकता
ये ऐसा राग है प्रीति के बिन कोई गा नहीं सकता
फरिश्तों के पर जिस नूर से बीरा हैं जल जाते
सिवाय नेक मर्दों के वहां कोई जा नहीं सकता

यानि कोई ऐसा शख्स जिसकी अबादत और भक्ति की बुनियाद नेकी भलाई और दूसरों की मुहब्बत और सेवा पर नहीं है, राज़े ज़िन्दगी को हजारों क्या, करोड़ों जन्मों में भी नहीं पा सकता और न उस नूरानी दुनिया में दाखल हो सकता है, जहां फ़रिश्ते भी नहीं पहुंच सकते। अगर वहां कोई पहुंच सकता है तो नेक मर्द ही पहुंच सकता है क्योंकि उसके नेक काम, उसकी की हुई भलाईयां उसके साथ होती हैं। एक शायर लिखता है,

हजारों मर गए कारूं से बढ़ कर
खुदा ज़र दे तो दिल दे आदमी में
खुदा बक्षे तो बक्षे दौलते इश्क
मुझे लाखों करोड़ों हैं इसी में

दौलते इश्क यानि दौलते मुहब्बत, नेकी और भलाई में सब कुछ इन्सान को मिल जाता है। दुनिया की लज़तें और राहतें इसको तसकीन नहीं दे सकतीं।

जहान को ज़ीनतें राहत रसां हैं चश्मे गाफल में
मगर हक़ जू को मुतज़र दिल को साकन कर नहीं सकती

दुनिया की फरेबकारी

वेदान्त में इस संसार को माया का कार्य बतलाया गया है। संस्कृत में माया का अर्थ है, जो चीज़ न हो पर

मालूम दे। यह संसार नहीं है पर मालूम देता है। अगरचे दुनिया किसी का साथ नहीं देती पर अपने आप को ज़ाहिर इसी तौर से कर रही है कि वो आखिर तक इन्सान का साथ देगी। जब भी हम किसी संसारिक वस्तु से प्रेम करते हैं तो हमारे दिल में यह उम्मीद कायम हो जाती है कि यह वस्तु हमें कभी धोखा नहीं देगी और हमेशा ही हमारे साथ रहेगी। अगर हमारे दिल में यह छुपी हुई आशा न होती तो कभी दुनिया से हम न जुड़ते। माया के धोखा और फरेब में आकर कितने ही मनुष्य अपने जीवन को नष्ट कर चुके हैं। ऐसे ही लोगों की तबाही और बर्बादी को देखकर महात्मा बीर फरमाते हैं,

दुनिया दे परचावे मिट्ठे परचियां दे विच्च आवीं न
कखों होला करके मारू दाअ इसदे चड़ जावीं न
कई वार समझाया तैनूं फिर पिछों पछताईं न
अग्गे कोई मदद न करसी पुठी खल लुहाईं न

कूड़ कूड़े नयों लगा विसरया करतार

जो लोग जाहिरा इस जन्म मरण के साथी दुनिया से, जो दरअसल निहयात ही बेवफा है और जिसका यह

भी एतबार नहीं कि किस वक्त साथ छोड़ दें, मुहब्बत और प्यार करते हैं, उनके मन को कभी भी शांति नहीं होती। चूंकि दुनिया स्वभाव से ही चंचल है इसलिए जो दुनिया का दामन पकड़ते हैं, वो भी चंचल हो जाते हैं। यही वजह है कि सन्त महात्मा और भक्तों के पास जब यह दुनिया अनेक प्रलोभनों को सूरत में हाजिर होती है तो वो इसकी असलियत पहचान कर इसे अपने पास नहीं आने देते। बकौल,

सदा दी जब दरे दिल पर ये दुनिया कि हाजर हूं
नदा आई पलट जा तेरी गुंजायश नहीं दिल में

एक ही पैमाना

क्या आप मेरा साथ देंगे ? दुनिया, दुनिया की चीजों की माहियत को जानने और उनको समझने के लिए जिस तरह माप तोल वगैरह के कई किस्म के पैमाने बने हुए हैं, इसी तरह से रूहानियत के नुक्ता निगाह से दुनिया को परखने का भी एक पैमाना है और वह पैमाना है, "क्या आप मेरा साथ देंगे ?" आप अपने हर दुनियावी काम, हर ताल्लुक, हर व्यवहार और हर रिश्ता को इस पैमाना से नापें। जो इस पैमाने में पूरा न

उतरे, जो आपका साथ न दे, उससे आप बाबिस्ता न हों यानि उससे आप न जुड़ें, उसकी असारता और न पाय-दारी को समझकर उसके मोह में न फंसे। महात्मा बीर फरमाते हैं,

शान गुमान जहान का कूड़ है मूढ़ है जे कोई चित लगाए
चार दिहाड़े गुजार लये भले सार क्या दम आए न आए
नेक की शोभा जहान करे जो बुराई करे वह बुरा अखवाए
बीर जहान की रीत यही कोई जैसा करेगा तेहा फल पाए

पर इन से सरसरी और आरज़ी तौर पे काम लेते रहें ताकि आपके दुनियावी कारोबार में कोई रुकावट न आए और दुनिया के साथ रूहानी तरक्की भी करते रहें।

आपसे एक इलतजा

शहनशाह रूहानियत महाराज बीर की इस रूहानी तालीम की रोशनी में आप भी अपने कल्याण के लिए अपनी हर एक प्यारी से प्यारी चीज, रिश्ता और ताल्लुक को देख लिया करें और अकेले में यानि तन्हाई में इनसे यह सवाल किया करें कि आप मेरा साथ देंगे और फिर जो जवाब मिले उसको रोशनी में दिल को समझा लिया करें कि जब यह चीज़ें हमेशा को साथी नहीं फिर इनसे

हमेशा के लिए प्यार कायम करना भी निरी गलती है।

सन्त महाराज के फरमान के मुताबक नेकी, भलाई, मुहब्बत और सेवा के काम जो हमेशा साथ देने वाले हैं, इनसे प्रेम और लगाव बढ़ाते रहें ताकि मौत के बाद यह हमारे हमराही और साथी हों और हमारी रूह को इनके सबब सच्ची शांति और हमेशा के लिए खुशी हासल हो।

★

खबरदार खतरा है

श्री महाराज बीर के जन्म दिन के उत्सव में शामिल होने के लिए मुझे लुधियाना पहुंचने का निमन्त्रण मिला। बड़ी खुशियों के साथ लुधियाना पहुंच गया। महाराज जी के चरणों में हाजिर होकर शाम को जी. टी. रोड पर सैर करने के लिए चल पड़ा। इस वक्त दिन भर का थका मांदा सूरज पश्चिम की गोद में मुंह छिपा रहा था। सूरज की लाली एक दिलफरेब नज़ारा पेश कर रही थी। दफ्तरों के कर्मचारी और कारखानों के मजदूर अपने अपने घरों को लौट रहे थे और शायकीन चहल कदमी के लिए सड़क पर इधर-उधर घूम रहे थे। गर्ज़ कि सड़क पर लोगों के आने-जाने का अच्छा खासा तांता बंधा हुआ था। मैं दूर तक इन दिल के लुभाने वाले नज़ारों का लुत्फ लेता हुआ चला गया। बुढा नाला के पास, जिसका पानी नौजवानों की तेज रफ्तारी को मात करता हुआ अपने आप को जवान नाला साबित करने के लिए

बड़ी तेजी से बढ़ रहा था, मैं एक पक्के चबूतरे पर, जिस पर बिजली का एक खम्बा आवेज़ां था, बैठ गया और सुहानी शाम का मज़ा लेने लगा। बहुत देर तक मैं अपने ख्यालों में लीन होकर दरिया की रवानी, परिन्दों की उड़ान और खेतों की हरियाली और खुशहाली का लुत्फ लेता रहा। इसी दौरान अचानक मेरी निगाह जो ऊपर उठी तो देखा कि खम्बा पर एक तख्ती लटकी हुई है जिस पर लिखा है, "खबरदार खतरा है।"

इसे पढ़ कर मेरी हैरानी की कोई हद न रही। लुधियाना जैसे गुनजान आबाद शहर में, इस जी. टी. रोड पर जहां हर वक्त मोटरों, ट्रकों और साईकिलों, पैदल चलने वाले मुसाफिरों का तांता बंधा रहता है और जहां थोड़े थोड़े फासला पर पुलिस के सिपाही अमन इन्तज़ाम के लिए ड्यूटी पर खड़े हैं वहां किसी जगह खतरा है, यह मेरी समझ में नहीं आया। यू. पी. में मान सिंह डाकू ने सख्त दहशत फैला दी थी लेकिन पंजाब में तो कोई ऐसा डाकू नहीं जिससे खतरा हो। पहाड़ों की तराई के शहरों में अक्सर भेड़िये और चीते इन्सानों को उठा ले जाते हैं। यहां वो बात भी नहीं। जंगल भी यहां नहीं कि जिससे सांप बिच्छुओं या ज़हरीले जानवरों का खतरा हो। फिर

यह तख्ती यहां क्यों लटकाई गई है। यह बात मैं समझने से कासर था। आखिर मैंने यही ख्याल किया कि महकमा बिजली के किसी मुलाज़म ने गलती से यह तख्ती यहां लटका दी है। यह दूर जंगल में किसी बिजली के खम्बे पर लगाई जानी चाहिए थी ताकि अगर कोई मुसाफिर वहां बैठे तो उसे पता लग जाए कि यह जंगल है और यहां उसकी हिफाज़त का कोई इन्तज़ाम नहीं। जितनी जल्दी हो सके वो वहां से चलने की तैयारी कर दे। थोड़ी देर बाद मेरे ज़ेहन ने ही इस ख्याल की खुद-ब-खुद तरदीद कर दी। ऐसा होता तो मुआयना करने वाले अफसर की निगाह इस पर पड़ती और वह फौरन इसे उतरवा देता या अखबारों के नामानगार ही बावरेला मचा देते। इतने लोगों को परेशान करने के लिए यह तख्ती यहां लगाई गई है। अब यह बात मेरे लिए पहेली न रह कर एक मसला बन गया गोया जिसके हल किए बगैर मेरी ज़िन्दगी का काम ही अधूरा रह जाएगा। वापस जाना तो मैं भूल गया और पूरी एकाग्रता से इस मसला को हल करने में लग गया। बहुत देर तक सोचते रहने पर भी किसी की जुल्फे दराज़ की मानिंद यह मसला भी पेचीदा ही होता गया। आखिर मुझे अपनी

हार माननो पड़ी और राह चलते एक शरीफ आदमी से आहिस्ता से पूछा, साहब ! यह जगह जहां अब हम खड़े हैं, यह कितने आराम की जगह है। थका मांदा मुसाफिर यहां बैठकर आराम कर सकता है। सैर करने वाले यहां बैठकर कुदरती नजारों का लुत्फ ले सकते हैं। सड़क का किनारा है। हर वक्त आमदोरफत की जगह है। फिर इस जगह क्यों खतरे की तख्ती लगाई गई है। वह साहब मेरी बातों को सुनकर मेरी सादगी को भांप गए। शहरी रोब दाब जमाने की बजाय निहायत शराफत से बोले, श्रीमान जी, यहां न तो चोरों डाकुओं और किसी चीज़ का खतरा है, न धोखेबाज़ों जेबकतरों का, न सांपों बिच्छुओं और भेड़ियों चीतों का। यहां जो खतरा है वह बिजली के झटके का खतरा है जिससे इन्सान आनन फानन मौत के मुंह में जा सकता है। अगर बिजली यहां से लीक हो जाए तो इसका एक करंट ही इन्सान को सैकिन्ड में खत्म कर दे। इससे बचाव के लिए महकमा बिजली के कर्मचारियों ने हर खम्बे पर ऐसी तख्तियां लगवा दी हैं। बात मामूली थी। मेरी समझ में आ गई। मैं और वह साहब दोनों फौरन ही वहां से उठकर दूर जा खड़े हुए। वापसी पर मैं इस जगह की खुशनुमाई

और दिल फरेबी में छुपे हुए खतरे के बारे सोचने लगा। सोचने का मादा मुझ में शुरू से ही है। मेरे रूहानी गुरु महाराज बीर फरमाया करते हैं कि सोचो और खूब सोचो। सोचने से ही कुदरत के गुप्त राज़ तुम पर जाहिर होंगे। दुनिया में जिस कदर इलम हैं वो सब सोच विचार का ही नतीजा है। बाहर से न कभी किसी को इलम हासिल हुआ है न होगा। यह किताबें, यह लिखतें, यह हरफ सब इन्सानों की अंदरूनी सोच विचार को बनावटी सूरतें हैं। इस जाहिरी पढ़ने पढ़ाने से न तो अब तक कोई उकदा हल हुआ है और न कभी होगा। वाहदत नामा में बीर जी फरमाते हैं,

1. असी पढ़ पढ़ डिठे पोथे ने सब मुरशद बाजों थोथे ने
   साडा पढ़ने थो चित चाया है असां इको अलफ पकाया है
2. तू ज्ञानी ज्ञान सुणा भावें कर मसले दिल भरमा भावें
   पोथी नूं पढ़ समझा भावें सानूं कुझ भी समझ न आया है

न्यूटन की मिसाल देते हुए आप फरमाते हैं कि देखो, न्यूटन ने सेब को जमीन पर गिरते हुए देखा और वह सोचने लगा कि सेब टहनी से टूटकर जमीन पर क्यों आ रहा, ऊपर आसमान को तरफ क्यों नहीं चला

गया । उसके लिए न्यूटन ने किताबों के वर्के नहीं उलटे। सिर्फ सोच विचार का आसरा लिया और नतीजा कशिशे नक्ल (Law of Gravitation) की दरियाफत में निकला। इस तरह से जितनी भी इजादें हुई हैं वो सब गहरी सोच विचार का नतीजा है न कि किताबों की खाली वर्क गिरदानी का। मैं भी सोचने लगा और सोचते सोचते मेरे ज़ेहन में यह बात आ गई कि यह संसार भी कितना सुन्दर है, इसके कुदरती नज़ारे कितने दिल लुभाने वाले हैं। इनकी रोणक कितनी मन को मोह लेती है और फिर साइंसदानों की नित नई इजादों ने इसकी खूबसरती को और कितना बढ़ा दिया है कि जिसे देखकर और पाकर इन्सान हमेशा ही जिन्दा रहना चाहता है और खाहिश करता है कि मैं हमेशा हमेशा इस दुनिया में रहकर दुनिया की खुशी और आनन्द के मजे लूटता रहूं। दुनिया की लज़तों में गर्क इन्सान अपने जैसे दूसरे इन्सान को मरता देखकर भी मौत को भूला हुआ है। हालांकि हर मज़हब और हर फिरके के बानी ने अपनी अपनी अल-हामी किताबो में महकमा बिजली की तरह इस खतरे के बोर्ड लगाए हुए हैं कि "संसार सुपन की मानिद है मोह की निद्रा तोड़ दो।" एक हदीस है "यह दुनिया मोमिन

के लिए कैदखाना है और काफिरों के लिए जन्नत है।"
ज़ोक का एक शेयर है,

ए ज़ोक गर कुछ होश है दुनिया से दूर भाग
इस महकदे में काम नहीं होशियार का

एक पंजाबी का शायर लिखता है,

एह दुनिया खोटो नोंह नोंह एहदे चपे चपे खार
एथे मिले दिलां नूं फाड़दी कुछ सिक्यां दो झनकार
एथे कलियां कई मुस्कांदियां एथे हसे फुल हजार
कई मिट्टीयां ही मुरझा गईयां खिड़के होए ख्वार

शहनशाह रूहानियत बोर अपने कलाम में लोगों को उस खतरे से आगाह करते हुए फरमाते हैं,

मन दुनिया सेती रीझियों, एह दुनिया साथ न जाए जीओ
एह तुध नूं नर्क पुचावसी, जो काम रिहा भरमाए जीओ
कुछ समझ अजे नहीं बिगड़ियो, ए जन्म अकारथ जाए जीओ
कुछ बोरा लाहा खट ल, तू हर का नाम ध्याय जीओ
जो माण करेंदे जोर दा, ओह डाडा धोखा खाण जीओ
एह दुनिया है चंद रोज़ दो, है इसदा काहदा माण जीओ
जो रीझण इसदे रोब ते, ओह समझ बड़े नादान जीओ
जो होण निमाणे अन्त नूं, ओह बीरा मुक्ति पाण जीओ

खतरा क्या है ? जिस तरह मैं इस चबूतरे पे बैठा

हुआ यह सोच रहा था कि इस जगह पर चप्पे चप्पे पर आदमी फिर रहे हैं, पुलिस का पहरा भी है, फिर क्या हो सकता है ? इस तरह से आम दुनियादार लोग भी सोचते हैं कि हमें इस दुनिया से क्या खतरा है ? अपना कमाते हैं, खाते हैं। लेकिन वो इस सच्चाई से बेखबर हैं कि इस अपने कमाने और खाने में बहुत बड़े खतरे छुपे हुए हैं। पहला खतरा यह है कि जो आम दुनिया के साथ ताल्लुक या वाबिस्तगी पैदा करते हैं, यही ताल्लुक या वाबिस्तगी आईंदा के लिए हमारे जन्म मरण का सबब होती है क्योंकि हम जिस चीज़ से मुहब्बत करेंगे और जिसको दिलजान से चाहेंगे, उसी की तरफ हमारा ध्यान रहेगा। जो हमारी ख्वाहिश इस संसार में रहने की है तो हमें फिर कौन इससे जुदा कर सकता है। एक दफा महाऋषि नारद स्वर्ग में चले गए। वहां उन्होंने अकेले विष्णु भगवान को ही विराजमान देखा। उन्हें अकेला देखकर नारद ने ताअजुब से पूछा, भगवान आप यहां अकेले ही क्यों हैं ? विष्णु भगवान हंसे और फरमाया, नारद यहां कोई आना ही नहीं चाहता। नारद तो अल-बेली तबियत के मालिक थे। बोले, अच्छा भगवान, मैं अभी संसार में जाता हूं और लोगों को यहां ले आता हूं। पलक मारते ही नारद दुनिया में आ गए। एक

नौजवान से कहा, चल तुझे स्वर्ग में ले चलूं। वह बोला, बाबा कैसी बातें करते हो ? स्वर्ग तो यहीं है, इससे परे और कौन सा स्वर्ग है ? एक अधेड़ उम्र के आदमी से कहा। उसने कहा, स्वर्ग में कैसे पहुंचाओगे ? नारद बोले, मर कर वहां पहुंचना होगा। उसने हकारत से कहा, बाबा रास्ता पकड़ो। मरना मन्जूर नहीं। हमें तो यह दुनिया ही स्वर्ग है। तीसरे को कहा कि मेरे साथ स्वर्ग में चल। उसने कहा, महाराज अभी शादी करवाई है, कुछ तो इस दुनिया का लुत्फ लेने दो। गर्जे कि नारद ने खूब घूम फिर कर कितने ही आदमियों को स्वर्ग चलने को कहा पर कोई भी रज़ामंद नहीं हुआ। किसी ने कहा, अभी मकान बनाना है। किसी ने कहा लड़के की शादी करनी है। किसी ने कहा अभी पोते नादान हैं। किसी ने कहा अभी फसल का मौसम है। आखिर मजबूर होकर अकेले ही स्वर्ग में जाकर विष्णु भगवान से अर्ज की कि महाराज, आपका फरमाना सच है, वाक्या ही यहां कोई नहीं आना चाहता।

यह हमारी खाहिशें और वासनायें ही हैं जो हमें इस दुनिया से किनाराकश नहीं होने देतीं और हर वक्त हमारी रूह को गुनाह अलूद किए रहती हैं और फिर

हम इन चंद खाहिशों और वासनाओं तक ही अपने आप को सीमित नहीं रख सकते। जिस तरह बड़ के एक नन्हें से बीज से तनावर दरखत बन जाता है और फिर उस दरखत से लाखों और बीज, जो इसी किसम के और दरख़त बना सकते हैं, बन जाते हैं। इस तरह हमारी एक मामूली खाहिश और जरा सी वासनायें भी और कितनी ही गई खाहिशों और वासनाओं को जन्म दे देती हैं जिससे कि आवागमन की बेड़ी हमारे लिए और मजबूत और सख्ततर होती रहती है और सच्ची शांति और मुक्ति पाने का हमारा मकसद भी कभी पूरा होने में नहीं आता।

दूसरा खतरा इसकी बेवफाई का है। जब से दुनिया कायम है, बेशुमार लोगों ने इससे बेइन्तहा मुहब्बत की। इसकी खातिर कतल किए, खून के दरिया बहाए। इसके लिए बाप भाई और बेटों को मारा। दीन और ईमान को भी खो दिया लेकिन इस बेवफा दुनिया ने फिर भी उनका साथ नहीं दिया। महात्मा बीर 'पंदनामा' में फरमाते हैं,

जहां में थे आए बड़े पेश्तर
जिन्होंने दिखाया था अपना असर

जभी बार आई तो हुए फनाह
न कोई भी हमराही उनका हुआ
खजाने पड़े के पड़े ही रहे
न चलती दफा साथ कुछ ले गए
गरीबों पे जो जो लगाया था जोर
अजाबों में जलने लगे खूब गोर
जो किया था देना पड़ा सब हिसाब
यह अपनी ही गफलत से पाया अज़ाब

सिकन्दर आज़म जब मरने लगा तो उसने निहायत हसरत से कहा कि मेरा साथ दो लेकिन दुनिया ने निहायत बेवफाई से उसकी इस दरखास्त को ठुकरा दिया। शायर ने उस वक्त का खाका शेयरों में खींचा है,

वक्त मुर्दन यूं सिकन्दर ने हकीमों से कहा
मौत से मुझको बचा लो करके मेरी कुछ दवा
सिर हिलाकर यूं लगे कहने कि ए शाहे जमां
मौत से किसको पनाह है क्या है दरमाने कज़ा
बर गजीदा नौकरों से फिर हुआ यूं हमकलाम
है कोई जो इस वक्त मुश्किल में मेरी मुश्किल कुशा
बेगमों और लोंडियों से फिर मुखातब यूं हुआ
नाज़नीनों इस घड़ी तुम से है उम्मीदे वफा

सर्द आहें भर के और बाद चश्म तर कहने लगीं
बेबसो मजबूर हैं हम किस तरह से लें बचा
कुल खजायन और दफायन खोल कर कहने लगा
ए मेरे फखरे जहां अब साथ में चलना ज़रा
लक्ष्मी ने यूं कहा हसरत भरी आवाज़ में
मैं थी साथी इस जहां की वो मुल्क है दूसरा

हज़रत ईसा ने मुकाशफा में दुनिया को बूढ़ी औरत की सूरत पर देखा। पूछा कि तूने कितनों से ब्याह किया ? कहा कि इस तैदाद से कि गिनती में नहीं आ सकते। पूछा मर गये या तलाक दी। कहा, नहीं, मैंने सभी को मार डाला। हज़रत ईसा ने फरमाया कि इन अहमकों से ताअजुब है कि देखते हैं कि औरों के साथ तूने क्या किया और फिर भी तेरी तरफ मायल हैं। इसी तरह एक हदीस है कि कयामत के दिन दुनिया को एक बुढ़िया की सूरत पर फरिश्ते लायेंगे, उसकी आंखें सबज़ होंगी। बड़े-बड़े दांत मुंह के बाहर नज़र आयेंगे। खलक जब उसको देखेगी, कहेगी, नाऊज़बाइला। यह बदसूरत बुढ़िया कौन है ? फरिश्ते कहेंगे, यह वो ही दुनिया है जिसके वास्ते तुम आपस में ईर्ष्या और दुशमनी करके एक दूसरे से लड़े मरे और इस पर फरेफता हो गये।

फिर दुनिया को दौज़ख में डाल देंगे। वह कहेगी, या खुदाया, जो मेरे दोस्त थे वो कहां हैं? हकताला फरमायेगा कि उन लोगों को भी इसके साथ दौज़ख में पहुंचा दो। कबीर जी का एक दोहा है,

दीन गवायो दुनो से दुनी न आयो हाथ
पैर हथोड़ा मारयो गाफल अपने हाथ

यानि दुनिया के वास्ते धर्म को तलांजलि दे दी लेकिन दुनिया ने फ़िर भी साथ नहीं दिया। महात्मा बीर का इरशाद है,

दुनिया कारन हर कोई अपना दीन गवाये
बीरा गलती कर रहा दुनिया साथ न जाये

एक भक्त कवि दुनिया के लोगों को चेतावनी देते हुये कहता है,

ए मन क्यों जग में लपटायो तेरा कोई नहीं है सहायो
ये संसार सुपन की माया बिर्था भरम भुलायो
क्षण भंगुर सब वस्त विनाशी प्रीत लगा पछतायो
विषय रस मृग तृष्णा पानी देख देखकर धायो
कबहूं प्यास मिटे नहीं तेरी जन्म जन्म भटकायो
ए मन क्यों जग में लपटायो तेरा कोई नहीं है सहायो

सत मार्ग और प्रेम पंथ के प्रचारक महाराज बीर अपने उपदेश में फरमाते हैं,

1. मन दुनिया सेती रीझियों,
ए दुनिया साथ न जाए जीओ
एह तुध नूं नर्क पुचावसो,
जो काम रिहा भरमाये जीओ
कुछ समझ अजे नहीं बिगड़यो,
एह जन्म अकार्थ जाए जीओ
कुछ बीरा लाहा खट लै,
तू हर का नाम ध्याय जीओ

2. मन माण करें किस चोज़ दा,
यहां तेरी शै न काई जीओ
सब साक अंग हन कूड़ दे,
न भइया भाभी माई जोओ
तेरा दम भी नहीं है आपणा,
एह भी वस्त पराई जीओ
तू फिर भी मूर्ख बीर है,
डर रखें मूल न राई जीओ

(आत्मिक तरंग)

क्या दुनिया को छोड़ दें ?

एक जगह जलसा में हजारों लोग बैठे तकरीर सुन रहे थे। अचानक एक तरफ से शोर उठा–सांप, सांप, सांप। सब लोग उठकर दौड़ पड़े। हरेक को अपनी जान की फिक्र पड़ गई कि ऐसा न हो कि सांप मुझे डस ले। अभी अभी पंजाब में बारिश और सैलाब से बेपनाह तबाही हुई। जिनके मकान कच्चे थे या जिनको अपने मकानों के गिरने का खतरा था वो फौरन अपने मकानों को छोड़ बाहर झोपड़ियों में आ गये। जिनकी झोपड़ियां सैलाब की नज़र हो गईं वो दरख्तों पे चढ़ गए। सांप भी बिलों से बाहर निकलकर टहनियों से लिपट गए। हर एक को जान प्यारी है। हर कोई खतरा से बचना चाहता है। हमारे सामने भी इस वक्त यही सवाल है कि अगर हमको या हमारी रूह को दुनिया से खतरा है तो क्या फिर दुनिया को छोड़ दें। अगर हम ऐसा सोचकर कि दुनिया से हमें बड़ा खतरा है और यह जिस्म और ज़िन्दगी कुछ भी नहीं है और इससे कुछ भी मकसद पूरा नहीं होता, मायूस और न–उम्मीद होकर सब काम धन्धे छोड़ दें तो क्या फिर यह खतरा टल जाएगा ? हरगिज़ नहीं। कबूतर के आंख बन्द कर लेने से

बिल्ली भाग नहीं जाती। वह तो झपट्टा मारेगी ही। कबूतर से अगर बचाव हो सकता है तो करे वर्ना बिल्ली के झपट्टे में आए। इसी तरह से इन्सान दुनिया से ताल्लुक तोड़कर दुनिया के खतरे से बच नहीं सकता। अगर खुदकशी भी कर ले तो भी जन्म तो इस दुनिया में लेगा। फिर वो ही खतरा सामने आएगा।

मर्दानावार मुकाबला

जो लोग जंगलों में रहते हैं वो शहरी लोगों की निसबत शेरों, चीतों और दूसरे जंगली दरिन्दों से बहुत कम डरने वाले होते हैं क्योंकि उन्हें दिन रात उनके दरम्यान रहना होता है और इस सबब से उनके पास बचाव के तरीके भी होते हैं और उनमें रोज़ाना मुकाबला से दलेरी और बहादुरी आ जाती है। अगर किसी शहरी आदमी को इत्तफाक से जंगल में शेर नज़र आ जाए तो फौरन ही उसके हवास उड़ जाएंगे। मुमकिन है पाजामा में पेशाब ही निकल जाए। लेकिन वो ही शेर किसी जंगली के पास से गुजरे तो उसे जरा भी हैरानी नहीं होती क्योंकि वह शेरों के दरम्यान ही रहता है और उसका मुकाबला करना जानता है। इस तरह दुनियावी खतरात से बचने और उन्हें पछाड़ने का सीधा और

कुदरती तरीका यही है कि मायूस और न-उम्मीद होकर चुपचाप बैठे रहने और आंखें मूंदने की बजाय इन्सान इन खतरों का बेखौफी से मुकाबला और सामना करे और दुनिया की जिम्मेदारियों को अपने सर पर ले। अगरचे दुनियावी खतरों का मुकाबला और सामना करना एक इन्सान के लिए बड़ा ही मुश्किल और मुहाल है लेकिन इन खतरों पर फतह पाए बगैर कोई इन्सान अपने कमाल तक पहुंच भी नहीं सकता और न सच्ची खुशी और आनन्द का लुत्फ़ उठा सकता है।

मुकाबला ताकत से होता है

एक कमज़ोर आदमी किसी पहलवान का मुकाबला करना चाहे तो नहीं कर सकता। अगर करेगा तो मार खाएगा। पहलवान का मुकाबला तो पहलवान ही कर सकता है। इस तरह से दुनिया के खतरों का मुकाबला कोई बुद्धिमान और शक्तिशाली ही कर सकता है। नादान और बेसमझ आदमी इसके मुकाबले में नहीं ठहर सकता। बड़े-बड़े ऋषि महाऋषि हजारों साल की तपस्या करने के पश्चात भी दुनिया के लोभ, लालच और मोह में आकर गिर गए। इसलिए दुनिया के मुकाबले में खड़े

होने के लिए हमें अपने में पहले रूहानी शक्ति पैदा कर लेनी चाहिए।

रूहानी शक्ति कहां से आती है ?

महात्मा बीर अपनी रचित 'हकीकत नामा' उर्फ 'ब्रह्म ज्ञान' में फरमाते हैं,

कोई सुघड़ सहेलो भाल कुड़े, जेहड़ी देवे चज सिखाल कुड़े
सोखी हो जाए रमज़ मुहाल कुड़े, नहों मुरशद बाजों गत कुड़े
लै सतगुर पासों मत कुड़े।

सांप और नेवले में लड़ाई जिन्होंने देखी है, वो बताते हैं कि सांप से लड़ते वक्त नेवला थोड़ी-थोड़ी देर बाद झाड़ी के पास जाकर कोई बूटी सूंघ कर आता है और फिर सांप से लड़ने लग जाता है। सांप कहीं जाता नहीं और अपनी ताकत के भरोसे वहीं डटा रहता है। नतीजा यह होता है कि सांप लड़ते-लड़ते कमजोर हो जाता है और नेवला हर वक्त ताजा दम होकर उस पर हमला करता है और उसे मार देता है। ऐसे ही जो पुरुष सच्चे सतगुर की शरण लेकर उनसे रूहानी शक्ति हासिल कर लेता है वो दुनिया के खतरों के मुकाबले में डट जाता है और किसी लम्हा अपने में कमज़ोरी या कमी पाने पर सतगुरु

की तरफ रुजू होकर फिर उसको दूर कर लेता है। आखिर में सत्गुरु की मेहर और दया से दुनिया के प्रलोभनों पर फतह पाकर हमेशा के लिए मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

शक्ति के भण्डार

त्याग दुनी की दोस्ती साहब से कर प्यार
बीरा महरम अमीक थीं हो जाए बेड़ा प्यार

अव्वल तो दुनिया को मालूम नहीं देता कि दुनिया से हमें खतरा है। जिन्हें कुछ मालूम है वो मुकाबले में अपने को कमजोर पाते हैं। अगर कुछ हौसला करते हैं तो थोड़ी सी शक्ति जो उनके पास है, से मुकाबला करके हार खाकर बैठ जाते हैं क्योंकि उन्हें मालूम नहीं है कि शक्ति का भण्डार कहां है और हम अपनी कमियों को कहां से पूरा कर सकते हैं ? ऐसी शक्ति के भण्डार सच्चे सत्गुरु और महात्मा हर समय, हर वक्त मौजूद रहते हैं पर तलाश करने वाले उन्हें पाते और उनसे शक्ति हासिल करते हैं। इस समय के सच्चे रहनुमा और शक्ति के भण्डार महात्मा बीर हैं जो रूहानी ताकत से भरपूर और अपने लाफानी उपदेशों से इन्सानी दिलों में छिपी

हुई कमजोरियों को दूर करके इस मायाजाल के फंदों को तोड़ने की शक्ति अपने प्रेमियों में पैदा कर रहे हैं। खुश-किस्मती से अगर आपको दुनिया के खतरों से आगाही हो गई है तो फिर उनके मुकाबले के लिए अपने में रूहानी शक्ति पैदा करने के लिए महाराज बूड़ सिंह बीर बानो प्रेम समाज की शरण लें। आप देखेंगे कि उनके रूहानी कलाम के ज़ेर असर आप में थोड़े दिनों में ही कितनी रूहानी ताकत पैदा हो गई है।

—★—

इसके पढ़ने से बहुतों का भला होगा

पिछले दिनों मैं श्रीराम आसरा तालवाड़ जी के हमराही लुधियाना से दिल्ली गया था। गाड़ी में भीड़ की वजह से हमें दूर-दूर जगह मिली। अम्बाला छावनी तक तो मैं चुप बैठा रहा। लेकिन कब तक ? सफर लम्बा था। बातचीत के बिना सफर काटना मुश्किल हो जाता है। मैंने पहल करते हुए एक पास ही बैठे हुए मुसाफिर से पूछा, क्यों साहब, आप कहां जाएंगे ? उसने जरा नाक सिकोड़ कर कहा, आपको क्या ? मैं कहीं जाऊं। मैंने नर्मी से कहा, श्रीमान जी, मुझे कोई खास मतलब तो नहीं, बोले बगैर रहा नहीं गया। इस वास्ते पूछ लिया। वह तनकर बोले, अगर पूछ ही लिया है तो मैं बता भी देता हूं। मैं फिरोज़पुर जाऊंगा।

"फिरोज़पुर !" मैंने हैरानी से कहा, श्रीमान जी, यह गाड़ी तो दिल्ली जाएगी। उन्होंने संजीदगी से कहा, आप हैरान क्यों होते हैं ? यह टिकट देखिए, फिरोज़पुर का है

या नहीं। मैं समझा शायद हंस रहे हैं। टिकट हाथ में लेकर देखा। वाक्या टिकट लुधियाना से फिरोज़पुर का था। मैंने कहा, श्रीमान जो, गुस्ताखी माफ, इस गाड़ी का रुख तो दिल्ली को तरफ है और आपका इरादा फिरोज़-पुर जाने का है। फिर आप इसमें क्यों आ बैठे और अगर बैठ ही गए हैं तो फिरोज़पुर कैसे पहुंचेंगे ?

पहले तो वह ज़रा बिगड़े और फिर बोले, बस जनाब चुप रहिए। यह नसीहत वसीहत मैं सुनने का नहीं और न ही मुझे इस किस्म की आलोचना सुनने की आदत है। क्या आप मुझे बेवकूफ समझते हैं जो यह कहते हैं कि इस गाड़ी में क्यों सवार हुए। मैं पढ़ा लिखा हूं। अभी अगर मैं आपको दलीलें देकर यह साबत कर दूं कि यह गाड़ी मुझे जरूर फिरोज़पुर पहुंचाएगी, फिर तो आप मान जाएंगें कि आपने फजूल बहस की और आईन्दा के लिए रेल में किसी से इस बारे में नहीं पूछोगे कि तुम कहां जा रहे हो और वहां कैसे पहुंचोगे ?

मेरे मुंह से हां या न कुछ नहीं निकला। मेरी खामोशी को मेरी हार समझकर वह प्रोफैसराना अन्दाज़ में बोले कि आपको मेरे जवाब से यह हैरानी जरूर हुई होगी कि मैं फिरोज़पुर कैसे पहुंचूंगा। लो मैं दलीलों से

आपको कायल करा देता हूं, मैं फिरोज़पुर पहुंच जाऊंगा।

पहली दलील–अगर किसी स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर जाना हो तो अवल घर से तैयार होकर स्टेशन पे गाड़ी चलने से पहले पहुंच जाना चाहिए। मैं गाड़ी चलने से पहले ही तैयार होकर स्टेशन पर पहुंच गया था।

दूसरी दलील–टिकट घर की खिड़की के सामने जो कतार लगी हुई हो उसमें अपने नम्बर पर खड़े हो जाना चाहिए। मैंने भी टिकट लेते वक्त ऐसा ही किया।

तीसरी दलील–नम्बर आने पर जिस जगह जाना है वहां के स्टेशन का नाम लेकर टिकट के लिए बाबू साहब से अर्ज़ करें और वहां का किराया उसे दे दें। मैंने फिरोज़पुर का नाम लिया और वहां का किराया अदा कर दिया।

चौथी दलील–टिकट लेकर देख लें कि जिस स्टेशन का मांगा है, वहीं का है या नहीं और किराया भी वो ही लिया गया है जो दर्ज है। मैंने अपने टिकट को गौर से देख लिया कि फिरोज़पुर का है और किराया भी ठीक चार्ज हुआ है।

पांचवीं दलील–टिकट लेकर पुल पार कर गाड़ी में बैठ जाना चाहिए। चुनांचे मैं भी रेल गाड़ी में बैठा हूं। यह कोई माल गाड़ी नहीं है।

अब बतलाईए, मैं फिरोज़पुर कैसे नहीं पहुंचूंगा। पहुंचूंगा, जरूर पहुंचूंगा क्योंकि टिकट मेरे पास फिरोज़पुर का है। अगर इसके इन्जन का रुख दिल्ली की तरफ है तो मुझे इससे क्या? असल शै तो टिकट है। जब टिकट फिरोज़पुर का है तो यह गाड़ी कहीं को जाए, हर हाल में फिरोज़पुर पहुंचकर रहूंगा। इस लाजवाब मन्तक के सामने मैंने बेबसी से हथियार डाल दिए और घबरा कर दूसरे मुसाफिरों की तरफ देखने लगा कि शायद वो ही इनके दलायल की तरदीद करें।

हर जा कुनेम सजदा बदां आस्ता रसद

लेकिन वो हजरात इससे भी दो चंद आगे निकले। वो मेरी निगाहों से मेरी हैरानी और मेरे तवुजब को भांप गए और बोले, साहब यह ठीक ही तो कह रहे हैं। जब इनके पास टिकट फिरोज़पुर का है तो यह किसी तरफ की गाड़ी में बैठ जाएं बहरहाल फिरोज़पुर पहुंचेंगे। पूछने पर पता चला कि यह लोग भी मोगा, जगराओं की तरफ जाने वाले हैं। उनमें खूबी यह थी कि उन्होंने अपना-अपना मुंह मोगा और जगराओं की तरफ किया हुआ था। मैंने पूछा कि इस तरफ मुंह करने का क्या

मतलब है तो सब एक जुबां होकर बोले, मतलब यह है कि चूंकि हमारे पास टिकट मोगे और जगराओं का है और हम इन जगहों पर जाना चाहते हैं, इसलिए हमारे लिए इतना ही काफी है कि टिकट के साथ-साथ अपना अपना मुंह भो उधर कर दें। क्या आपने नहीं सुना-हर जा कुनेम सजदा बदां ए आसता रसद।

आओ आपको भी ऐसे लोगों से मिलाऊं

आप मन में कहते होंगे कि खूब कहानी घढ़ी लेकिन अगर मैं अभो-अभी ऐसे लोगों से मिला दूं फिर तो आप भी मान जाएंगे कि हां ऐसे लोग हैं जिनके पास टिकट तो कहीं का है और सफर किसी और तरफ का कर रहे हैं। काफो दिनों की बात है, एक शहर में एक धर्म सभा का सालाना जलसा था। जलसे की बड़ी धूम थो क्योंकि इसमें बड़े-बड़े विद्वानों और भजनीकों को बुलाया गया था। एक भजन उपदेशक ने बड़े सुर में शब्द गाया,

यह काया की रेल रेल से अजब निराली है
मुक्ति धाम का ले लो टिकट ये गाड़ी चलने वाली है

शब्द की व्याख्या करते हुए आपने कहा कि यह शरीर रेल है। जोव आतमा मुसाफिर है। इस दुनिया के

टिकट घर से यह मुसाफिर स्वर्ग का या नर्क का, जो भी टिकट खरीदेगा, यह रेल उसे वहां ही पहुंचा देगी। नर्क में तो कौन जाना चाहता है। सबको मुक्ति या स्वर्ग की इच्छा है इसलिए स्वर्ग का टिकट खरोदना चाहिए। यह टिकट भजन, पूजा पाठ, साधु सन्तों की सेवा, तोर्थ यात्रा, दान पुण्य, गरोबों यतीमों बेनवाओं की खिदमत करने, अस्पताल खुलवाने, तालाब कुएं, धर्मशाला मंदिर के बनवाने और धर्म प्रचार के लिए चंदा देने से मिलता है। हर एक आदमी को जितनी जल्दी हो सके यह टिकट के खरीदने का बन्दोबस्त करना चाहिए। बात माकूल थी, असर कर गई। जिनको जेबों में रुपया था उन सब ने वहीं चंदा देकर टिकट खरीद लिया। औरतें भी पीछे न रहीं। कानों की बालियां तक उतार कर दे दीं ताकि वो वंचित न रह जाएं। चंद दिनों के पश्चात मुझे उनमें से एक भद्र पुरुष से मिलने का इत्तफाक हुआ जो शुद्ध स्वदेशी खद्दर के कपड़े पहने हुए थे। माथे पर तिलक था। मिनट-मिनट पर राम राम कहते थे। मैंने हंस कर कहा कि आज कल तो भक्ति पर बड़ा जोर दे रखा है। बोले, गाड़ी चलने वाली है। टिकट का इन्तज़ाम तो करना ही है। शहर में उन आदमियों से मिलने पर मालूम हुआ कि

आप हर रोज़ सूरज निकलने से पहले मन्दिर जाते हैं, स्नान के पश्चात भगवान शिव शंकर की मूर्ति के सामने दोनों हाथ बांधे ध्यान में मस्त यह भजन गाया करते हैं,

हम आए हैं शरण तुम्हारी, प्रभु रखना जी लाज हमारी
राजा को रंक बना दे, निर्धन को धन से भर दे
महिमा अपरम्पारी हम आए हैं शरण तुम्हारी

पर कारोबारी लिहाज से आप सारे शहर में कम तोलने वाले अपनी मिसाल आप हैं। एक दिन सुबह-सुबह एक दिहाती बुढ़िया पांच सेर घी लेकर आप की दुकान पर आई। आपने "हम आए हैं शरण तुम्हारी, प्रभु रखना जी लाज हमारी" कह कर डंडी जो मारी, घी चार सेर बना दिया। बुढ़िया बोली, बच्चा, सुबह का वक्त है, मैं झूठ नहीं बोलती। पांच सेर घी तोल कर लाई हूं। यह भी बोले, राम राम, माई अभी तो अन्न-जल मुंह नहीं लगा। तू तो मेरी मां के बराबर है। मैंने तो कभी कम तोला ही नहीं। तू ही बट्टों का शुमार भूल गई होगी। बुढ़िया कब बातों में आने वाली थी। दूसरी दुकान पर घी जा रखा। वहां वजन में पांच सेर ही हुआ।

इनसे मिल कर एक और साहब से मिलनें गया। यह एक समाज के प्रतिष्ठित मैम्बर हैं। हजारों रुपया वेद प्रचार फंड में देते हैं। कई सभाओं के प्रैज़ीडैंट हैं। संध्या और हवन पाबन्दी से करते हैं। जब मैं गया बैठक में बैठे थे। भवें तनी हुई थीं। माथे पर बल पड़ रहे थे और नौकरों पर बरस रहे थे। मैंने नमस्ते कही। वह झेंप गए। बैठते ही मैंने कहा कि आज शांति पाठ नहीं किया जो इस कदर गुस्से का इज़हार हो रहा है। बोले, यह नौकर बड़े बेवकूफ हैं। हालांकि तार भेज दिया था कि मैं कल आ रहा हूं। स्टेशन पर पहुंच जाना पर यह कम्बख्त पहुंचे नहीं। सामान चैक हो गया और बीस रुपया किराया जुर्माना देना पड़ा। यह पहुंच जाते तो थोड़ा-थोड़ा सामान उठा कर दूसरे मुसाफिरों के साथ मिला कर बाहर निकलवा देता। मुफ्त में दण्ड पड़ा।

थोड़े दिनों बाद एक और शहर में जानें का इत्तफाक हुआ। वहां देहली के एक मशहूर मन्दिर की तरज़ पर वहां के एक बड़े सेठ ने मन्दिर बनवाया। उस रोज़ उस का उद्घाटन था। हवन हुआ, मूर्ति-स्थापना की रसम विद्वानों से अदा करवाई गई। सूबा के एक बड़े वजीर ने उद्घाटन किया, लैकचर हुए, प्रीति भोजन हुआ और

सब लोग सेठ साहब के इस नेक काम को सराहना करते हुए अपने-अपने घरों में गए। सेठ साहब के बारे जानकारी प्राप्त करने पर मालूम हुआ कि बंगाल के कैहत में जब लाखों आदमो तड़प-तड़प कर मर गए थे उसमें इनका बड़ा हाथ था। गल्ला का मसनूहो कैहत पैदा करके आप ने लाखों कमाए। इस कमाई में से कुछ रुपया धर्म अर्थ लगाकर आपने यह मंदिर बनवाया है।

यह आम बातें हैं। आपको भी तलाश करने पर अपने इर्द गिर्द में कितनी हो ऐसो मिसालें मिल जाएगो जो दान पुण्य, तोर्थ यात्रा, पूजा पाठ, संध्या, हवन बेकायदगी से करते हैं लेकिन उनके कारोबारी जोवन में झूठ मक्कार फरेब दगा बेईमानी चालाको को काफो दखल हासिल है। अब आप खुद-ब-खुद मेरी ही जुबान में कहेंगे कि इनके पास टिकट तो मुक्तिधाम का है पर आप ऐसे बुरे-बुरे काम क्यों करते हैं जिनका नतीजा नर्क या चौरासी लाख योनियों में भटकना है। तब यह भी अपने इलम से यह साबत करने की कोशिश करेंगे कि जब इन्होंने टिकट मुक्तिधाम का ले रखा है तो फिर वो चाहे कुछ भी काम करें, यह टिकट उन्हें मुक्ति धाम या स्वर्ग में पहुंचा हो देगा।

धर्म का खाना

मुझे मुतालया का शौक है। जहां भी जाता हूं वक्त निकाल कर उस शहर की लाइब्रेरी में पहुंच कर किताबें पढ़ने की जरूर कोशिश करता हूं। जितनी भी लाइब्रेरियां मैंने देखी हैं, उन सब में मैंने किताबों को मज़बून के लिहाज से तकसीम करके अलग-अलग अलमारियों या खानों में रखा पाया है। अगर इलम हिसाब को किताबें एक अलमारी में हैं तो सियास्त की दूसरी में। मनोविज्ञान की किताबों के लिए अलग खाना है तो नावलों और ड्रामों की किताबों के लिए दूसरा। ठीक इसी की नकल करके आजकल के आदमियों ने धर्म और कारोबारी कामों के लिए अपनी ज़िन्दगी के भी अलग-अलग खाने बना लिए हैं। जब मन्दिर में जाते हैं तो दहलीज से ही सजदा शुरू हो जाते हैं भगवान की मूर्ति के सामने ऐसे हाथ बांध कर ऐसी श्रद्धा और भक्ति से प्रार्थना करते हैं कि अक्सर मरतबा देवता भी रशक करने लगते हैं। जब किसी सत्संग में जाते हैं तो इनकी आज़जी गरीबी नम्रता और साधवता देखने योग्य ही होती है लेकिन यही भगवान के भक्त जब अपने कारोबार को सर अंजाम देते हैं तो चार सौ बीस करने में जमाना में अव्वल नम्बर

पर होते हैं। इनकी अयारी और मक्कारी से न दोस्त बच सकते हैं न रिश्तेदार, न पुजारी, न फकीर। सब पर कमाल सफाई से वार कर जाते हैं और अपने कारोबार में ईश्वर भक्ति, ईश्वर विश्वास, सत्सग के असरात और महात्मा के वचनों का कोई वास्ता और ताल्लुक नहीं होने देते। इनसे कहो तो बड़ी सादगी से कहेंगे,

ए बुलबुलो, इस चमन में यूं गुजारा चाहिए
बागबां भी खुश रहे और खुश रहे सय्याद भी

जिस तरह गाड़ी दो पहियों से चलती है, इस तरह यह गृहस्थ की गाड़ी भी दीन और दुनिया के दो पहियों से चलती है। जिस तरह एक पहिया के टूटने से गाड़ी नहीं चलती, इस तरह दीन और दुनिया में से किसी एक को नज़र अन्दाज़ कर देने से गृहस्थ की गाड़ी नहीं चलेगी। इस वास्ते दूसरों की हक तलफो, ब्लैक मार्कीट, नाजायज़ नफा अन्दोज़ी और झूठ और बेईमानी के साथ-साथ किसी मन्दिर, गुरद्वारा या मस्जिद का बना देना, तीर्थ यात्रा करना और मुक्कदस मुकामात की जयारत पर जाना या अस्पताल, स्कूल खुलवा देना इनकी राय में जायज़ और ऐन स्वाब है।

इस तरह प्रभु प्रसन्न नहीं होते

रिया से दिल में हों तारीकियां तो ए ज़ाहिद
फरोगे सजदा से रोशन ज़बों नहीं होती

जिस तरह से फिरोज़पुर का टिकट लेकर दिल्ली जाने वाली गाड़ी में सवार होकर कोई आदमी कभी फिरोज़पुर नहीं पहुंच सकता, इस तरह वह आदमी जिसका मन साफ नहीं है, जिसके हृदय में पवित्रता नहीं है, कभी भी भगवान को प्रसन्न नहीं कर सकता चाहे वह लाखों रुपया मन्दिरों और मस्जिदों के बनाने में खर्च करे और कितना ही भगवान के सामने माथा रगड़े और हाथ बांध कर गिड़गिड़ाए। परम सन्त बीर ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुए फरमाते हैं,

1. संखां वांगां नाल न रीझे बीरा दिलबर प्यारा
सच्ची प्रीत मंगे ओह तैथों प्रीत कमा लै यारा
दौलत नाल मिले न प्रीतम प्रेम करे सो पावे
अट्ठे पहर रहे मस्ताना हर दम प्रेम कमावे
खुदी तक्कबर मान बढ़ाई सारी बीर गवाईए
नीवीं तरफ बहे नित पाणी सच्ची गल सुणाईए

2. नगदियां नाल न मिले प्रीतम,
भावें खर्च के लख हजार देखे

इलमां नाल नहीं आंवदा हथ नुक्ता,
भावें पुस्तकां बेशुमार देखे
नहीं रीझदा रंग ते रूप उत्ते,
भावें आपणा आप शिगार देखे
जिन्हां पावणा ए बीरा सच आखां,
करके ओस दे नाल प्यार देखे

इसलिए लोग दान पुण्य, पूजा पाठ, इलमियत और अक्ल के भरोसे पर अपने कारोबारी मामलात में गड़बड़ करते हैं। झूठ और बेईमानी का आसरा लेते हैं। दूसरे के हकूक पर छापा मारते हैं और उनके मफाद (लाभ) को नज़र अन्दाज़ करके अपने लाभ को तरजीह देते हैं। वो लोग चाहे कितनी हो अबादत करें, कितने ही व्रत या रोज़े रखें या मन्दिरों और सत्संगों में जाकर कितनी ही नम्रता और आजज़ी दिखलाएं, कितना ही दान पुण्य करें और चाहे कितने हो स्कूल, अस्पताल खुलवाएं, पर वो कभी भी सच्ची शांति, सच्ची खुशी को प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

अमल से ज़िन्दगी बनती है

बीर जी फरमाते हैं,

पूजा पाठ नमाज़ सब हैन चंगे
चंगी होर इक चीज़ विचार भाई
पूजा पाठ सब्र बीर कबूल उसदे
जिहड़ा होवे सब दा सेवादार भाई

जिस तरह लुधियाना से फिरोज़पुर जाने के लिए टिकट खरीदना जरूरी है पर इससे भी ज्यादा जरूरी उस गाड़ी में सवार होना है जिसने जाना ही फिरोज़पुर है। इस तरह से पूजा पाठ, नमाज़, तीर्थ यात्रा, दान पुण्य और धर्म ग्रन्थों का पढ़ना भी जरूरी है पर इस से बेहतर एक और चीज़ है और वह चीज़ है हमारे ऐमाले ज़िन्दगी यानि हमारे जीवन के कर्म ही वो रेलगाड़ी है जिसमें सवार होकर हम मुक्ति के टिकट का सही इस्तेमाल कर सकते है और मुक्तिधाम में पहुंच सकते हैं। महात्मा कबीर जी फरमाते हैं,

कथनी बदनी छांटकर करनी सो लिव लाये
नर को नीर पिलाये बिन कबहूं प्यास न जाये
कथनी करे सो पुत्र हमारा कथनी कथे सो नाति
रहनी रहे सो गुरु हमारा हम रहनी के साथी

यानि जुबानी जमा खर्च छोड़कर अमल और नेक

काम की तरफ तवज्जा करो। चूंकि बगैर पानी पिए इन्सान को प्यास नहीं बुझती। जो अमल करता है वह हमारा बेटा है। जो बातें बनाता है वह नवासा है। जो रहनी रहता है यानि शुभ कर्म जिसके अंग-संग हैं वह हमारा गुरु है और हम रहनी के साथी हैं। अंग्रेजो का शायर लांगफैलो कहता है,

"हमारी मंज़िले मकसूद खुशी या गम नहीं बल्कि अमल करना ही हमारी मंज़िले मकसूद है। इसी तरह अमल करते हुए हम मंज़िल के करीब होते जाएंगे। अमल करते चलो ताकि कल आज से बेहतर हो जाओ और परसों कल से बेहतर। इसी तरह रोज़ाना तरक्की करते-करते तरक्की की इन्तहा पे पहुंच जाओगे।"

महात्मा बीर ने एक शब्द में ही कि,

नेक कम ही अन्त नूं कम आंदे
कर के देख तू ज़रा विचार बंदे

इस हकीकत का अज़हार फरमा दिया है कि जब तक ज़िन्दगी में पाकीज़गी और परहेज़गारी पैदा नहीं होगी तब तक हमारी ज़िन्दगी में किसी भी खूबी या अच्छाई का अज़हार नहीं हो सकेगा और न इनफरादी और समाजी खराबियों की इसलाह हो सकेगी। इसलिए

पूजा पाठ, प्रार्थना, हज और यात्रा जैसी मज़हबी रस्मों पर निर्भर रहने की बजाय झूठ, बेइन्साफी, बेरहमी और खुदगर्जी का खातमा करना चाहिए।

ज़िन्दगी का हसीन तसव्वर

जन्म मरण के चक्कर से छूटने और मुक्ति धाम पहुंचने का यह सही तसव्वर इस वक्त महात्मा बीर हमारे सामने पेश कर रहे हैं। इस तसव्वर से हम अपनी अमली ज़िन्दगी को बेहतर तौर से मुतासर कर सकते हैं। इस तसव्वर से जहां तमाम मुज़ाहब और उनकी तमाम अल्हामी किताबों के फरमान का मकसद पूरा हो जाता है वहां हमारी अपनी ज़िन्दगी का भी सही मकसद यानि सच्ची खुशी और सच्ची राहत और जीवन मुक्ति हासिल हो जाती है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

गम काहदा ते खुशी काहदी,
प्रेमी सारे ही फिक्र हटा छडदे
नेक कम कर उमर गुज़ार चंगी,
दुब्दा दूई नूं दिलों मिटा छड दे
सदा हक नाल हक नूं परख लैंदे,
प्रीत नाल प्रीतम दे ला छडदे

बीरा बाहर नहीं दौड़दे बन्दगी नूं,
घरे बैठ भगवान नूं पा छडदे

दिल की पाकीजगी

कई भाई कहते हैं कि कारोबारो मसलात में झूठ और बेईमानी का होना स्वाभाविक है लेकिन उन्होंने इस बात पर अच्छी तरह गौर नहीं किया कि झूठ और बेईमानी स्वाभाविक नहीं बल्कि दिल से पैदा होती है। हज़रत मसोह फरमाते हैं, "बुरे ख्याल, खून रेजियां, जिन्नाकारियां, हरामकारियां, झूठो गवाहियां, बदगोईयां दिल से ही निकलती हैं।"

दिल से इनक़ी तहरोक इसलिए पैदा होती है कि हमारे जन्म जन्मात्रों के संस्कार दिल में घर किए हुए हैं और इन्हीं संस्कारों के सबब जब किसी भी सोसाइटो या मजलस में किसी अफसर की ज्यादतियों या किसी की नजायज नफा अंदोज़ियों या किसी लोडर की चालाकियों का जिक्र आ जाता है तो उससे नफरत करने की बजाय सब कह देते हैं, फिर क्या हुआ, जिसको भो मौका मिलता है यह हरकत कर बैठता है।

याद रखिये, हर कोई आदमी ऐसी हरकतें कभी

नहीं कर सकता सिर्फ वो ही लोग झूठ और बेईमानी का आसरा लेते हैं जिनका दिल साफ नहीं है। इसलिए शुभ कर्मों का आगाज़ करने के लिए सब से अव्वल हमें अपने हृदय को पवित्र करना चाहिए। हृदय की पवित्रता के बारे में फरीदुद्दीन अत्तार फरमाते हैं,

दिल बोअद मरआते वजह ज़विज लाल
दर दिले साफी नमायद हक ताल
पेश ए सालक अरशे रहमान अस्त दिल
जुमला ए आलम चूं तनों जां अस्त दिल
जुमला ए आलम जुर्रा ए नोशे जामे दिल
अज़ मकां ता लामकां यक गामे दिल
दिल मकामे उसतवाए किब्रास्त
दिल नवाशद आं कि बा किबरो रिआस्त
गर हमीं खाही कि बीनो रूए ओस्त
दिल बेदस्त आवर कि दिल महरासे ओस्त

तर्जुमा–दिल शीशा नूरी कादरे मुतलक यानि परमात्मा के जलाल को दिखाने वाला है। साफ दिल में परमात्मा का असर पड़ता है। सालक के लिए अरशे रमान दिल हो है। जुमला-ए-आलम मानिद जिस्म के है और रूह मसल दिल के। दिल के जाम से सारा जहान

एक घूंट आबे हयात को पीकर जिन्दा हो रहा है। दिल के एक कदम में अरशो फरश खत्म हो जाते हैं। यह दिल ही अरशे अज़ीम है यानि सच्चखण्ड है लेकिन दिल से वो मुराद नहीं जिसमें गरूर और बदगुमानी हो। अगर तू ऐसे मतलूक यानि परम जोत के दीदार की तलब रखता है तो दिल खुद को हाथ में ला यानि काबू कर कि दिल ही उस रब्बे आलमीन का तख्त है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

जिनका हिरदा शुद्ध है तिनको है दीदार
बीरा हिरदा साफ कर दर्शन दे करतार

यानि जिन आदमियों के दिल पाक-साफ हैं और इस पाकी सफाई के बायस झूठ, दगा, फरेब, बेईमानी, चालाकी, अहंकार, रया और मक्कार से बचे हुए हैं उनको ही मुक्ति या निजात मिलेगी। इसलिए इन्सान को अव्वल तो हृदय को साफ करना चाहिए ताकि भगवान उनको अपना दर्शन दे और निजात बख्शे।

हृदय की पवित्रता गुरु (रहनुमा) की कृपा से होती है

जिस तरह मैला कपड़ा अपने आप साफ नहीं हो

जाता बल्कि धोबी के साफ करने से ही साफ होता है, इस तरह से अपवित्र दिल भी गुरु कृपा से ही पवित्र बनता है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

जो गुर होवे उजला उजल दवे बना
गुर चेले में बीर तब फर्क न दिसे का

यानि अगर गुरु का हृदय पवित्र है तभी चेले के हृदय को पवित्र कर सकता है। इसलिए हमें अपने हृदय को पवित्र करनें के लिए और इसमें से जन्म-जन्मान्तरों के बुरे संस्कारों की मैल निकाल देने के लिए सन्त सद्-गुरु की शरण लेनी जरूरी है। गुरु की अपार कृपा से आप का दिल शुद्ध और पवित्र हो जाएगा। शुद्ध और पवित्र दिल से अच्छे और भले कामों की प्रेरणा मिलेगी और इन अच्छे और भले कामों को करनें के सबब हमारी जन्म मरण की जंजीरें टूट जाएंगो और हम इस जन्म में ही जीवन मुक्ति को प्राप्त कर लेंगे। ज़िन्दगी में आलातरीन खूबी और आनन्द पैदा करने और जिन्दा निज़ात हासिल करने का यह हसीन तसव्वर जिन शहनशाह रूहानियत महात्मा बीर ने हमारे सामनें पेश किया है वह अब हमारे दरम्यान मौजूद हैं और

अपने लाफ़ानो उपदेशों से इन्सानी ज़िन्दगी को निहायत ही खूबसूरत और हसीन बना रहे हैं। जो लोग चाहते हैं कि वो इस गाड़ी में सवार हों जो उन्हें सीधा मुक्तिधाम ले जाए वो उनके सत्संग में आकर अपना हृदय शुद्ध और पवित्र बना लें।

★

जब जागे तभी सवेरा

बीर महाराज ने प्रेम समाज के सत्संग में यह शब्द कहे,

उठ गाफल भया सवेरा है घर लुटया किसी ने तेरा है
तेरे भा दा अजे हनेरा है तू सुध बुध सगल गवाई है
चिड़ियां ने चूं चूं लाई है तैनूं अजे वी जाग न आई है
उठ तड़के कारे रुझ कुड़े तू रमज़ हकीकी बुझ कुड़े
तैनूं मिल जासी सब कुझ कुड़े क्यों ऐवें उम्र गवाई है
चिड़ियां ने चूं चूँ लाई है तैनूं अजे वी जाग न आई है
तू सारी उमर गवा दिती बिन सिमरन हाय लुटा दिती
सब प्रीत दी रीत भुला दिती बिलकुल न सोझी पाई है
चिड़ियां ने चूं चूं लाई है तैनूं अजे वी जाग न आई है

इस प्रकार प्रवचन करते हुए फरमाया कि इन्सान अपने असली शुद्ध स्वरूप और अपने आहला लक्ष्य को भूल कर दुनिया के राग रंग में मशगूल हो गया है और कतई तोर से भूल गया है कि वो कौन है, कहां से आया

है और किस मकसद के लिए आया था? ठीक जिस तरह सोया हुआ आदमी अपनी दौलत, अपनी ताकत, अपनी अकल और अपने रिश्तेदारों, अपने साज़ो सामान और अपने घर बाहर को भूल जाता है और स्वप्न की दुनिया को ही सच मान कर उस में ही दुःख-सुख महसूस करता है।

किसी के जगाने पर न खुद जागकर स्वप्न की दुनिया को असत्य समझकर अपनी भ्रांति पर हंसता है और उसे बेहकीकत समझ कर भूल जाता है।

इसी प्रकार यह संसार और यह जीवन एक बड़ा सपना है जो जीव अपनी भ्रांति से देख रहा है। जब वो ज्ञान की दुनिया में जाग उठता है तब महसूस करता है कि मैं किस तरह अज्ञान से स्वप्न के बंधनों में जकड़ा हुआ था। जिस तरह ख्वाब में बेदारी या तो किसी दूसरे के जगाने पर या नींद पूरी होने पर खुद-ब-खुद हो जाती है इसी तरह संसारी स्वप्न भी या तो गुरु कृपा से टूटता है या खुद ठोकर खाकर मनुष्य दुनिया की बेसबाती को समझ पाता है। आखिर में आपने फरमाया कि जब तक मनुष्य अज्ञान रूपी मोह की निद्रा को नहीं त्यागेगा तब तक इसका कल्याण नहीं होगा।

उपदेश और प्रवचन समाप्त हुआ। लोग उठ कर घरों को जाने लगे तो हम भी उनके साथ ही चल दिए। रास्ते में कुछ आदमी इस कदर बातें करने लगे कि उपदेश तो सत्य है, कोई बात असत और धोखे की नहीं है लेकिन अब भक्ति और ज्ञान की उम्र ही नहीं रही। बचपन और जवानी जिस माहौल में गुजरी, अब बुढ़ापे में रविश कसे बदलें ?

उम्र तो सारी कटी इश्के बुतां में मोमन
आखरी वक्त में क्या खाक मुसलमां होंगे

अब तो जिस डगर पर चल रहे हैं उसी पर चलते रहेंगे। किसी अगले जन्म में ज्ञान और भक्ति के बारे में सोचा जाएगा।

क्या इन सज्जनों की यह बात दुरुस्त है कि अगर जवानी में न संभला गया तो फिर संभलने, गुरु उपदेश लेने और ज्ञान सीखने की जरूरत ही नहीं ? क्या प्रभु नाम सिमरन, हरि चर्चा और कीर्तन के लिए कोई खास उम्र या कोई अवस्था जरूरी है ? क्या नेक बनने, ईमानदार होने, दान देने और प्रेम कमाने के लिए जवानी ही ठीक है और अगर गफलत या अज्ञानता से जवानी गुजर जाए तो फिर इसका नाम लेना भी गुनाह है ? बहुत

लोग ऐसा समझते हैं कि जवानी ही ऐसा वक्त है कि अगर इसमें प्रभु भक्ति, नाम सिमरन और सत्संग की चटक लग गई तो बेहतर वर्ना समय बीत गया। साधन करने पर भी साधन नहीं होगा। भक्ति करने पर भी मन भक्ति में नहीं लगेगा। बारिश वक्त पर न हो तो फसल वक्त पर नहीं होती। बेवक्त की बारिश फसल को कोई फायदा नहीं पहुंचाती, नुकसान भले ही कर दे।

इसी तौर पर वो गुरु उपदेश को समझते हैं। ऐसे लोगों को उनकी यह बेसमझी अज्ञान से भी परे महा अज्ञान में ढकेल देती है। डूबते हुए को कि जिसके कुछ बचने की उम्मीद भी की जा सकती है यह बेसमझी और डुबकी देकर जल्दी ही डुबो देगी ताकि वह फिर सतह पर उभर ही न सके। आह ! कितना बड़ा अज्ञान है कि मनुष्य अपने ही बनाए जाल में खुद फंस कर दम तोड़ रहा है। खुद ही कैदी बन कर हाथों में हथकड़ी और पैरों में लोहे की सख्त बेड़ी डाल रहा है कि कहीं अज्ञान के जेलखाने से भाग न जाये।

जमाने की कैद

यह बचपन, जवानी, बुढ़ापा के नाम की अवस्थाओं की कैद, यह सन्न, महीने, दिन, घंटों और मिनटों की कैद, घड़ी, पल मुहुर्तों के बन्धन किसने बनाए और किसके लिए बनाए ? ज़रा सोचो तो सही। यह साल, महीने, दिन, मिनट, सैक्रिन्ड, घड़ी, पल, मुहुर्त किसके दिमाग की उपज है ?

आप ने ही तो इन्हें सोचा। आप ने ही इनकी कल्पना की। आप ने ही साल और महीनों की लम्बी-लम्बी जंजीरें तैयार कीं और आपने ही अपने आपको इनमें जकड़ दिया और जकड़ा भी इस बुरी तरह से कि समझने पर भी नहीं समझ सकते कि जमाना तो तकसीम से बरी है। इसकी तो तकसीम की ही नहीं जा सकती। दिन रात की तकसीम सूरज से है। अगर बिल्कुल सूरज के पास पहुंच जाएं तो फिर क्या होगा ? हमेशा का दिन, रोशनी ही रोशनी। वहां रात दिन की तमीज़ ही उठ जाएगी। आठ बजे सुबह, चार बजे शाम, दो बजे रात, ब्रह्म मुहुर्त सन्ध्या काल, सुबह काज़ब, सुबह सादक़, शाम का सुहाना समय सब बच्चों की बातें जान पड़ेंगी। वहां का वासी

इस तकसीम को इस नज़र से देखेगा और हंसेगा जैसे एक बूढ़ा आदमी पांच साल के बच्चे को रेत के घरोंदे बनाने और उसे सच समझने को देख कर हंसता है।

वक्त के पैमाने और सालों, महीनों की तकसीम बिल्कुल फर्ज़ी है। यह इन्सान को सिर्फ अपने ज़ेहन की तसल्ली के लिए घढ़ी हुई एक सुनहरी कल्पना है। एक बेहोश आदमी को कई-कई दिन भी एक मिनट ही मालूम देते हैं। वह बेहोशी छूटने पर यही समझता है कि मैं तो अभी बेहोश हुआ था। इसी तरह एक बेचैन और फिक्र मन्द आदमी को एक पल भी एक साल के बराबर मालूम देता है। उसे दिन छुपने में ही नहीं आता। घड़ी की सुईयां उसके लिए चुप हैं हालांकि दोनों सूरतों में वक्त की अपनी ही मुकर्रर रफतार है न वह तेज है न सुस्त।

यही हाल बचपन, जवानी, बुढ़ापा नाम की तीन अवस्थाओं का है। यह अवस्थाएं शरीर की अपेक्षा से कल्पत हैं। छोटे शरीर को बचपन, बड़े शरीर का नाम जवानी और ढ़ीले शरीर को बुढ़ापे का नाम दिया गया है लेकिन अज्ञानी मनुष्य जीव की यह अवस्थाएं समझे हुए हैं। बचपन में वो जीव को कुछ समझने के काबिल, जवानी में अमल के काबिल और बुढ़ापा में उसे नाकारा और

सुस्त समझे हुए हैं और इसी भ्रांति के कारण वो किसी विशेष समय के पश्चात किसी नई बात के समझने और उसे कार्य में लाने, बुरी बात को छोड़ने और उससे छुटकारा पाने में अपने को असमर्थ समझते हैं। हालांकि इन तीनों अवस्थाओं में जीव तो यक्सां रूप में ही इस शरीर रूपी मन्दिर में बिराजमान था। इन अवस्थाओं का जीव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा लेकिन अज्ञान से यह लोग यही माने हुए हैं कि इन अवस्थाओं का प्रभाव जीव पर पड़ता है। अगर आप को कोई यह आ कर कहे कि आज मेरे मकान का शातीर टूट गया तो मेरी टांग भी टूट गई या मेरा मकान बिल्कुल गिर गया और मैं भी मर गया तो आप हंसेगें और उसे बेवकूफ कहेंगे और उसे पूरे जोर और दलीलों से समझाएंगे कि मकान के शातीर टूटने या उसके गिर पड़ने से उसमें रहने वाले पर कोई असर नहीं पड़ता। तुम्हारी अपनी मौजूदगी में इस अमर का सबूत है कि तुम पर मकान के टूटने या शातीर के गिरने का कोई असर नहीं हुआ। अज्ञानता से तुम ऐसा मान कर दुःखी हो रहे हो। अब भला इन्हीं दलीलों को कि शरीर रूपी यह मकान और इसमें जीव रूपी रहने वाले पर क्यों

नहीं लगाते कि जिससे सत् ज्ञान का उद्‌य हो। यह बहस लम्बी है। इसे हम किसी और वक्त के लिए उठा रखते हैं। इतने से ही आप समझ गए होंगे कि दिन, महीने और साल के हिसाब से उम्र और बचपन, जवानी, बुढ़ापा के लिहाज़ से अवस्थाओं की तकसीम बिल्कुल फर्जी है। जीव एक रस है। इसमें कमी-बेशी के समय और कमी भी नहीं होती। जिस्म बामंजला एक मकान और एक औज़ार के है जिसमें ठहरना और जिससे काम लेना है। जब यह ठहरने के नाकाबिल और काम देने के लायक नहीं रहता तब इसको छोड़ दिया जाता है और अपने मुस्सलसल काम को जारी रखने के लिए और मकान और औजार की तलाश कर ली जाती है। काम बन्द नहीं होता, उसका प्रवाह जारी रहता है जब तक कि हम अपनी मन चाही वस्तु सत् ज्ञान या मुक्ति को न पा लें।

इस हकीकत की रोशनी में अब शायद आप भी उन लोगों की बात पर हंस दें कि जो यह कहते थे कि उम्र ढल चुकी, बुढ़ापा आ रहा है, अब भक्ति करने, गुरु उपदेश लेने और नाम सिमरन करने का समय नहीं रहा। इसे किसी और वक्त के लिए उठा रखो।

जब जागे तभी सवेरा

मनुष्य अज्ञान और मोह रूपी निंद्रा में सोया हुआ है। विषय भोगों के सुख में फंसा हुआ है। परम तत्व और परम सुख को भूला हुआ है। जब भी वो जाग उठेगा तभी उसके लिए सवेरा है। ज्ञान की दुनिया में बेदार होना समय या अवस्था पर निर्भर नहीं। जब भी आंख खुले, उसके लिए सवेरा है। अवस्था चाहे बचपन की हो, जवानी की हो या बुढ़ापे को। जोव सीधे रास्ते पर आ गया है। यह सवारी (जिस्म) अगर काम की नहीं रही तो और सवारी तैयार है। यह जरूरी नहीं कि और सवारी लेने पर हो मार्ग बदलना है। यही जागना है। यही परम तत्व के पाने का रस है। इसीलिए परम संत रूहानियत के सरताज बीर जी अवस्था और उम्र को नज़र अंदाज़ करते हुए फरमाते हैं,

जाग मुसाफिर उठ रे जाग,
रैन गई अब दिन चड़ आया
चिड़ियों ने है शोर मचाया,
कुदरत ने सब जगत जगाया
तू क्यों गाफल पड़ा अभाग,
जाग मुसाफिर उठ रे जाग

तुझको नींद कहां की आई,
सो कर क्यों पूंजी लुटवाई
उठकर गाए सगल खुदाई,
अब तो प्रेम लग्न का राग
जाग मुसाफिर उठ रे जाग
साथी तुमरे दूर सिधाये,
तुमको अब तक जाग न आए
सो सो कर क्यों वक्त गंवाए,
आग लगा गफलत को आग
जाग मुसाफिर उठ रे जाग
मानुष तुझको लाज न आए,
बिरथा अपना जन्म लुटाए
तिस को नींद भला क्यों आए,
जिस नारी का लुटे सुहाग
जाग मुसाफिर उठ रे जाग
जो जागे फल पाए सारे,
सोते हैं किस्मत के मारे
सो सो कर हैं लाखों हारे,
हिम्मत कर अब निद्रा त्याग
जाग मुसाफिर उठ रे जाग

नींद से बेदारी

जिस तरह से सोये हुये आदमी का जागना दो तरह से होता है। एक इस हिसाब से कि वह पूरी नींद ले ले और आप ही जाग उठे। दूसरे कोई उसे झिझोड़ कर जगा दे। इस तरह अज्ञान और गफलत की नींद से रूह की जाग भी इन दोनों तरीकों से आती है। एक तो विषय सुखों में अत्यन्त फंस कर हजारों दुख और तकलीफ अपमान बेइज्जती बर्दाश्त करके उनको बेहकीकी समझना और दूसरे गुरु की शरण में आकर उनको दुखदाई जानकर पहले ही बच जाना।

जागने का पहला तरीका यानि खुद ब खुद जागना बहुत दुखदाई और कठिन है क्योंकि जीव अनेक जन्मों में संसार की असारता का अनुभव हजारों कष्ट सह कर पाता है और फिर भी उसे गुरु की शरण लेनी पड़ती है। यह ऐसा है कि कोई तंदरुस्त आदमी लज्जत के वश होकर बेइतदालियां करता रहे और चाहे कि उसकी आहला सेहत के सबब इन बेइतदालियों का असर इस पर ज़ाहिर न हो और फिर यह समझ कर कि मेरी सेहत दरुस्त है, बेइतदालियां पर बेइतदालियां करता रहे, आखिरकार अपनी सेहत खो बैठेगा और फिर हसरत और मायूसी से उनकी तरफ देखता हुआ यह नतीजा निकाले कि अफसोस ! इन फानी लज्जतों के वश होकर

मैं अपनी सेहत खो बैठा। काश ! अब मुझ दोबारा वो सेहत मिले तो फिर मैं उनकी तरफ आंख भर कर भी न देखूं। ऐसा इरादा करके वो किसी हकीम की सेवा में पहुंचता है और अपनो दुख भरी कहानी सुना कर बिनती करता है कि वह उसे सेहतमन्द बना दे। दूसरा आदमी वह है जो शुरू में ही हकीम की शरण आकर सेहत के कानून से वाकफियत हासल कर लेता है और सेहत और तन्दरुस्ती का ख्याल रखता हुआ बेइतदालियों से परहेज़ रखता है। अब आप सोचिए कि जाग तो दोनों ही चुके हैं। एक ठोकरें खा कर और एक ठोकर खाने से पहले। इनमें से आप किसे अच्छा कहेंगे। यकीनन उसको जो बीमार होने से पहले ही हकीम की खिदमत में पहुंच कर बेइतदाली करने से बच गया। इसी तरह से रूहानी दुनिया में भी वो मुबारक है जो विषय सुखों में गिरने से पहले ही किसी महात्मा सत्गुरु .की शरण में पड़ गया और संसार और उसके भोग पदार्थों की असारता को जान गया।

आप शायद न कहें लेकिन दिल में जरूर यह ख्याल आया होगा कि अज्ञान की निद्रा से जागना अपने आप ही होगा। किसी के जगाने से कौन जागता है ? हजारों

लैकचरार और उपदेशक, साधु और सन्यासी, गुरु और मुर्शद ताकीद कर गये, अब भी कर रहे हैं लेकिन कोई ही उनके कहने पर सत ज्ञान की प्राप्ति में अपने आपको लगाता है। अमूमन उनका उपदेश, उनकी नसीहत उनके आश्रम या कान तक ही माहदूद रहती है। कानों में उतार कर कोई बिरला ही अपने हृदय में इन अमूल्य वचनों को जगह देता है। सच्चाई पर रोज़ लैकचर दिए जाते हैं। पहली कक्षा से आखीर उम्र तक "सच बोलो" का सबक पढ़ाया और दोहराया जाता है लेकिन कितने हैं जो सच को जीवन में धारण करते हैं लेकिन झूठ का प्रापोगण्डा कोई नहीं करता। यह अपने आप हृदय में बस जाता है और जो झूठ को छोड़ता है वह अपनी ही ठोकर से ही वर्ना इन लैकचरों और नसीहतों से किसी को झूठ छोड़ते नहीं देखा। आपका यह विचार जिन हालत में रहते हुए आपने विचारा है, ठीक है लेकिन उस की तह तक आपने पहुंचने की कोशिश नहीं की। बात की तह तक पहुंचना ही रूहानियत की पहली सीढ़ी है। ऊपर सतह की बातों से ही आहला नतीजे निकाल लेना भूल और अज्ञान के कारण है क्योंकि मोती समुन्द्र की सतह में नहीं बल्कि गहराई में मिलते हैं।

लोग जागते क्यों नहीं ?

इन लैकचरों और उपदेशों से लोग अज्ञानता की निद्रा को क्यों नहीं छोड़ते ? क्यों कोई माया की अंधेरी रात में गफलत में पांव पसारे बेहोशी की बींद सोये हुए है ? क्योंकि उन्हें दुनिया के फानी होने का यकीन नहीं होता। नफरत, हसद और द्वैष की अग्नि में क्यों जल रहे हैं ? क्यों नहीं प्रेम अमृत का पान करते ? इसकी वजह सिर्फ यही है कि यह उपदेश, यह सत ज्ञान न खुद उन्होंने अपने जीवन में धारण किया और न उन्हें हासल हुआ। फिर उनके शब्दों में, उनके वचनों में, उनके कलाम में दूसरों को जगाने की शक्ति कहां से आये ? हाथी दांत को आपने देखा होगा। जब यह दांत हाथी के मुंह में होता है तब वह उसके ज़रिये शहर की फसील के संगीन किवाड़ों को तोड़ डालता है लेकिन जब वह इससे जुदा हो जाता है तब इसी दांत को खरादी के यहां चूड़ियां तैयार हो कर बाजार में बिकती हैं और उन्हें स्त्रियां खरीद कर पहनती हैं। हाथों की खूबसूरती तो इससे बढ़ जायेगी लेकिन किवाड़ तोड़ने की ताकत, जो हाथी के पास थी, उसमें कभी नहीं आयेगी।

यही हाल रूहानी शब्द और कलाम का है। ब्रह्म-

निष्ठ सच्चे महात्मा और रूहानी गुरु के मुंह से निकले हुए शब्दों में जो शक्ति होती है वह इस दांत वाले हाथी की शहज़ोरी की मानिंद होती है और जो आम लैकचरारों और उपदेशकों के मुंह से वचन निकलते हैं, उपदेश होते हैं वो स्त्री के चूड़े की मानिंद शोभा देने वाले तो होते हैं पर उसकी मानिंद असर करने वाले नहीं होते ।

उठो जागो ! महापुरुषों की शरण ले लो

ब्रह्म ज्ञान के भंडार उपनिषद सत्संगी को चेतावनी देते हैं कि इन थोथे वाचक ज्ञानियों से कुछ हासिल नहीं होगा। यहां तो बातों की भरमार है। जैसे भूखे का पेट बातों से नहीं भरता, ऐसे ही ब्रह्म ज्ञान लम्बे चौड़े लैकचर झाड़ने वालों से नहीं मिलेगा। इसके लिए तो पहले खुद जागना होता है यानि ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता का सबूत देना होता है और फिर यह ज्ञान अनुभवी तपस्वी और ब्रह्मनिष्ठ संतों से ही प्राप्त होता है, और किसी से नहीं। इसीलिए उपनिषद कहते हैं कि पहले आत्म ज्ञान की खाहिश पैदा करो और फिर सच्चे संतों की शरण पकड़ो ।

जब जागे तभी सवेरा

मैंने आपको बतलाया है कि समय का बन्धन कल्पत है। अवस्था और समय को हमनें खुद अपने आप पर आरोप कर लिया है वर्ना ज्ञान हासल करने के लिये आत्मा हर समय तैयार है। जब भी चेतावनी मिले इस तरफ लग जाना चाहिय। महात्मा कबीर फरमाते हैं,

कबीरा सोता क्या करे सोते हुये अकाज
ब्रह्मा का आसन डिग्गा सूनी काल की गाज
अपने पहरे जागिये न पड़ रहिये सोये
न जानूं छिन्न एक में किसका पहरा होये
चकवी बिछड़ी रैन को आन मिले परभात
जो नर बिछड़े राम से दिवस मिले नहीं रात

बचपन, जवानो, अधेड़ उम्र, बुढ़ापे की अवस्था की कल्पना करके भगवत भक्ति और सत्संग से अलग रहने की कोशिश न कीजिये। विषयों की प्रबलता और आत्मिक कमजोरी से ऐसे भाव पैदा होते हैं। जिस समय और जिस अवस्था में ज्ञान प्राप्ति की इच्छा पैदा हो जाये वो ही समय और अवस्था धन्य है। सच्चे मनुष्य जीवन का प्रारम्भ भी उसी समय से होना समझिये।

इससे पहले का जीवन तो भोग विलास का जीवन है। ज्यों ही संसार बन्धन से मौक्ष पैदा हो जाये तभी किसी महान आत्मा की शरण में पहुंच जाना चाहिये क्योंकि बगैर सच्चे गुरु के पाये सच्ची शांति नहीं मिल सकती। महात्मा कबीर का वचन है,

यही खोजत ब्रह्मा थके सुर नर मुनी और देव
कहे कबीर सुन साधवा कर सत्गुर की सेव
ज्ञान समागम प्रेम सुख दया भक्ति विश्वास
गुर सेवा ते पाईये सत्गुर चरण निवास
गुर समान दाता नहीं जाचक शिष्य समान
तीन लोक की सम्पदा सद्गुर दें दान

प्रेम समाज

ऐसे सत्संगी प्रेमी भाईयों और दुनिया की रहनुमाई के लिये और शिक्षा देने के वास्ते कि जिनका दिल संसारिक भोगों से ऊब गया है, जो मोह माया की दलदल से निकलने के लिये बेकरार हो रहे हैं, ब्रह्म ज्ञान हासल करने के लिये जिनके हिरदे में सच्ची तड़प पैदा हो चुकी है, श्री संत बूड़ सिंह जी बीर महाराज ने प्रेम समाज की स्थापना की है जिसमें वह अपनी पवित्र बाणी

से, जिसमें कि उनका अपना अनुभव और तेज समाया हुआ है, पवित्र उपदेश देकर जिज्ञासु को रूहानी दौलत से मालामाल कर देते हैं। इसलिये आप से प्रार्थना है कि समय और अवस्था का भेद दिल से मिटा कर सच्ची शांति की प्राप्ति के लियें प्रेम समाज के सत्संग में आकर मनुष्य जोवन को सफल कीजिये। महाराज बीर फरमाते हैं,

सत्संग में आए के ऐसा लो प्रकाश
बीरा निगाह विशाल से होये द्वैत का नाश

—★—

तू इन्सान है भाई इन्सान बन

बीरा बंदे गर्ज के हिन्दु मुसलमान
सारे बक्षिश पायगा अच्छा बन इन्सान
बीरा मन में धारन बिलकुल गरब गुमान
मन बाणी और कर्म से बन अच्छा इन्सान

मैं लुधियाना जाने के लिये तैयार हो रहा था। एक दोस्त मिलने के लिये आये और मुझे सफर के लिये तैयार देख कर पूछने लगे, "पण्डित जी, किधर जाने की तैयारी है" ? मैंने जब लुधियाना का नाम लिया, वह कहने लगे, "तजारत का शौक चढ़ आया है। लुधियाना तो सन्नित शहर है। क्या कुछ खरीदने का विचार है ?" उनकी बात सुन मुझे कुछ हंसी आई। "मैं और तजारत ! तजारत तो भाई रुपये वालों का काम है। हर वक्त किताबों के मुतालया (पढ़ने में गर्क) और ज्ञान ध्यान की बातों में मसरूफ रहने वाले भी कभी व्यापारी हो सकते हैं ?"

"तो फिर क्या रिश्तेदारी में जाना है ?" उन्होंने कहा।

"रिश्तेदारी भी इधर कोई नहीं।" मैंने जवाब दिया। इस पर भी उन्होंने बस नहीं की। फिर पूछा, "किसी दोस्त ने बुलाया है ?"

"दोस्त ! आपने यह क्या कहा। यह तो लफज़ की सूरत में डिक्शनरी में तो मौजूद है पर दोस्त का होना आज के जमाना में उड़ गया है।"

"यह क्यों ?"

मैंने कहा, "इसलिये कि दोस्ती त्याग और प्रेम पर कायम है लेकिन आज खुदगर्जी इन्तहा पर पहुंच चुकी है। सब गर्ज के बंदे हैं। बाप और बेटे, भाई और बहन में जो खून के रिश्ते से एक हैं, बाहमी नफरत और अदावत हो रही है। मतलब है तो जान देने के वायदे हैं। मतलब निकल गया तो शक्ल देखने के भी रवादार नहीं।

हमने है आज़माया बीर लाखों बार
मतलब के सब यार हैं भाई दुनियादार
नफसो नफसी पड़ी है इस दुनिया के मांहि
बीरा भला गरीब का चितवत कोई नांहि

खुदगर्ज़ी को त्याग कर करें जो पर उपकार
बीरा ऐसे पुरुष तो बिरले हों संसार
(बीर दोहावली)

यह सुनकर वह कुछ झुंझलाये और तनिक तनकर बोले, "आखिर कोई वजह तो होगी। यूं ही तो बिसतर बांधे नहीं जाते?"

मैंने हंस कर कहा, "अब आए असली बात पर। अगर पहले यही पूछ लेते तो यह झगड़ा हो न बढ़ता।"

"अच्छा अब तो बता दो," उन्होंने नर्मी के लहज़े में कहा। मैंने कहा, "दोस्त मैं लुधियाना इन्सान बनने के लिए जा रहा हूं।"

"इन्सान बनने के लिए!" यह सुनकर उनको हैरत की कोई इन्तहा नहीं रही।

मेरे मुंह की तरफ देख कर बोले, "मज़ाक तो नहीं कर रहे?"

"नहीं," उनका हाथ अपने हाथ में लेकर मैंने कहा।

इस पर वह कुछ इतमिनान (तसल्ली) में आए लेकिन तवुजब अभी बाकी था। पूछे बिना रह न सके। बोल ही उठे, "इन्सान तो आप हैं ही। सिर है, कान हैं, आंखें हैं, नाक है, मुंह है, हाथ पांव सब सलामत हैं,

बोलते जाते हो, खाते पीते हो। फिर कौन सी चीज़ है जो आप में नहीं और दूसरे इन्सानों में नहीं और जिसको लेने के लिए आप लुधियाना जा रहे हैं और जिसको पाकर आप इन्सान बन जाएंगे ?"

मैंने कहा, "हां, अभी मेरे में बहुत सी कमियां हैं और इन कमियों के बायस मैं अपने आपको पूरा इन्सान नहीं समझता।"

वह बोले, "क्या मुकम्मल इन्सान में दुम होती है जो औरों के तो है, आपके नहीं ? भाई न-मुकम्मल इन्सान तो वह है जो अन्धा है या लंगड़ा बहरा गूंगा या जिसके हाथ पैर टूटे हुए हों। ईश्वरी कृपा से आपके तो सब जोड़ सही सलामत हैं। फिर आप अपने आपको न-मुकम्मल क्यों समझते हैं ?"

आज का इन्सान मुकम्मल इन्सान है ?

वह फिर बोले, "आज इस तरक्की के जमाने में इन्सान को न-मुकम्मल कहना बड़ा पागलपन है। इन्सान की ताकत के सामने कुदरत ने हथियार डाल दिये हैं। अन्धे पढ़ते हैं, बहरे सुनते और लंगड़े चलते हैं। इन्सानी जिस्म की कोई ऐसी कमी नहीं रही जिसे इन्सान ने

साईंसी आलात की मदद से पूरा न कर दिया हो। इसके अलावा इन्सान ने अपनी इजादात (Inventions) को बदौलत जमानी और मकानी हदों को तोड़ दिया है। पहले जमाने में आदमी सफर तय करने के लिए पैदल चलता था या ऊंट घोड़ा और बैल गाड़ी का सहारा लेता था और ज्यादा से ज्यादा दिन भर में बीस कोस की मंज़िल मारता था पर आज रेलों, मोटरों और हवाई जहाज़ों की मदद से हजारों मीलों का सफर घंटों की बात है और लुत्फ यह कि सफर भी बड़ा आराम देने वाला। गद्दियों पर बैठिये और आंख झपकते सैंकड़ों मील घर से दूर पहुंच जाईये। कहिये, यह न–मुकम्मल इन्सान की करामात है? और सुनिये। पहले आदमी सिर्फ चंद गज़ के फासले से आवाज़ सुन पाता था और अब घर बैठे दुनिया के किसी सिरे की सुन लीजिये। कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। रेडियो का बटन घुमाईये और लेटे लेटे सब कुछ सुन लोजिये।

"पहले आदमी पानी को देखकर डर जाता था। समुन्द्र तो दूर दरिया भी लांघ नहीं सकता था पर अब समुन्द्र का देवता आदमी के आगे हाथ बांधे खड़ा है। दिन रात जहां उसकी छाती को चीरते हुए चलते हैं।

मजाल नहीं वह मुंह में जरा कफ भी लाये। पहले आदमी बारिश की कमी से भूख का शिकार बनता था। बारिश के वास्ते इन्द्र देवता को खुश करने के लिये तरह तरह की प्रार्थनाएं और नाना प्रकार के यज्ञ रचता था पर आज का इन्सान इन्द्र देवता के सामने नहीं गिड़गिड़ाता। दरियाओं से नहरें निकाल ली हैं। बन्ध बांध दिये हैं और मसनूई (Artificial) बारिश का ढंग भी इजाद कर लिया है। मकानों को लीजिये। किसी माडल टाऊन में जाकर आज का मकान देखिये। रसोई घर स्नान घर सब अलग अलग मिलेंगे। पेशाब और पाखाना के लिए अलायदा स्थान और मकान के इर्द गिर्द बागीचा होगा। इनके मुकाबले में गुज़रे जमाना के मकानों को देखिये। निरा कैदखाना। एक ही लम्बा कमरा जिसमें न कोई रोशनदान, न कोई खिड़की और यही कमरा किचन भी है और बैठक भी। रसोई भी यहां बनती है और अकसर रात को पेशाब भी यहीं कर लिया जाता है। सच तो यह है कि इन मकानों में इस जमाने के मुर्दे भी दफन होना पसंद नहीं करते। कहां तक बयान करूं। कोई ऐसा पहलु नहीं जिसमें आज के इन्सान ने तरक्की नहीं की। या यह कहा जा सके कि ऐसा होना चाहिये था पर हो नहीं सका। अफसोस तो उस

आदमी की समझ पर है जो इस जमाने में अपने आपको न-मुकम्मल समझता है। अवल तो हालात के मुताबक हर जमाना में इन्सान अपने आपको मुकम्मल समझता रहा फिर भी अगर मुकाबला करना हो और न-मुकम्मल इन्सान को देखना ही हो तो आज से पांच सात सौ साल के पहले आदमी को देख लो और फिर आज के इन्सान से मुकाबला कर लो। यह बात साफ तौर से वाजया (Clear) हो जाएगी कि इन्सान आज मुकम्मल है या सदियों पहले।"

आज का इन्सान मुकम्मल इन्सान नहीं

जब वह अपनी बात खत्म कर चुके तो मैंने कहा,
"तेरे अंदाज़ के सदके तेरी गुफतार के सदके
नज़र कुछ और कहती है ज़ुबां कुछ और कहती है"

"आपने यह तो ठीक फरमाया कि आज के इन्सान ने सदियों पहले के इन्सान के मुकाबला में हर पहलु में तरक्की की है पर इस तरक्की के बारे में जो सोचा समझा है वह सिर्फ शारीरिक पहलु से ही सोचा समझा गया है। जिस्मानी लिहाज़ से ही इन्सान मुकम्मल इंसान नहीं है। ऐसा ही होता तो फिर इन्सान और

हैवान में फर्क न होता। वह चीज़ जो इंसान और हैवान में तमीज़ कराती है, जब तक इंसान में मौजूद न हो, इन्सान इन्सान कहलाने का हकदार नहीं।" इस पर वह बोले, "वो कौन सी चीज़ है जो इन्सान और हैवान में फर्क पैदा करतो है ?" मैंने कहा, "वो चीज़ प्रेम है, जिसको हमदर्दी मुहब्बत और रहम भी कह सकते हैं। हैवान में यह चीज़ नहीं है। एक चौपाया स्थान पर बंधा हुआ घास चरता है ज्यों ही दूसरा चौपाया उसके साथ शरीक होना चाहता है वह उसे सींगों और दुलत्तियों से मार मार कर भगा देता है। जख्मी हिरण की मरहम पट्टी के लिए न तो कोई हिरण उसके पास ठहरता है और न कोई जानवर उसकी रखवाली करता है बल्कि गीधड़ या लोंबड़ उसे नोच-नोच कर खाते हैं। मगर इन्सान चाहे तो अपने हम जिनसों की प्रेशानहाली और दरमांदगी में हाथ बटाता है। दुख और मुसीबत में अपनी शक्ति के मुताबक आड़े आकर उनके साथ शक्त और हमदर्दी का अज़हार कर सकता है। उनके दर्द का दरमा और उनके गम में शरीक हो सकता है। हैवान में यह रफाक्त का जज़बा नहीं और न ही उसे यह शऊर है कि वह अपने

साथियों का ख्याल रखे पर आज के इस तरक्की याफ्ता इंसान ने इस जज़बा को खत्म कर दिया है और इसका सब कुछ "हैवान" की मानिंद अपने आप तक ही माहदूद हो गया है। हर एक आदमी की यही इच्छा है कि मैं ही सब से धनवान बन जाऊं। मेरे बराबर कोई न हो। दुनिया में मेरी ही लियाक्त काबलियत और दौलत का डंका बजे। इसी धुन में एक आदमी दूसरे को तबाह और बर्बाद करने के पीछे लगा हुआ है और अपनी ऐशो इश्रत और आराम तलबी के लिए इखलाक और नेकी के सब ज़ाबते और कानून पांव तले रोंद डाले हैं। मैं आपको चंद वाक्या सुनाता हूं जिसे सुन कर आप बेअख्तयार कह उठेंगे कि बिल वाक्या आज का इंसान इन्सान नहीं है।

1. बेटे ने मां से मुंह काला किया— लुधियाना 15 मई-शैशन जज के कमरा अदालत में सख्त सन्नाटा छा गया जबकि गांव...लुधियाना की एक औरत...अपने लड़के...के खिलाफ मुकदमा कतल की समायत हो रही है। इस्तगासा की तरफ से शहादत देते हुए बयान किया कि मुलज़म...मेरा लड़का है और बदचलन है। जायदाद को बर्बाद करना चाहता है। इसने मेरी मर्ज़ी के खिलाफ

मेरे साथ भी मुंह काला किया। (प्रताप 15 मई 1945)

2. बाप ने बेटी से जबरदस्ती की–शैतानी की इन्तहा–कालाबाग पुल के परे उगे हुए निर्मलों में आज इन्सान के बेटे ने एक ज़लील हरकत करते हुए इन्सान को बुरी मखलूक से भी ज्यादा जलील साबत किया। वाक्या इस तरह बयान किए जाते हैं कि एक...ने अपनी कुआरी लड़की को साथ ले जाकर शहर के बाहर निर्मलों में उतरना शुरू कर दिया। उस पर लड़की की मां को शक गुजरा और वह पुलिस को लेकर जाये वकूआ पर जा पहुंची। देखा कि वह लड़की से हरामकारी कर रहा है। पुलिस ने बाप बेटी को हिरासत में ले लिया और लोगों ने जूतों और लाठियों से उसकी वो मुरम्मत की कि हजरत बेबस हो गये।

(अखबार देश भक्त करनाल, सफा 4, मोरखा 17.5.50)

3. नौजवान भतीजी को जबरदस्ती अगवा करने के लिए कलयुगी चाचा की नाकाम कोशिश–बठिंडा 23 मई आज शाम के चार बजे आर्य समाज चोक बठिंडा में एक जबरदस्त हंगामा होते होते पुलिस की बरवक्त आमद की वजह से रुक गया जबकि...नाम का एक नौजवान मैहरा गंडासा से मसला होकर अपनी नौजवान भतीजी

को लिजाने के लिए लपका मगर उस कलयुगी चाचा की दाल न गल सकी और वह अपने मकसद में कामयाब न हो सका...कलयुगी चाचा ने पुलिस थाना में जाकर सनसनी खेज हालात ज़ाहिर करते हुए बयान दिया कि उसकी आशनाई काफी अरसा उसकी भतीजी से है और उनके दरम्यान आशनाई होने का इलम मुलजम और उसकी बीवी को भी है। मुलज़म...और उसकी बीवी आशनाई होने की वजह से उसके हजारों रुपये खा गये हैं।

(प्रताप जालंधर सफा 6 मोरखा 25.7.52)

4. बेटे ने बाप को कतल कर दिया- तरनतारन 13 मई-बेटे के हाथों बाप के सनसनी खेज कतल की इतलाह मिली है। बयान किया जाता है कि मुलज़म सुलखण सिंह अपने बाप त्रिलोक सिंह से हमेशा नाराज़ रहता था और अपनी औरत के चाल चलण पर शुभा होने के कारन भी अपनी बीवी से नाराज़ रहता था। मुलज़म ने अपने बाप से जायदाद का हिस्सा तलब किया लेकिन उसने देने से इन्कार कर दिया। चुनांचे एक रात जब त्रिलोक सिंह अपने खेतों में फसल की रखवाली के लिए सोया हुआ था, मुलज़म ने अपने एक साथी की सहायता से बाप को कतल कर दिया। पुलिस ने कलयुगी बेटे को

गिरफतार कर लिया है ।

(प्रभात जालंधर सफा 6 25.7.52)

5. सराय में मुसाफर बन कर आये और बिसतरे चोरी करके चलते बने-अमृतसर -3 मई मुकामी मैजिस्ट्रेट की अदालत में सराय गुरु रामदास से बिसतरों की चोरी के सिलसिले में दो मुलजमों सवर्ण और चनण के खिलाफ दिलचस्प मुकदमा की सुनवाई शुरू हुई और आधी दर्जन के करीब इस्तगासा के गवाहों की शहादतें कलम बंद की गईं । मुलजमों के खिलाफ इस्तगासा का मुकदमा इस तरह है कि 19 अप्रैल को मुलजम रात बसर करने की गर्ज़ से सराय गुरु रामदास में गये । उन्होंने सराय के सुपरवाईज़र से सोने के लिये बिसतरे मांगे और कमरे को लगाने के लिये ताला वगैरह ले गये । मुलज़म स्वर्ण ने इन चीज़ों की वसूली के बारे सराय के रजिस्टर में दस्तखत भी कर दिये मगर अगले रोज़ जब कमरा खोला गया तो तमाम चीज़ें और मुलज़म गायब थे । पुलिस ने मुलज़मों को ग्रिफतार करने के पश्चात उनसे बिसतरे बरामद कर लिये ।

यह वाक्यात अखबार से नक्ल किये गये हैं । हर रोज़ ऐसे वाक्यात किस कदर होते हैं, यह रोज़ाना अखबार

पढ़ने वाले अच्छी तरह जानते हैं। तहज़ीब और इन्सानियत से गिरे हुये इन वाक्यात को देख कर बेअख्तयार कहना पड़ता है,

इन्सानियत मुर्दा हुई मातम करो मातम करो
यह शमा अफसुर्दा हुई मातम करो मातम करो
गैब सवेरा हो गया तारी अंधेरा हो गया
पाबंद दामे हिरस है मातम करो मातम करो
किया गुलामे हिरस है मातम करो मातम करो
न आशना फरियाद से नादम नहीं बेदाद से
इन्सान पत्थर हो गया मातम करो मातम करो
मिट्टी ये जौहर बन गया मातम करो मातम करो
पंधार से बदमस्त है मय्यार कितना पस्त है
खत्म अज़मत हो गई मातम करो मातम करो
इन्सान की किसमत सो गई मातम करो मातम करो
मज़हब से यकसर दूर तर मशरब से बिलकुल बेखबर
रुकस्त हुई अकलो खिरद मातम करो मातम करो
जोरों पे है बुगज़ो हसद मातम करो मातम करो

(मुन्नवर लखनवी रसाला रहनुमाए तालीम)

खुदा तो मिलता है इन्सान ही नहीं मिलता

अल्लामा इक़बाल फरमाते हैं,

खुदा तो मिलता है इन्सान ही नहीं मिलता
यह चीज़ वो है कि देखी कहीं कहीं मैंने

मज़हबी पीरों फकीरों और संत महात्माओं की कृपा से खुदा और भगवान आपको हर जगह मिल सकता है। ऐसे आदमी भी आपको बहुत ज्यादा मिल जाएंगे जो हर रात खुदा से बातें करते हैं पर सच्चा इन्सान जो दूसरों के दुख में दुखी और सबको अपनी ही आत्मा समझने वाला हो, मिलना न-मुमकिन नहीं तो मुश्किल जरूर है। इस दुनिया में,

हिन्दुयों की कमी है न मुसलमानों की
कोई दुनिया में कमी है तो है इन्सानों की
अक्ल से शैखो ब्राह्मण उठा दे पर्दे
ए खुदा तुझसे दुया है तेरे दीवानों की

1947 के फसादात में जब हिन्दुओं मुसलमानों और सिखों का आपस में कतल हुआ। एक दूसरे ने बेगुनाह औरतों और बहु बेटियों को अलफ नंगा करके जलूस निकाले, अगवा किया, बेइज्जती की, मासूम बच्चों को उनके मां बाप के सामने कतल किया। तब बिला शक

यह सच्चाई वाजया होती थी कि हर आदमी अपने अकीदा के मुताबक ईश्वर या खुदा को देख रहा था और उसको सच्चा इन्सान कहीं नज़र नहीं आता था।

इन्सान कहलाने का हकदार कौन है ?

हर एक चीज़ की अलग अलग खासियत होती है। ये खासियत उस चीज़ की हस्ती की दलील मानी जाती है। जैसे आग की खासियत गर्मी है। अब इसी गर्मी के सबब आग की हस्ती है। अगर किसी तरीके से आग में से इस गर्मी या जला देने की खासियत को निकाल दिया जाये फिर आग आग नहीं रहेगी बल्कि खाक हो जायेगी। अब इसी आग से जिसको देख कर शेर और चीते डरते और खौफ खाते हैं, एक चियूंटो भी गुजरते वक्त खौफ नहीं खायेगी क्योंकि आग ने अपनी असली खासियत को मिटा दिया है। इसलिए हर एक चीज को अपनी हस्ती जतलाने और कायम रखने के लिये उसमें अपनो असली खासियत का होना जरूरी है क्योंकि इसी खासियत के सबब दुनिया की सब चीजों में तमीज़ कायम है। अगर दुनिया से यह तमीज्ञ मिट जाए तो फिर घोड़े गधे गाय बकरी इन्सान और हैवान में कोई फर्क न रहे। अच्छे

और बुरे को पहचान न रहे। इसके अलावा इसी खासियत के सबब ताल्लुकात बनते और बिगड़ते हैं। इसी के सबब अच्छों से मुहब्बत और बुरों से नफरत होती है। इसी कारण कोयल की कूक सुन कर खुश और कऊए की कैं कैं सुनते ही कान मूंद लेते हैं। यह क्यों ?

कऊया किस का धन हरे कोयल किसको दे
एक ज़ुबां के कारने सब जग अपना कर ले

जिस तरह आग की खासियत गर्मी, पानी की खासियत ठंडक, अमृत की खासियत जिन्दगी और ज़हर की खासियत मौत है, इस तरह इन्सान की भी अपनी खासियत है और वो खासियत "इन्सान" लफ़ज़ से ही जानी जा सकती है। इन्सान का नाम महज़ उनस मुहब्बत की वजह से रखा गया है यानि इन्सान की खासियत उनस से प्रेम या मुहब्बत है। जिस आदमी में उनस प्रेम मुहब्बत हमदर्दी और रफ़ाकत है, वो ही आदमी कहलाने का मुस्तहिक है। इसी खासियत के सबब इन्सान अशरफ-उल-मखलूकात यानि सब खलकत का अशरफ और अपने मालिक की नज़रों में फरिशता से भी बढ़ कर है। इसी खासियत के न होने के कारण यह हैवान से भी बुरा है।

यह अमर जेहन नशीन कर लीजिये

कि जिस इन्सान का दिल इन्सानियत के जौहर से मालामाल है वह इन्सान भगवान के बहुत ज्यादा करीब है और जिस कदर किसी के दिल में यह जज़बा कम है उसी कदर वह भगवान से दूर है। पर आज साईंसी दौर का इन्सान इन्सानियत के जौहर प्रेम को नजरअंदाज़ करके हर जायज़ और नाजायज़ तरीके धन दौलत इकट्ठा करने, आलीशान मकान बनाने और ऐशो इश्रत से जिन्दगी बसर करने को ही इन्सानियत का जौहर समझे हुये हैं। दरअसल यह चीजें इन्सानियत का जौहर नहीं। यह चीज़ें तो दुनियादारी के धन्धे चलाने के लिये हैं। इनसे इन्सानियत का दर्जा बुलंद नहीं होता।

आदमियत को ही तुम जौहरे इन्सान समझो
जिसमें इखलाक नहीं है उसको हैवान समझो

इन्सान को बड़ा बनाने वाली और सुख देने वाली चीज़ तो प्रेम है। जिसमें प्रेम नहीं वह तो तस्वीर की मानिंद है जोकि दीवार पर खिंची हुई है और बेजान है। फारसी का एक शेयर है,

आदमी रा आदमियत लाज़म अस्त
ऊद रा गर बू न-बाशिद हिज़म अस्त

जिस तरह मिट्टी का बुत किसी को फायदा नहीं पहुंचाता और उसका वजूद महज़ दिल बहलावे के सिवाय और कोई अर्थ नहीं रखता इस तरह से उस आदमी का, जिसमें इन्सानियत का जौहर नहीं है, दुनिया में आना फज़ूल है। कबीर साहब का वचन है,

जा घट प्रेम न सींचरे सो घट जान मसान
जैसे खाल लुहार की सांस लेत बिन प्रान

परम संत महाराज बीर जी फरमाते हैं,

"कभी तुम फखर से कहा करते थे कि इन्सान फरिशते से भी अफज़ल है मगर क्या आज तुम यह अलफाज़ दोहरा सकते हो ? नहीं। क्योंकि सिर्फ तुम्हारी शक्लें इन्सानों की सी हैं लेकिन इन्सानियत का लातीफ जौहर मौजूद नहीं। तुम अपने आपको तबाह करने के वास्ते खौफनाक असला पैदा कर रहे हो सुख शांति आनन्द मुसर्रत और तसकीन बिल्कुल पर लगा कर उड़ चुके हैं। यह सिर्फ इस वास्ते कि तुम में हकीकी प्रेम नहीं रहा।" (रूहानी पैगाम 1945)

तू इन्सान है भाई इन्सान बन

आज के इन्सान ने जमीन पानी और हवा पर फतह

हासिल कर ली है और फायदे के लिये भिन्न भिन्न चीज़ें इजाद कर ली हैं। इस तरक्की के बायस बेशक आज के इन्सान को हजारों साल पहले के इन्सान पर बढ़ाई हासल है पर प्रेम के एतबार से आज को इन्सानी नसल अपने आप को जिंदा समझते हुए भी मुर्दा और तरक्की याफ्ता मानती हुई भी इखलाक से गिरी हुई है। क्या आप नहीं देखते कि इस जमाना में न तो इन्सान को इन्सान से हमदर्दी है और न ही इन्सानियत का चलन सही रास्ते पर है। झूठी बातें, झूठे झांसे, झूठी हमदर्दी, मतलब प्रस्ती, खुदगर्ज़ी के सिवाय और कोई बात ऐसी नज़र नहीं आती जिससे इन्सान की नेकी और हमदर्दी ज़ाहिर हो। ऐसे इन्तहाई गिरावट के समय में जब कि लाखों रुपया मज़हब के फैलाने पर लोग खर्च कर रहे हैं, इन्सानियत को बुलन्द और ऊंचा बनाने पर कोई भी तवज्जा नहीं देता। इस गिरावट पर एक रोज़ परमेश्वर को अपने पुत्रों पर दया आई और उन्होंने अपनी जोत को श्री संत बूड़ सिंह बोर के द्वारा इस दुनिया में जाहिर किया जो कि हिन्दु मुसलिम सिख ईसाई बनने के बजाय ये खुदाई नारा लगाते हैं,

न हिन्दु हो बन न मुसलमान बन
तू इन्सान है भाई इन्सान बन

इन्सान इन्सान बन जाए तो गनीमत है

रौंदी कुचली आवाज़ों के शोर से धरती गूँज उठी है
दुनियां के अन्याय नगर में हक की फिर से गूंज उठी है

दुनिया के बड़े बड़े झगड़ों और इंसानों की बाहमी लड़ाईयों और आपस की कदूरतों पर बहस फरमाते हुए बीर जी लिखते हैं,

"इंसान इंसान का हक दबाता है, इन्सान इन्सान को कतल करता है, इंसान को इन्सान से कदूरत है। यह क्यों ? सिर्फ इसलिये कि इंसान इन्सानियत को भूल गया है। यह इन्सान बनने की बजाय हिन्दु मुसलमान सिख ईसाई बन रहा है। जिसे देखो, वह यही कहता सुनाई देता है कि मैं पक्का हिन्दु हू, मैं पक्का मुसलमान हूं, मगर यह किसी के मुंह से नहीं निकलता कि मैं पक्का इन्सान हूं। दुनिया में अगर इन्सान इन्सान ही बन जाये तो इसके लिये बहुत गनीमत है। जो हकीकी इन्सान बन गया वो दुनिया के बेहूदा झगड़ों से बच गया, उसने अपने आपको संवार लिया। जो हकीकी इन्सान बन जाता है, उसके वास्ते कुछ और बनने की जरूरत नहीं रहती

क्योंकि हकीकी इन्सान अपने फर्ज़ को अच्छी तरह पहचानता है। वो किसी दूसरे को दुख नहीं देता। उसका जोर और ताकत कमज़ोरों के भले वास्ते खर्च होते हैं। उसकी दौलत गरीबों की इमदाद वास्ते सर्फ होती है। उसकी अक्ल नेक कामों में सर्फ होती है। वह दूसरों से हमदर्दी करना अपना फर्ज़ समझता है और जब तक इन्सान में हमदर्दी का मादा न हो, यह इन्सान कहलाने का अधिकारी नहीं।"

इन्सान इन्सान कब बनेगा ?

दर्दे दिल पासे वफा जज़बाए इमान होना
कि आदमियत है यही और यही इन्सान होना

महात्मा टालस्टाय से किसी ने सवाल किया कि इन्सान इन्सान कब बनेगा तो उन्होंने फरमाया कि जब इन्सान में हमदर्दी का मादा पैदा हो जाएगा। इस वास्ते परम संत बूड़ सिंह ने भी सच्ची इन्सानियत के फैलाव के लिए मज़हबी बातों से ऊपर उठकर आपस में प्रेम करने और हमदर्दी जताने पर जोर दिया है। आप फरमाते हैं,

कुछ तां कर ख्याल दिल विच,
तू इन्सान है यार इन्सान बन जा

नेकी नाल तू वक्त गुजार अपना,
खुदी छड के बेगुमान बन जा
ऐना प्रेम समा जाये विच तेरे,
ख़ुदी छड के तू निरमान बन जा
बीरा सारेयां दा खिदमतगार होके,
तू बे-तानयां दे लई तान बन जा

लुधियाना में इन्सान बनाने का कारखाना

मेरी यह बात सुन कर वह मज़ाहिया अंदाज़ में बोले कि यह दरुस्त है कि आज इन्सानों में इन्सानियत की कमी हो चुकी है और अमन सलामती के लिए इन्सानियत की बहद जरूरत है पर यह तो बताईये कि आप जो लुधियाना इन्सान बनने के लिए जा रहे हैं, क्या वहां कोई कारखाना है जिसमें इन्सान ढाले जाते हैं या ओवर-हाल किये जाते हैं। मैं भी हंस दिया और कहा, हां भई, दुनिया में कोई चीज़ बनाये बगैर नहीं बनती। इन्सान भी बनाये जाते हैं, अपने आप नहीं बन जाते पर इन्सान को बनाने के लियें सांचों या हथोड़ों की जरूरत नहीं। उसके लिए तो हकीकी रहनुमा और सच्चे उपदेश की जरूरत है। यह मिल जायें तो काया ही पलट जाती है। लुधियाना में एक ऐसे महात्मा बिराजमान हैं जो अपने

सत्संग रूपी कारखाना में इन्सान का ओवरहाल करके उसे शुद्ध और पवित्र हिरदा बना देते हैं। कितने ही तुन्द मिजाज़, सख्त दिल, बेरहम, शकी तबीयत, गुनाहगार आपके सत्सग के फैज़ से निर्मल, शुद्ध, पुण्यवान और प्रेम स्वरूप बन चुके हैं। इन्सानो जिन्दगी का मकसद भी यही है कि वो जोहरे इन्सानियत से अपने आपको बुलन्द और ऊंचा बनाये। इसलिए मैं आपसे महाराज बीर के शब्दों में ही यह अपोल करता हूं,

"मेरे मोहतरिम भाईयो, मैं छोटे बड़े नौजवान बजुर्ग हर एक को नसीहत करता हूं कि आपको ईश्वर नें इन्सान बनाया है। इस वास्ते सच्चे इन्सान बनो और अपने में इंसानियत पैदा करो" क्योंकि बीर जो का फ़रमान है,

न हर इक बात में अंजान बन तू
गुनाह कर कर के न नादान बन तू
तुझे अश्रफ बनाया है खुदा ने
अगर इंसान है इंसान बन तू

—★—

सबसे अच्छा काम

मानुष जन्म अमोलक मिलया

"मानुष जन्म अमोलक मिलया" यह संत बीर जी के पद्य की एक तुक है। संतों की बाणी बड़े भेद और प्रेम वाली होती है। इनमें शब्द थोड़े पर मतलब ज्यादा छिपा होता है। इस तुक में बीर जी ने मनुष्य जन्म को अमुल्य या बेशकीमत, जिसकी कीमत ठहराई न जा सके, बतलाया है। शास्त्र भी कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों में इन्सानी योनि सबसे आहला है। हद तक कि देवता भी इस योनि में जन्म लेने के लिए भगवान से प्रार्थना करते रहते है। तुलसी दास जी का वचन है,

बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ ऋषि मुनि गावा

यानि बड़ी खुशकिस्मती से मनुष्य का जन्म मिलता है सब ऋषि मुनियों का यही फरमान है कि मनुष्य जन्म देवताओं के लिए भो दुर्लभ है।

हमारे में से बहुत से भाई देवताओं को मनुष्य से आहला समझते हैं और चाहते हैं कि देवता बन जायें पर

उनको पता नहीं कि देव योनि सिर्फ भोग योनि ही है। जैसे कि पशुयों की योनि है। देवता योनि सुखों को भोगने के लिए और पशु योनि दुखों को भोगने के लिये बनाई गई है। मनुष्य के कर्म तीन प्रकार के होते हैं। अवल बहुत ही उत्तम, दूसरे दरम्याना दर्जे के यानि अच्छे ज्यादा और बुरे कम, तीसरे नकरिष्ट यानि सब बुरे ही बुरे। पहले प्रकार के उत्तम कामों का फल निरा सुख ही होता है। जिस योनि में सुख को प्राप्ति हो उसे देव योनि कहते हैं। दूसरे दर्जे के कर्मों का फल दुख और सुख मिला जुला होता है। जिस योनि में यह प्राप्त होता है उसे मनुष्य योनि कहते हैं। तीसरे दर्जे के कर्म का फल निरा दुख ही दुख होता है। जिस योनि में यह प्राप्त होता है उसे पशु योनि या राक्षस योनि कहते हैं। इन तीनों योनियों में देव योनि और राक्षस योनि भोग योनि हैं। यह सिर्फ सुख और दुख भोगने के लिए बनाई गई हैं पर मनुष्य योनि में यह विशेषता है कि यह भोग योनि के साथ-साथ कर्म योनि भी है यानि इस योनि में आकर ऐसे कर्म किये जा सकते हैं जिससे देव योनि या राक्षस योनि प्राप्त हो और ऐसे कर्म भी किए जा सकते हैं कि जिससे जन्म मरण का चक्र हमेशा हमेशा के लिये खत्म

हो कर अबदी निजात मिल जाये। देवताओं को सुख की अवद्धि (मिआद) खत्म होने पर जन्म लेना पड़ता है और इन कर्मों का चक्र फिर चालू हो जाता है। इस कर्म चक्र को समाप्त करने के लिये हो देवता मनुष्य योनि में आने के लिये भगवान से प्रार्थना किए कहते हैं, ',हे भगवान ! हमें मनुष्य जन्म अता कर ताकि हम निश्काम प्रेम भक्ति कमा कर मुक्ति हासल कर सकें।" गुरु अर्जुन देव जी फरमाते हैं,

कई जन्म भए कीट पतंगा, कई जन्म गज मीन करंगा
कई जन्म पंखी सर्प होयो, कई जन्म हुआ बिरख जीवयो
अब जगदीश मिलन की बरिया, चिरंकाल से देह सवरिया

यानि कई जन्म कीड़ों और पतंगों के पाये, कई जन्म हाथियों, हिरणों और मछलियों के पाये, कई जन्म पक्षियों और सांपों के पाये, कई जन्म दरखतों और घोड़ों के पाये। अब बहुत अरसा के बाद मनुष्य का जन्म मिला है अब परमात्मा को मिल। कबीर जी का वचन है,

मानुष जन्म दुर्लभ है मिले न बारम बार
तरवर से पत्ता झड़े बहुर न लागे डार

उपनिष्द में इस रहस्य को एक दिलचस्प कथा के रूप में बयान किया हैं,

भगवान जब जीवों के लिए शरीर बनाने लगे तो पहले उन्होंने बैल शरीर निर्माण किया और जीव को कहा कि तुम इसमें प्रवेश करो, यह तुम्हारे रहने के लिए बनाया गया है। जीव ने बैल के शरीर को देख कर उसमें प्रवेश करने से इन्कार कर दिया। तब भगवान उसके सामने घोड़े का शरीर लाए और जो चलने में बहुत तेज और देखने में बहुत सुन्दर था लेकिन जीव ने इसमें भी रहने से इन्कार कर दिया। इस तरह जीव के सामने कितने ही पशु शरीर लाये गये पर जीव ने किसी को भी पसंद नहीं किया। आखिर में भगवान ने मनुष्य शरीर पेश किया जिसे देख कर जीव बहुत खुश हुआ और झट बोल उठा, "हां हां, यह शरीर मेरे योग्य है।" तब भगवान ने प्रसन्न हो कर "पुरशोदाद सुकरतम" (यह मनुष्य शरीर तेरे लिए सुकर्त हो) कहा। सुकर्त का शब्दार्थ अच्छा काम है यानि भगवान ने जीव को मनुष्य शरीर देकर यह आशीर्वाद दिया कि यह शरीर तेरे लिए अच्छा काम करने का साधन या ज़रिया हो।

अच्छा काम

अब हम इस बात पर विचार करते हैं कि वह अच्छा काम कौन सा है जिसके करने से हमारे शरीर धारण करने का मकसद पूरा हो और साथ ही भगवान का आशीर्वाद सफल हो। अगर हम इस सवाल को अखबारों में छाया करवायें तो यकीनन अस्सी फीसदी लोगों का जवाब तो यह होगा कि धन कमाना सबसे अच्छा काम है क्योंकि गृहस्थ का पालन धन से होता है। धन से ही धर्म और कामना पूरी होती है और स्वर्ग प्राप्ति करने वाले यज्ञ वगैरह कर्म भी धन से ही होते हैं। धन बगैर संसार में निर्वाह नहीं हो सकता। जिसके पास धन होता है उसके बहुत से मित्र और बन्धु होते हैं। वह ही मर्द समझा जाता है और वह ही पण्डित माना जाता है। निर्धन मनुष्य जब धन चाहता है तो धन का मिलना उसके लिये मुश्किल हो जाता है मगर धनवान का धन बढ़ता है। जसे जंगल में एक हाथी के पीछे बहुत से हाथी चले आते हैं इस तरह धन ही धन को खींच लेता है। धन से धर्म का पालन, कामना की पूर्ति, स्वर्ग की प्राप्ति, परम आनन्द यह सब कुछ मुमकिन है। धन से ही देश की मरयादा बढ़ती है। निर्धन को न इस लोक

में सुख है न प्रलोक में। धन के बिना मनुष्य धार्मिक काम नहीं कर सकता। जिसके पास धन की कमी है, जिसके पास खिदमतगारों की कमी है, जिसके यहां महमानों का आना जाना नहीं होता, वह मनुष्य क्या मनुष्य है? मनुष्य को हर तरह से धन जमा करना चाहिए। पढ़ने पढ़ाने का काम भी धन से ही पूरा होता है। इस वास्ते धन पाना ही सबसे अच्छा काम है।

बाकी बीस फीसदी लोगों का, जो धार्मिक ख्याल के हैं, ख्याल है कि सब संसारिक भोगों को त्याग कर वन में फल फूल खाकर कठोर तपस्या करना और सुबह शाम स्नान करके भजन करना शरीर पर ही मृगशाला धारन कर मश्तिक पर जटाएं रखना, सर्दी गर्मी और भूख प्यास का कष्ट सहन करना, तप से शरीर को सुखा डालना, एकांत में रह कर तत्व विचार करना, कच्चा पक्का जो फल मिल जाए उससे पेट की अग्नि बुझाना, प्रिय अप्रिय का विचार छोड़ कर दरखत के नीचे निवास करना, किसी के लिए न शोक करना, न हर्ष करना, निन्दा स्तुति को समान समझना, आशा और ममता को त्याग कर निद्वन्द हो जाना, कभी भी किसी वस्तु का संग्रह न करना, दूसरे के खिलाफ कभी कोई बात न

करना, अन्धे गूंगे और बहरों की तरह विचरना और प्रभु भजन करना ही सबसे अच्छा काम है।

दो किस्म के काम

एक मत के परविर्तक स्वामी महापुरुष का एक वचन है,

अपना काम करो भाई पराया काम नहीं फंसना

यानि अपना काम करो, पराया काम न करो। इंसान जितने भी काम करता है, उनको दो हिस्सों में तकसीम किया जा सकता है। एक तो वो काम हैं जो अपने लिए किए जाते हैं। धन कमाने की प्रवृत्ति की अगर पड़ताल को जाए तो इसमें यह ख़ाहिश छिपी हुई मिलेगी कि मैं इतना क़माऊं कि जो मेरे बेटे पोतों के लिए काफी से भी ज्यादा हो। बेटे पोतों के लिए धन कमाना दूसरों के लिए धन कमाना है। अगर बच्चों की परवरिश के लिए भी धन कमाया जाता है तो यह भी पराया काम है क्योंकि बच्चों ने साथ नहीं जाना। इस तरह अगर शरीर पालन के लिये धन कमाया जाता है तो भी पराया काम ही है क्योंकि शरीर ने साथ नहीं जाना। यह सब काम तो लद्दू जानवरों की तरह दूसरों के

काम ही हैं। अपना काम वह है जिससे अपनी रूह का भला हो, अपनी आत्मा का कल्यान हो। इसके लिए धार्मिक पुरुष त्याग का उपदेश देते हैं यानि इंसान सब कुछ छोड़ कर, जैसा कि ऊपर बयान किया गया है, जंगल में जाकर ईश्वर की अबादत में लग जाये लेकिन इसमें सब से बड़ी कमी यह है कि इस तरीके से इन्सान का अपना सब कुछ अपने तक ही सीमित हो जाता है जोकि खुदगर्जी की इन्तहा है। इससे दुनिया के लोगों के लिए नफरत और अपनी भक्ति पर घमंड और तक्कबर भी पैदा हो जाता है जिससे गिरावट आ जाती है।

इंद्र और तपस्वियों का सवाद

इस त्याग के बारे में एक दफा तपस्वियों के साथ इंद्र का संवाद हुआ जो इस तरह है,

कुछ ब्राह्मण बालक जो अभी नादान थे, घर बाहर छोड़ कर जंगल चले गये और सन्यासी हो गये। इसी को धर्म मान कर वो बड़े प्रसन्न थे। भाई बन्धु और मां बाप की सेवा से मुंह मोड़ कर वो ब्रह्मचार्य का पालन करने लगे। एक दिन इन पर इंद्र देव की कृपा हुई। वह सुनहरी पक्षी का रूप धारण करके इनके पास गये और

उन्हें सुना कर कहने लगे,

"यज्ञ से बचे हुये इन भोजन करने वाले महात्माओं ने जो कर्म किया है वो दूसरे मनुष्यों से होना कठिन है। इनका यह कर्म बड़ा पवित्र और जीवन बड़ा उत्तम है। इनका मनोरथ सफल हुआ। ये सब धर्मात्मा उत्तम गति को प्राप्त हुए।"

ऋषियों ने कहा, "वाह ! यह पक्षी यज्ञ से बचे हुए इन भोजन करने वालों की स्तुति करता है तो हम लोगों की ही प्रशंसा हुई क्योंकि हम लोग ही यज्ञ से बचे हुए भोजन को खाते हैं।" पक्षी ने कहा, "मैं तुम्हारी प्रशंसा नहीं करता। तुम तो जूठा खाने वाले हो और मूर्ख हो। पाप रूपी कीचड़ में फंसे हुए हो। यज्ञ से बचा हुआ भोजन खाने वाले तो और ही होते हैं।"

ऋषियों ने कहा, "पक्षी ! यह बड़ा कल्यानकारी साधन है। ऐसा समझ कर ही हम इस का सहारा लिए बैठे हैं। अब तुम्हारी बात सुन कर तुम पर हमारी श्रद्धा हुई है। इसलिए जो भी परम कल्यान वाला साधन हो वो ही हमें समझाओ।"

पक्षी ने कहा, "अगर तुम्हारा मुझ पर विश्वास है तो मैं सही बात बताता हूं। सुनो ! जो यज्ञ से बचे हुए भोजन को खाते हैं, उन्हें अविनाशी पद की प्राप्ति

होती है। देवताओं पित्रों अतिथियों और परिवार के दूसरे लोगों को अन्न देकर जो सबसे पीछे खाते हैं वो यज्ञ से बचे हुए भोजन करने वाले कहे गए हैं।"

यह यज्ञ क्या है ?

ब्राह्मण बालकों के त्याग की निन्दा करते हुए इन्द्र ने जब सबसे अच्छे काम (यज्ञ) का इशारा किया, हजारों साल बीतने पर भी लोग इसको अब तक नहीं समझ सके। यज्ञ संस्कृत का लफज़ है जिसके मायने कुर्बानी के हैं। बहुतों ने इसका मतलब जानवरों के ज़िबा करने का लिया और बहुतों ने अग्नि में घी और हवन सामग्री जलाने का लिया लेकिन इन्द्र का मन्शा इन दोनो से पूरा नहीं होता। इन्द्र ने रमज़ से ब्राह्मण बालकों को बतलाया कि इस त्याग की बजाय अपने नफस की कुर्बानी या दूसरों के लाभ के लिए अपने लाभ की कुर्बानी देना और सेवा करना ही यज्ञ है और यही सबसे अच्छा काम है जो दुनिया में रह कर तुम्हें सरअंजाम देना चाहिये था।

महाराज बीर इन्द्र के रूप में

आज से हजारों साल पहले देवताओं के सरताज

इन्द्र ने जिस अज़ली और अबदी यानि आनंत और अनादि सदाकत का अज़हार त्यागी ब्राह्मण बालकों के सामने किया था, उसी छिपी हुई हकीकत या गहरी रमज़ का प्रचार मौजूदा जमाने में रूहानी धोखे में फंसे हुए बेसमझ लोगों के लिए परम संत शहनशाह रूहानियत बाबा बूड़ सिंह जी बोर इन इलफाज़ में कर रहे हैं,

सबसे अच्छा काम अपना काम है। अपना काम वह है जिससे अपनी आत्मा का कल्यान होता है और अपनी आत्मा का कल्यान भी ईश्वर भक्ति से होता है और ईश्वर भक्ति घंटा घड़ियाल बजाना या संध्या नमाज़ अदा करना नहीं बल्कि जनता की सेवा या खिदमते खलक है। चुनांचे आप प्रेम समाज के दूसरे असूल में ईश्वर भक्ति की तारीफ करते हुए फ़रमाते हैं,

"ईश्वर खिदमते खलक हमदर्दी परउपकार से खुश होता है। इस वास्ते इनको सबसे बड़ी अबादत मानना।"

अपने रसाला 'खिदमते खलक' के सफा 6 पर इसकी व्याख्या यूं फरमाते हैं,

"खिदमते खलक करने से परमात्मा खुश हो जाता है और जिस मकसद के वास्ते इन्सान कई जप तप करता

है लेकिन उसे शांति प्राप्त नहीं होती, असली सरूर हासिल नहीं होता। यह मकसद तसकीन और सरूर खलकत की खिदमत से नसीब होता है। खिदमते खलक एक बड़ी भारी भक्ति है। एक महापुरुष ने फारसी भाषा में कैसे सुन्दर वचन उचारण किये हैं जो सुनहरी हरफों में लिखे जाने के काबल हैं,

इबादत बज़ुज़ खिदमते खलक नेस्त
ब–सजादा ओ तस्बीओ दलक नेस्त

यानि खलकत की खिदमत के बगैर कोई इबादत नहीं है। सजदे, आसन, तसबी और करमण्डल के पास रखने से आदमी भक्त नहीं बन जाता। खिदमते खलक एक बड़ी भारी अबादत है क्योंकि खिदमते खलक सिर्फ वो ही शख्स करता है जिसे यह ज्ञान होता है कि परमात्मा सर्व व्यापक है। हर एक में उसका नूर समाया हुआ है और हर एक में उसकी जोत है। अगर खलकत की खिदमत की जाएगी तो परमात्मा की खिदमत होगी।"

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं सबने खिदमते खलक को एक बड़ी भारी अबादत तसलीम किया है

जैसा कि फरमान है,

सेवक को सेवा बन आई, हुक्म बूझ परम पद पाई

गुरु नानक देव जी फरमाते हैं,

विच दुनिया सेव कमाईए ता दरगह बैसन पाईए

(श्री राग महला)

अगर दुनिया में लोगों की खिदमत करोगे तो खुदा को दरगाह में बढ़ाई और इज्जत पाओगे।

अबु बिन आदम की हकायत

इसलामी तारीख में अबु बिन आदम की हकायत में, जो इस तरह है, सबसे अच्छा काम या बेहतरीन अबादत की हकीकत बयान की है। अबु बिन आदम ने एक रात सुपन में एक फरिशता देखा जिसके हाथ में एक किताब थी। अबु बिन आदम ने फरिश्ता से दरिआफत किया कि इस किताब में क्या लिखा है ? फरिश्ता ने कहा, इस किताब में उन आदमियों के नाम हैं जो खुदा का नाम लेते हैं और उससे मुहब्बत करते हैं। अबु बिन आदम ने पूछा कि क्या इसमें मेरा भी नाम है ? फरिश्ता ने कहा, नहीं।

अबु बिन आदम को इस जवाब से हैरानगी भी हुई

और आश्चर्य भी। चंद दिनों के बाद वो ही फरिश्ता फिर ख्वाब में नज़र आया और उसी किसम की एक और किताब उसके हाथ में थी। अबु बिन आदम ने पूछा कि इस किताब में क्या लिखा है ? फरिश्ता ने कहा, इस क़िताब में उन आदमियों के नाम लिखे हैं जिनके साथ खुदा मुहब्बत करता है। अबु बिन आदम ने पूछा कि क्या इसमें मेरा भी नाम है ? फरिश्ता ने कहा कि इसमें आपका नाम सबसे अवल है। अबु बिन आदम ने कहा, वह कैसे ? पहली किताब में मेरा नाम ही नहीं था और दूसरी किताब में सबसे अवल लिखा है ? फरिश्ता ने कहा, ए अबु बिन आदम ! चूं कि आप खुदा के बनाए हुए बन्दों से नेकी, मुहब्बत और भलाई करते हैं, इसलिए आपका नाम सबसे अवल है क्योंकि खुदा उन आदमियों का भूखा नहीं है जो केवल उसके साथ मुहब्बत करते हैं।

शहनशाहे रूहानियत परम संत बूड़ सिंह बीर, जिनके लिए जनता के दिल में खास जगह है, खुद सेवा में अपने आपको इतना लीन कर देते हैं कि अक्सर सत्संगों के मौकों पर उन्हें सत्संगियों के जूते साफ करते देखा गया है। गरीब बच्चों को कंधों पर बैठाना और कमज़ोर

लोगों के वस्त्र सिर पर उठा कर मीलों उनके ठिकानों पर पहुंचा आना, खुद भूखे रहकर अपना खाना मोहताजों में तकसीम कर देना आपके हर रोज़ की अबादत है। आप अपने रूहानी कलाम में फरमाते हैं,

जो मखलूक हों उनको आबाद कर
जो नाशाद हों उनका दिल शाद कर
हज़ारों नमाज़ों की यह है नमाज़
गरीबों यतीमों की इमदाद कर
मैं हिन्दु हूं अपने ये दिल से बिसार
मैं मोमन हूं मन से भुला दे यह यार
मिले जो भी दुखिया तू फरियाद सुन
तभी बीर खुश होगा परवरदिगार
कर आबाद सबको खुद आबाद हो जा
तू दुखिये को कर शाद खुद शाद हो जा
वसीह कर निगाह को तू बहरे गरीबां
जहां के झमेलों से आज़ाद हो जा

एक दूसरी जगह लिखते हैं,

किसी की मुसीबत को अपनी ही जान
किसी की तकलीफ अपनी ही मान
हो कुदरत तो दुखिये की इमदाद कर
ये फरमाता है बीर रबुल रहमान

सबसे अच्छा काम—खिदमते खलक

खिदमते खलक में है मस्तूर शाने ज़िन्दगी
है दिले दर्द की आशना हो राज़दाने ज़िन्दगी
गम गुसारी मुकतज़ा तखलीक इन्सानी का है
दूसरों के गम में मरना है निशाने ज़िन्दगी
मुज़तरिब जब हो कोई हो जा शरीके इस तरह आप
बाहमी इमदाद है राजे नहाने ज़िन्दगी

यानि खिदमते खलक ही ज़िन्दगी की शान है। दर्द वाला दिल हो ज़िन्दगी का राज़दान है। नम्रता और गम गुसारी ही इन्सानी फितरत का जोहर है। ज़िन्दगी की निशानी दूसरों के गम में मरना ही है। जब काई परेशान हो जभी उसकी परेशानी में शामिल हो। आपसी इमदाद में ही ज़िन्दगी का राज़ छिपा हुआ है।

इन्सानी ज़िन्दगी का मकसद

जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं, धन कमाना या दुनिया को छोड़ देना ज़िन्दगी का मकसद नहीं है। बड़ा मकसद आहला रूहानी कमाल हासिल करके सारी कायनात को खुशी और आनन्द देना है। जब इन्सान सच्ची रूहानियत की तालीम से जाती कमाल को पा लेता है तो

फिर उसे अपनी ज़िन्दगी की शानो शोक्त दूसरों की खातिर अपना आप गंवाने में नज़र आती है। देखिए तो सही, बाग में फूल क्यों खिलते हैं? फलदार दरख्तों की टहनियां फलों से लदी किसलिए झुकी पड़ी हैं? गंद्धम के खोशे किसलिए पकते हैं? दूसरों के लिए ही न, तो फिर जब निबादात यानि जड़ी-बूटियों की ज़िन्दगी का मकसद आहला है जो अपना हुसन और बहार खिलाकर हमारी आंख को नूर और सरूर देने वाला है तो क्या इन्सानी ज़िन्दगी का आहला मकसद निबादात की ज़िन्दगी के मकसद से किसी तरह भी कम हो सकता है? हरगिज़ नहीं। बीर जी फरमाते हैं,

तू दुनिया में उठ और सबको उठा
जो सोते हैं गफलत में उनको जगा
सदा बीर दुखियों की इमदाद कर
तू बीर बन नेक नेकी सबको सिखा

खिदमते खलक ही सबसे अच्छा काम क्यों?

खिदमते खलक सबसे अच्छा काम क्यों है? इसको अब हम एक और नज़र से सोचते हैं। अगर हम अपनी

ज़िन्दगी के रोज़ाना कारोबार और मुखतलिफ मौकों के लड़ाई–झगड़ों और सुलह–मिलाप के वाक्यात और खुशी और गमो के असबाब की पड़ताल करें तो मालूम होगा कि जब हम अपने ही फायदे के कामों को सबसे अच्छा काम समझकर इनको करते हुए अपनी ज़िन्दगी बसर करते हैं तब तक हमारी ज़िन्दगी में झगड़ा, नफरत, फूट, हसद बुगज़ो आनाद हैं और जब हम दूसरों की इमदाद को ही सबसे अच्छा काम समझकर उसे पूरा करते हुए ज़िन्दगी बसर करते हैं तो हमारी ज़िन्दगी में मुसर्रत और खुशी छा जाती है और तमाम मज़हबी और कौमी तफरीक हमेशा के लिए मिट जाती है। दूसरों की सहायता के काम को सबसे अच्छा काम समझ लेने पर इन्सान के अपने वजूद में बदी का मैदान ही नहीं रहता। जाती लाभ के ख्यालात और जज़बात असली रहमदिली मुहब्बत नेकी वगैरह रूहानी सिफतों में बदल जाते हैं और हमारी सारी कोशिशों का केन्द्र खुशी और आनन्द को दूसरों की भलाई के ज़रिये हासिल करने और रोज़ाना अमली ज़िन्दगी में पूरा–पूरा होता है।

प्रोफेसर अलबर्ट आईनसटाईन, जिनकी गिनती दुनिया की महान शख्सियतों में से है, फरमाते हैं,

"दुनिया में इन्सानों का वजूद दूसरे इन्सानों के लिए कारआमद होने के लिए है, खासकर उन लोगों की जिनकी खुशी और आनन्द पर खुद हमारी खुशी का इनसहार (निर्भरता) है और साथ ही उन बेशुमार नामालूम लोगों के लिए जिनकी किस्मतों के साथ हमारा हमदर्दाना ताल्लुक है। खिदमत हमारा सबसे पहला फर्ज है।"

मानुष देही बड़ी अनोखी इस नाल सेव कमा जा

बीर बुलन्द आवाज़ से कहता है,

"ए इन्सान, समझ। अगर तू बढ़ना चाहता है तो खलकत की खिदमत कर। जब तू खलकत की खिदमत करेगा तो लोगों के दिलों को प्यार और प्रेम से जीत लेगा। बस फिर क्या होगा ? उनकी आवाज़ परमात्मा के हजूर में जाएगी। परमात्मा सर्व शक्तिमान तेरी सेवा से खुश हो जाएगा। बस फिर तू क्या चाहता है ? जिसने खुदा को खुश कर लिया उसको किस चीज़ की जरूरत है।

देख मैं फिर इलतजा करता हूं !

"कि समझ सोच जाग़, तेरी उम्र हवा के बादलों की तरह उड़ जाने वाली है। तेरी ज़िन्दगी रेत की दीवार

की तरह गिर जाने वाली है तेरी हय्यात झट-पट पिघल जाने वाली मोम की तरह है। अगर अबादत करना चाहता है, अगर खुदा को पाना चाहता हैं, अगर मार्फत का तलबगार है, अगर हकीकत की मंज़िलें तय करना चाहता है, अगर तसकीन सबर और हकीकी सरूर का मुतलाशी है, अगर शांति का तलबगार है, अगर अपनी ज़मीर को ऊंचा उठाना चाहता है, अगर इन्सान से देवता बल्कि खुद नूर बनना चाहता है तो खलकत की खिदमत किया कर और जिस किसी को दुख में देखे, उसकी मदद किया कर क्योंकि,

"यही सबसे अच्छा काम है।"

—✱—

रास्ता दिखाने वाला

पिछले चुनाव के दिनों की बात है। देहात में चुनाव मुहिम की आगाज़ करने के लिए एक गांव में जो रेलवे स्टेशन से तीन-चार मील दूर था, एक बड़े कांग्रेसी लीडर तशरीफ लाए। इस जलसा में जहां दूर-दूर से हज़ारों देहाती उनके दर्शन करने और लैकचर सुनने के लिए आए, वहां कई प्रैस रिपोर्टर इस जलसा की रिपोर्ट लेने के लिए और कई फोटोग्राफर तस्वीरें लेने के लिए और कई कालेज के प्रोफेसर और दूसरी सोसाइटियों के नेता और लीडर भी इस जलसा की रौनक बढ़ाने के लिए आए थे। प्रधान साहब तो पहले ही कार के द्वारा पहुंच गए थे लेकिन प्रेस रिपोर्टरों, फोटोग्राफरों और प्रोफैसरों और नेताओं की यह पार्टी पैदल ही स्टेशन की पुली से रास्ता पूछकर चल पड़े। दो मील के करीब जाने पर एक ऐसी जगह पहुंचे जहां से दो-तीन और रास्ते करीब के दूसरे गांव को जाते थे। सब हैरान होकर उस जगह ठहर गए और सोचने लगे कि किस रास्ते पर जाएं। जलसा

का वक्त नज़दीक आ रहा था और उनकी परेशानी दम-ब-दम बढ़ रही थी। प्रैस रिपोर्टरों की होशियारी, प्रोफैसरों और नेताओं की वाकफियत और जानकारी किसी काम नहीं आ रही थी। वो सब ऐसे हो रहे जैसे कुछ भी न जानते हों। इनमें एक-दो मज़ाकिया तबियत के भी थे। वो एक प्रोफैसर की जानिब मुंह करके बोले, जनाब कोई इलमी नुक्ता बयान कीजिए ताकि रास्ते का पता चले। प्रोफैसर साहब चुप थे। क्या कहते ? दूसरा एक नेता की तरफ देखकर हंसता हुआ बोला, आप तो सारे हिन्दुस्तानियों को राह दिखाने वाले हैं, ज़रा यहां भी रहनुमाई कीजिए। यह सुनकर नेता ऐसे खामोश हुए जैसे होंठ सी दिए गए हों। यह हंसी मज़ाक हो ही रहा था कि फोटोग्राफर की निगाह जो शुमाल की तरफ गई, फौरन ही खुशी भरे लहज़े में बोला कि देखो, वह लड़का जो सामने फ़िर रहा है, उसे बुलाते हैं, उसी से रास्ता का पता चल जाएगा। यह सुनते हो सबकी निगाह उधर जो गई तो सब बेतहाशा बोल उठे, भाई चरवाहे, इधर आना, इधर आना। चरवाहा उनकी बात पर दौड़ आया और बोला, क्या बात है बाबू जी ? प्रोफेसर साहब बोले, बेलाग्राम को कौन सा रास्ता जाता है ? चरवाहे ने अपनी

लकड़ी से इशारा करते हुए कहा, इस रास्ते पर चलते जाइए, बेलाग्राम आ जाएगा। प्रोफेसर साहब आगे हो लिए और साथियों से कहा, आओ मेरे पीछे, अभी बेला-ग्राम पहुंच जाते हैं। लेकिन कोई भी उनके साथ जाने को तैयार नहीं हुआ। उनके दिल में शक था कि कहीं आगे भी ऐसा न हो। सब बोले, प्रोफेसर साहब, यह जरनैली सड़क तो है नहीं कि जिस पर आंख बन्द करके चलने पर बेलाग्राम पहुंच जाएंगे। ऐसा ही बेढंगा रास्ता है जैसा कि पहले तय कर आए हैं। अगर इस निशानदेही पर एक मील चलकर भटक गए तो फिर क्या करेंगे ?

प्रोफेसर साहब बोले तो अब क्या करें ? वापस चलें। नेता साहब को दूर अंदेशी काम आई। बोले, वापस क्यों चलें ? इस चरवाहे को साथ ले चलते हैं। यह हमें बेला-ग्राम तक पहुंचा आएगा। यह तजवीज़ सबको पसन्द आई और उन्होंने खुशामदी लहजा में चरवाहे से विनय की कि हमें बेलाग्राम तक छोड़ आओ।

वह चरवाहा जो बिल्कुल अनपढ़ था, जिसके पैरों पर धूल जमी हुई थी, जिसका आधा जिस्म नंगा था, अपनी टेढ़ी सोटी कंधे पर रखकर इस पार्टी की रहनुमाई

करने लगा जिसमें एम.ए., बी.ए. और बड़े-बड़े ओहदादार शामिल थे। कुछ दूर जाने पर जब बेलाग्राम नज़र आने लगा तो चरवाहा बोला, यह सामने बेलाग्राम नज़र आता है मुझे रुखसत कीजिये क्योंकि मैंने अपनी भेड़ बकरियां संभालनी हैं। पार्टी ठीक वक्त पर बेलाग्राम पहुंच जाने पर बहुत खुश थी। सबने अहसानमंदी के ज़ेर असर चरवाहे को दो रुपए दिए और कहा कि इसकी मिठाई खा लेना। आज तुमने हमें सही रास्ता दिखा कर ठिकाने पहुंचा दिया।

स्कूल में जब उस्ताद विद्यार्थियों को सबक पढ़ा चुकता था तब सबक की पुख्तगी के लिए और उसका सही समझ लेना, ज़ेहन में बैठ गया है या नहीं; यह जानने के लिये लड़कों से सबक के बारे कई किसम के सवाल किया करता है जिससे उसे अंदाज़ा हो जाता है कि विद्यार्थी सबक की असली बात को पा गये हैं या नहीं। कुछ मुज़ायका न होगा अगर मैं भी आप से यह पूछ लूं,

1. पार्टी ने स्टेशन से उतरते ही सही रास्ते की खोज क्यों नहीं की ?
2. एक मील चल कर वो क्यों ठहर गये ?

3. वो क्यों घबरा गये ?

4. चरवाहे को देखकर क्यों उनके चेहरे चमक उठे ?

5. हर किस्म की वाकफियत रखते हुए भी उन्होंने क्यों एक अनपढ़ चरवाहे की रहनुमाई (लीडरी) कबूल की ?

6. उन्होने चरवाहे को क्यों इनाम दिया ?

आप इनके जवाब में कहेंगे,

1. पार्टी पहले यह समझती थी कि हमें किसी आदमी की रहनुमाई की जरूरत नहीं। हम सब कुछ जानते हैं।

2. एक मील चल कर वो इसलिए ठहर गये, वो नहीं जानते थे कि ठीक रास्ता कौन सा है।

3. वो इसलिए घबरा गये कि अगर ठीक वक्त पर न पहुंचे तो जहां समय और रुपया फजूल जाएगा, वहां मुफत की शर्मिन्दगी और होगी।

4. चरवाहे को देख कर उन्हें यह उम्मीद बंधी कि वह उन्हें सही रास्ते पर डाल देगा क्योंकि वह यहां का रहने वाला है और जानता है कि सही रास्ता कौन सा है।

5. चरवाहे की रहनुमाई उन्होंने इसलिये कबूल की कि

वो रास्ते से नावाकिफ थे और चरवाहा रास्ता जानने वाला था।

6. चरवाहे को इनाम इसलिए दिया कि उसने अपना काम छोड़ कर निष्काम तौर पर उनकी रहनुमाई की और उन्हें वक्त पर बेलाग्राम पहुंचा दिया। इसलिये उनका दिल अहसानमंदी के जज़बा से भर गया और वो दो रुपए देने को मजबूर हो गये।

आईए, इस छोटी सी कहानो और इन सवालों और जवाबों से हम भी अपनी जिन्दगी के एक अहम मसला को हल करें। जिन्दगी के दुनिया भर के फिलासफरों ने भिन्न-भिन्न किसम की बहुत हदायतें की हैं। मुझे तो ऊर्दू के एक शायर की यह दलील बहुत पसंद आई है,

मुसाफर है तू ए बाज़ारे इमकां के तमाशाई

यानि सच्ची दुनिया का तमाशा देखने वाले इन्सान, तू तो एक मुसाफर है। इस दुनिया में भी बहुत से मुसाफर हैं। रेलों में, मोटरों में, तांगों में, हवाई जहाज़ों में जाने वाले मुसाफरों को यह ज्ञान होता है कि वो कहां से आये हैं उन्होंने कहां जाना है। वो तयशुद्धा ठीक प्रोग्राम के मुताबक सफर करते हैं और

सफर के पश्चात अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाते हैं और खुशी मनाते हैं। आपने आज तक कोई ऐसा मुसाफर नहीं देखा होगा और न शायद आगे देखेंगे जिसको यह पता न हो कि वह कहां से आया है, किधर जा रहा है, उसके सफर का मकसद क्या है लेकिन इस दुनिया के मुसाफर की अजीब ही हालत है। यह करोड़ों बरसों से चल रहा है। मुतवातन चल रहा है पर इसे अब तक यह पता नहीं चला कि यह कहां से आया है और किधर जा रहा है, कहां पहुंचना है। उसकी इस गफलत से मुतासर शायर को कहना पड़ा,

तुझे मालूम है किस वास्ते इस बाग में आया
वो क्या मतलब था जिसके वास्ते सुलतान ने भिजवाया
न भूले से कोई दम भी इधर कुछ ध्यान फरमाया
कि मैं हूं कौन, जाता हूं किधर, किस तरफ से आया

इस गफलत का सबब

आपने पिछले दिनों लखनऊ में मिलने वाले भेड़ियाई बच्चे के हालात पढ़े होंगे। यह बच्चा किसी तरह भेड़िए के गार में पहुंच गया। भेड़िए ने अपने बच्चे की तरह उसकी पालना की। भेड़िए के साथ रहने से उसकी

आदतें और तौर तरीके भेड़िए जैसे हो गये। अब अगर आपसे पूछें कि इस इन्सान के बच्चे ने अपने आपको क्यों भुला दिया? क्यों इसे अपनी इन्सानी बरादरी और दुनिया की दूसरी बातों का पता नहीं लगा? तो आप कहेंगे कि इसे यह बातें बताने और समझाने वाला कोई नहीं मिला। इसका क्या ज़िक्र है। अगर एक साधारण बच्चे को उसके मां बाप से अलग करके ऐसे खाली मकान में, जहां और कोई न हो, रखें तो उसकी भी यही हालत होगी कि वह दुनिया और उसकी तमाम चीजों से नावाकिफ रहेगा। कुछ दिन पहले मैंने अखबार में पढ़ा कि एक अन्धा था। मुतवातन चीजों के छूने सूंघने और चखने से यह जान गया कि यह फलां चीज है। यकायक जब उसकी बिनाई कूद कर आई तो यह सब चीज़ें उसके सामने रखीं गईं लेकिन वह पहचान नहीं सका कि यह कौन-कौन सी चीज़ें हैं। जब उसको यह चीज़ें दिखला कर नाम बतलाए गये तब वह देख कर उनकी पहचान करने लगा। हमें भी जो कुछ आता है वो सब हमें मां बाप और उस्ताद के ज़रिये बतलाया और सिखलाया गया है। वो अगर हमें न बतलाते और हमारी रहनुमाई न करते तो यकीनन हम भी भड़ियाई बच्चे की तरह

दुनिया की हर किसम की वाकफियत से कोरा रहते। इससे मेरा मतलब आपको यह बतलाना है कि दुनिया में हर वक्त जानने और न जानने के तौर पर हम दूसरों से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं और सीखने से ही हम अपने कारोबार में बढ़ावा करते और पेशों में कामयाब होते हैं।

दो तरह का सीखना

यह तो आप जानते हैं कि हम आत्मा और शरीर या रूह और जिस्म दो चीज़ों का मजमूहा (Combination) हैं। न तो हम निरे जिस्म ही हैं और न निरी रूह हैं। दोनों के मिलाप से हमारा यह शरीर कायम है और यह भी जानते हैं कि शरीर स्थूल है और आत्मा सूक्ष्म है। इस वास्ते जो हुनर या इलम शरीर के लिए सीखा जाएगा, वह इलम या हुनर रूह के काम नहीं आ सकता और जो हुनर या इलम रूह के लिए है वह जिस्म के लिए लाभदायक नहीं पड़ सकता। मसलन खाने का इलम है। इससे हम यह तो जान सकते हैं कि कौन सा अनाज और कौन सा फल किस तरीके से पकाने और खाने से कितना लाभदायक हो सकता है या किस चीज में कितना गुण है

और कौन सी चीज़ किस मिकदार में नुकसान देने वाली है लेकिन इस वाकफियत से हम अपनी रूह को कोई लाभ नहीं पहुंचा सकते। एक आदमी इलम खुराक का माहर है लेकिन झूठ बोलता है, बेईमानी करता है। इससे क्या होगा ? उसका शरीर मजबूत, रूह कमजोर हो जाएगी। इसके उलट एक आदमी यह जानता है कि सच बोलना चाहिए, सबसे ईमानदारी का बर्ताव करना चाहिए पर उसको यह पता नहीं कि शरीर का पालन-पोषण किस ढंग से करना चाहिए। उसका नतीजा यही होगा कि उसकी आत्मा तो बलवान होगी लेकिन शरीर दुर्बल और कमजोर पड़ जाएगा।

इस वास्ते इस जीवन यात्रा को सफल बनाने के लिए हमें यह जानना जरूरी है कि शरीर और आत्मा किस प्रकार बलवान हों ? पहले हम बतला आए हैं कि दुनिया में कोई बात बगैर बतलाए और सिखलाए नहीं आती। यह बिल्कुल ठीक कायदा है। इस कायदा के तहत शरीर और आत्मा को बलवान बनाने की विद्या भी बगैर किसी दूसरे के बतलाने और सिखाए नहीं आ सकती।

शरीर सम्बन्धी विद्या

जिस्म को तन्दुरुस्त सेहतवर बनाए रखने के लिए हमें यह बात समझ में आ गई कि हमें डाक्टरों की रहनुमाई कबूल करनी चाहिए। उनके बतलाए हुए असूलों के मुताबिक जिन्दगी गुजारनी चाहिए। इस मतलब के लिए सरकार की तरफ से हिदायतें जारी होती रहती हैं और डाक्टरों की तरफ से नित नई दवाएं और इंजैक्शन इजाद होते रहते हैं। लेकिन आत्मा या रूह को इस बारे में बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया गया है।

रूहानी इलम की जरूरत

अक्सर हलकों से यह आवाज़ आती है कि रूहानी इलम की जरूरत ही क्या है ? काश ! उन्हें पता होता कि रूहानी ज्ञान का न होना ही उनकी तमाम ज़ेहनी, दिमागी और जिस्मानी परेशानियों और बीमारियों का सबब है। महापुरुषों ने गहरे मुतालया, तहकीकात और तजुर्बों के बाद निशचा किया है कि जिस्म में आधी मर्ज़ें तो सिरफ ज़ेहनी खराबी के बायस होती हैं। उनका इलाज भी मरीज़ की ज़ेहनी खराबी को दूर करने से हो

सकता है। दवायों से इलाज तो सिर्फ बिमारी की तेजी को रोकने के लिए किसी हद तक सहायक हो सकते हैं।

ज़ेहनी प्रेशानियों का सबब

मुसर्रत से हर इन्सान दूर क्यों है कोई समझाए
ये इतना आजकल सर रन्जूर क्यों है कोई समझाए
जो दावादार था इन्सानियत का आज तक
वो इन्सानियत से दूर क्यों हैं कोई समझाए

इन ज़ेहनी प्रेशानियों का सबब, जिससे हमारी जिन्दगी में एक अजीब प्रेशान करने वाली हलचल पैदा हो गई है, क्या है? आपको कोई सिवल सर्जन या आयुर्वैदिक का माहिर वैद्य नहीं बतलाएगा। इसको कोई रूहानी रहनुमा ही समझायेगा जिसने रूह और ज़ेहन का मुतालया किया है।

मौजूदा जमाने को इन्तहाई ज़ेहनी गिरावट का सबब यह है कि इन्सान की जरूरीआते जिन्दगी इस क़दर बढ़ चुकी हैं कि वह अपने दिन-ब-दिन कमज़ोर होने वाले जिस्म और दिमाग को अपनी हिम्मत और शक्ति से कहीं ज्यादा थका कर भी इनको पूरा नहीं कर पाता। तहज़ीब के नाम पर जो उलझनें समाजिक जिन्दगी में

बढ़ गई हैं उनका हल सोचते सोचते इन्सान की जिन्दगी की ताकत इस कदर कमजोर हो गई है कि मानसिक आनन्द की प्राप्ति इस ज़माने के इन्सान की हालत में नहीं हो सकती। फी ज़माना विज्ञान या साईंस की रौअ इस कदर तेज होती जा रही है कि इसकी तेजी के साथ-साथ कदम मिला कर चलना एक आदमी के लिए मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन हो गया है। रूहानी इलम से बेखबर इन्सान जब बेहद कोशिश और अनथक मेहनत और मुश्क्कत करने पर भूखा प्यासा और मायूस रह जाता है तो यह नाकामी उसके दिमागी तवाज़ुन को उल्ट पुल्ट कर देती है। उसकी प्रवृत्तियां इस उल्ट पुल्ट हालत में तिरछे टेढ़े रास्तों पर, जिसे हम चोरी, बेईमानी, बलैक मार्कीट या पागलपन का नाम दे देते हैं, के रास्तों पर चल पड़ती हैं। मुमकिन है कि आप को अपनी अच्छी माली हालत और बेहतरीन इलमी लयाकत काबलियत की बिना पर किसी ज़ेहनी खराबी या प्रेशानी की कोई अलामत नज़र न आती हो लेकिन यह नामुमकिन है कि कोई दुनियावी आदमी किसी सच्चे रहबर की रहनुमाई के बगैर दिमागी उलझनों से बचा हो। आप जो सोचते हैं कि आप में ज़ेहनी गिरावट की

कभी कोई अलामत नहीं पाई गई तो क्या आप मुझे दावा से कह सकते हैं कि आप कभो अपने किसो प्यारे रिश्तेदार अज़ीज़ दोस्त और अपने अच्छे साथी को जुदाई में बेहद उदास नहीं हुये ? दुनिया के कामों से ऊब कर कभी आप अकेला रहना पसंद नहीं करते ? कभी अपनी इच्छायों के पूरा न होने पर आपका मन सदा सारी दुनिया से नफरत नहीं करता और कभी आईंदा के फर्ज़ी खोफो डर के खतरात से बेचैन नहीं हुए ? कभी वहमों का शिकार होकर यह सोचने नहीं लगे कि दुनिया का चक्र मुझे ही कुचलने के लिए घूम रहा है ? कभी अपनी नाकामी से पैदा होने वाली नफरत हकारत से छुटकारा पाने के लिये फर्ज़ी तकब्बर गरूर करने के लिए मजबूर नहीं हुये ? आप कहेंगे इस जदो जहद की दुनिया में यह बातें तो संभव ही नहीं। हम कहते हैं यही तो मानसिक खराबी की जाहिरा या बैरूनी अलामतें हैं। जिनका अगरचे शुरू की हालत में हमारी जिन्दगी पर मुस्तकिल असर नहीं पड़ता मगर मुखालिफ हालात से मुतवातर फिक्र होने के बाद यही मानसिक विकार ऐसी खोफनाक सूरत अख्तयार कर लेते हैं कि आदमी की कुल शखसियत खतरे में पड़ जाती है।

जुबानी दावा करने वाले आपको कितने हो ऐसे आदमी मिल जाएंगे जो कहेंगे कि हमें रहनुमा या रास्ता दिखाने वाले की जरूरत नहीं है लेकिन तलाश करने पर भी सारी दुनिया में आपको एक भी ऐसा आदमी नहीं मिलेगा जिसने बगैर रहनुमा (गुरु) की रहनुमाई के काम क्रोध मोह अहंकार को जीत लिया हो। सबकी तो बात ही क्या है, किसी एक पर भी काबू पा लिया हो ? अगर ये बात न होती तो शास्त्र हरगिज़ यह न कहते,

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णु गुरु देवो महेश्वरा
गुरुः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार से पैदा होने वाली बीमारियों का इलाज आज तक कोई भी बड़े से बड़ा डाक्टर राज्य वैद्य शाही हकीम नहीं कर सका। एक लोभी के लोभ की प्रवृत्ति को एटामिक शक्ति भी नहीं बदल सकती और न ही सारी दुनिया की धन दौलत पा कर यह प्रवृत्ति शांत होती है। यह सब क्यों नाकाम हैं ? कबीर जी कहते हैं,

वस्तु कहीं ढूंढें कहीं कही बिध आवे हाथ
कहे कबीर तां पाईए जब भेदी लीजिए साथ

सूई खोई तो घर में है लेकिन तलाश सड़क पर हो रही है। क्या सूई मिल जाएगी ? कभी नहीं। इस तरह से सारी ज़ेहनी खराबियों प्रेशानियों का इलाज दुनिया के हकीम भी नहीं कर सकते। इनकी जड़ तो कोई तत्ववेता महापुरुष ही कर सकता है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

जान लेता है जो राज़े ज़िन्दगी
बस बजाता है वो साज़े ज़िन्दगी

अटूट आनन्द और लाजवाल ख़ुशी का जो खज़ाना काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की सारी तहों के नीचे छिपा हुआ है, गुरु इनको परे हटा कर मालामाल कर देता है। कबीर साहब फरमाते हैं,

जा खोजत ब्रह्मा थके सुर मुनी देवा
कहें कबीर सुन साधवा कर सत्गुर सेवा

ज़िन्दगी के सफर का मकसद

शुरू में मैंने आपसे कहा था कि ज़िन्दगी एक सिलसिलेवार सफर है लेकिन इस सफर की गर्ज़ और जरूरत क्या है ? यह कहां से आया और कहां जाएगा ? इसका उसे पता नहीं है। इसकी इस गफलत पर आंसू बहाता हुआ शायर कहता है,

गिरे अफलात से तह ते अस्सरा की गार में आए
उतर कर अर्श से इस दहरे न-हंझार में आए
अद्भम से जान बे हस्ती तलाशे यार में आए
हवाए गुल में हम इस वादी ए पुरखार में आए
न तुम समझो कि हम इस दुनिया के कारोबार में आए
गर्ज थी इश्क के सौदा की इस बाज़ार में आए

लेकिन प्रभु के इश्क का सौदा करने के बजाय नफसानी लजतों के जाल में उलझ कर ख्वाहिशों और हवासों के जहर भरे फल खाने में लग गए और माया के कीचड़ में फंसकर जिस्मानो, नफसानी और खुदगर्जी के चक्कर में पड़ गए।

आए थे करने को देखो सैर दुनिया कर चले
खाहिश और हसरतों से अपना दामन भर चले
अबदी जिन्दगी पाने को पाई थी हमने जिन्दगी
हम जिए ऐसे कि जोने के हाथों मर चले
रोते आए हंसते जाते तब तो थी मर्दानगी
हम तो लेकिन चश्मे तर आए थे चश्मे तर चले
इशरते फानी पर की कुर्बान इशरते दायमी
आबे कौसर से हलाहल का ये सौदा कर चले

ख्यालात की ये धारा जो नफसानी लज्जतों और जिस्मानी सुखों की निचली सतह की तरफ बह रही है, कैसे बदले ? दुनिया की इन मामूली और हकीर चीज़ों के हासिल करने की ख्वाहिश से मन किस तरह ऊबे ? मोह-माया की दलदल से इन्सान कैसे बचे ? यह सिर्फ कोई रूहानी महापुरुष ही बतला सकता है। माया के पुतले इस भेद को नहीं जान सकते।

रास्ता दिखाने वाले को साथ लीजिए

वो जिसके फैज़ से मंज़िल करीब हो जाये
उसी चिरागे राह गुजर की बात करो

ज़िन्दगी के इस लम्बे सफर में कभी बड़ी से बड़ी नाकामियों का सामना होता है। कभी बहुत बड़ी हारें माननी पड़ती हैं। कभी दोस्तों के धोखे फरेब से जान पर आ बनती है। कभी मुफलिसी और गरीबी में हरामो हलाल यानि जायज़-नाजायज़ की तमीज़ उठ जाती है। कभी बुरी संगति के बायस बड़े से बड़ा गुनाह हो जाता है। ऐसी लूट और तबाहकारी के वक्त रूह की पाकीज़गी और सफाई गुरु की कृपा से ही रह सकती है। अन्य कोई सहारा ऐसे वक्त में काम नहीं आता क्योंकि उसकी

पाकीज़ा ज़िन्दगी का नमूना हमारी नज़र के सामने होता है और उसके पवित्र विचारों को धारा हमारे मन में हैरान करने वाला इन्कलाब ला देती है। कबीर जो कहते हैं,

भेदी लीना साथ कर दीनी वस्तु दिखाए
कोटक जन्म का पन्थ था पल में बीता जाए

जब हम भेदी को या रास्ता दिखाने वाले को साथ लेते हैं तब हमारे पांव तबाही के रास्ते पर आगे बढ़ने से रुक जाते हैं और रहनुमा की रहनुमाई में सही सलामत मंज़िल तक पहुंच जाते हैं।

आप पूछेंगे कि ऐसा रहनुमा या रास्ता दिखाने वाला कहां मिलेगा जिसके उपदेश से हमें अपनी प्रवृत्तियों और खराबियों का हकीकी ज्ञान और हमारे मन की तमाम उलझी हुई समस्याओं का हल हो जाए। इस वक्त ऐसे रूहानी रहनुमा

संत बूड़ सिंह बानी प्रेम समाज

लुधियाना में मौजूद हैं जो अपने रूहानी और हकीकी ज्ञान से मादियत में फंसी हुई रूहों को रूहानियत का सही और सच्चा रास्ता दिखला रहे हैं। मैं तो आपको हमेशा रास्ते दिखाने वाला ही कहा करता हूं क्योंकि आजकल

के जो गुरु हैं वो हमारे इस दुनियावी सफर को आरामदेह बनाने की बजाय इस संसार को मिथ्या और असत् बना कर किसी और लोक में पहुंचा देने का दावा किया क़रते हैं और वो इस बात को बिल्कुल नज़र-अंदाज़ कर जाते हैं कि इन्सान की जेहनी हालत क्या है और उसका दिमागी रुझान किस तरफ है।

बीर की विशेषता

लेकिन बीर में यह विशेषता है कि वह आपको किसी और दुनिया में पहुंचा देने का लालच नहीं देता। वह दुनिया से नफरत नहीं करता बल्कि जो मनुष्य भी उनकी संगत में आए उसकी मानसिक अवस्था की जांच-पड़ताल करता है और फिर अपने रूहानी उपदेश से उन सब ज़ेहनी खतरों, वहमों और फिकरों का खातमा कर देता है कि जिनके बायस आदमी की ज़िन्दगी जीर्ण हुई होती है और वह इस ज़िन्दगी पर मौत को तरजीद देता है। उपदेश पाकर वो ही आदमी गरीबी में अमीरी के, बीमारी में सेहत के और मौत में अबदी ज़िन्दगी के नज़ारे देखता हुआ हमेशा रहने वाली और लाजवाल खुशी से हमकिनार हो जाता है।

दिन ढल गया मुसाफिर मंज़िल लगी ठिकाने

सुबह ज़िन्दगी की शाम करीब आ रही है लेकिन मंज़िल का पता नहीं तो क्या हुआ। आप घबराएं न। आप बीर की रहनुमाई कबूल कीजिए। वह आपको प्रेम मार्ग पर डाल देंगे जिससे आपका सफरे ज़िन्दगी आसान हो जाएगा और आप जल्दी मंज़िले मकसूद पर पहुंच जाएंगे।

—★—

अन्दर देखिये

आपने अक्सर देखा होगा कि किताबों और रसालों के शुरू में हर लेखक मज़मूनों की एक फरिस्त (सूची) बना देता है जिसको पढ़कर ग्राहक को पुस्तक के बारे में सरसरी वाकफियत हो जाती है। आज के तरक्की पसन्द लेखक फरिस्त की बजाय 'एक नज़र में मुलाहज़ा कीजिए' 'इसको पढ़ लीजिए' लिखने लगे हैं ताकि ग्राहक की नज़र खुद-ब-खुद इन सफों पर पड़े। पिछले दिनो में एक बुक स्टाल पर रसाला खरीदने गया। रसाला उठाया। उसके पहले वर्के पर लिखा था "अन्दर देखिये"। यह अनुमान मेरी नज़र में नया था। इस वास्ते मैनेजर ने भी मुझे कहा, साहब पहले यही पढ़िए। इससे आपको रसाला के उचित होने का पता लग जाएगा। मैं सोचने लगा कि इस अनुमान को तज़वीज़ करने वाले ने असली अर्थों में मनुष्य की एक अन्दरूनी कैफियत (हालत) को खूब उजागर किया है। हमेशा से इन्सान की ख्वाहिश छिपी हुई चीज़ को देखने, उसकी हकीकत को समझने और अन्दरूनी

राज़ों को जानने की रही है। एक महात्मा का वचन है,

देखे पर दिल नहीं अनदेखे पर हो

जो चीज़ नज़र के सामने है उस पर तबियत नहीं जमती। जो निगाह से ओझल हैं उसके लिए मचलती रहती है। पहाड़ों को गुफाओं और समुद्र की गहराईयों में जान हथेली पर रखकर इसीलिए तो इन्सान जाता है कि वह देखे, वहां क्या है? अपनी उम्र में इन्सान कितने ही रंग बदलता है। बचपन की खाहिश जवानी की उमंगों में खत्म हो जाती है। जवानी के जज़बात बुढ़ापे में कम हो जाते हैं। बुढ़ापे की हसरतें दिल में ही रह जाती हैं पर एक बात बचपन से लेकर मौत तक ज्यों की त्यों इन्सान में बनी रहती है और वह बात यही है कि पर्दे के पीछे क्या है? इसका उसे पता लगाना है। लाहौर का एक वाक्या है। तांगा पर एक बुर्कापोश नौजवान लड़की जा रही थी। एक नौजवान तांगे के पीछे हो लिया और फिल्मी गाने गुनगुनाने लगा। लड़की ने तांगे वाले को कहा कि वह तांगे को तेज कर दे। तांगे वाले ने घोड़े को जोर का कोड़ा मारा। घोड़ा पहले से भी ज्यादा तेज दौड़ने लगा। लड़का कब पीछा छोड़ने वाला था। उसके दिल में एक ही लग्न लगी हुई थी कि बुर्का में छिपे

खूबसूरत चेहरे को देखकर दिल की आग बुझाए। उसने भी साईकिल तेज कर दिया और ऊंचे लहजे में "गोरी आओ बसो मेरे मन में" गाने लगा। लड़की ने जब देखा कि ऐसे नौजवान पीछा नहीं छोड़ेगा, मुंह से बुर्का उतार दिया। लड़की का चेहरा देखते ही नौजवान बेहोश हो गया कि जिसकी हसीन आंखों से आंखें लड़ाने का वह मुश्ताक था, वह तो उसकी ही बहन थी।

मैं एक मेले में गया। एक तमाशागार ने एक बड़ा अच्छा सायबान लगा रखा था। अन्दर से नाचने वालों की घुंघरू की झनकार, बाजे की सुरीली तान बाहर घूमने वाले हर तमाशाई का मन मोह रही थी। जो भी पास से गुजरता वह अटक जाता। एक आना का टिकट था। 25-30 आदमियों से कम वो अन्दर नहीं जाने देते थे। हर तमाशाई के दिल में एक ही ख्वाहिश थी कि वह सबसे पहले अन्दर जाकर इस दिल फरेब नाच को देखे। पर्दे के पीछे क्या हो रहा है? अन्दर क्या है? यह जानने की और आदमियों की मानिद मेरी भी ख्वाहिश बनी रहती है। मैंने भी टिकट लिया। नम्बर आने पर अन्दर गया तो वहां देखा कि चार-पांच दस-दस साल के लड़के नाच रहे हैं। एक तबलची है और एक हारमोनियम

मास्टर। जिस चीज़ को देखने के लिए एक मिनट एक दिन के बराबर बीत रहा था, अब वहां एक मिनट बैठने को भी दिल न माना।

मेरे कमरे में एक टाइम पीस था। एक दिन मैं बाहर चला गया। अचानक वापस आने पर देखा कि लड़कों ने उसे खोल रखा है। मैंने पूछा, इसे क्यों खोल दिया। बोले कि हम यह देखना चाहते थे कि इसके अन्दर क्या है, ? टिक-टिक कौन करता है ? गर्ज़ कि हर मनुष्य के अन्दर यह कुदरती खाहिश पोशीदा है कि वह हर उस चीज़ को जो उसके लिए पर्दे में है, देखे। जब तक वह इस चीज़ को देख नहीं लेता, मन को शान्ति नहीं आती और न उसकी तबियत की बेकरारी जाती है।

अन्दर और बाहर

दुनिया में हर जगह तज़ाद पाया जाता है। इसलिए संस्कृत में दुनिया को रोंदे संसार कहते हैं। यहां स्त्री-पुरुष, सुख-दुख, गर्मी-सर्दी, भूख-प्यास, रंज-खुशी, ऊंच-नीच, ज्ञान-अज्ञान सबका जोड़ा है। सब दो-दो हैं। कहीं कोई चीज़ एक नहीं। जिस तरह और सब चीज़ों का

जोड़ा है, इस तरह से अन्दर और बाहर का भी जोड़ा है। हर एक चीज़ अन्दर और बाहर दो पहलू रखती है।

इन्सान की अजीब फितरत

अन्दर और बाहर देखने के बारे में इन्सान की फितरत (Nature) बड़ी अजीब वाक्या हुई है। जहां वह दुनिया की हर चीज़ देखने का खाहिशमन्द है, वहां वह अपने आप को देखने, परखने, सोचने और समझने में बिल्कुल उलट रवईया अख्तयार करता है। वह अपने आप को देखने का कभी ख्याल भी मन में नहीं लाता। समुद्र की गहराईयों और जमीन की अन्दरूनी तहों को देखने के लिए तो वह बेकरार रहता है लेकिन अपने मन की गहराईयों और दिल की चढ़ाईयों में जाने का कभी ध्यान भी नहीं आता।

मैं एक जलसा में गया। वहां एक मशहूर विद्वान लैक्चर दे रहे थे। अपने लैक्चर में वह सन्त मत का मज़ाक उड़ाते हुए बोले कि देखो, यह लोग कानों में उंगलियां डालकर और आंखें मूंदकर बैठ जाते हैं और कहते हैं कि इस तरह उन्हें अन्दर के सुरीले गाने सुनाई देंगे। अन्दर

क्या है ? दिल की धड़कन हैं, खून की गर्दिश है, लहू, हड्डी और मांस है। दिल की खटखट को सुनकर कहते हैं यह अनहद शब्द की धुन है। यह वहम नहीं तो क्या है। बाजे तो बाहर बजते हैं। आंख, कान क्यों मूँदते हो ? जैसे सुरीले राग सुनने हैं, बाहर सुन लो। उन्होंने ऐसा क्यों कहा ? इसलिए न कि इन उपदेशक साहब ने कभी अपने अन्दर झांककर नहीं देखा। कभी अपने मन की गहराईयों में गोता नहीं लगाया। कभी अपने दिल की चौड़ाईयों में गुम नहीं हुए। यह तो बाहर घूमे हैं। बाहर की दुनिया देखी है। जो कुछ कहेंगे बाहर की कहेंगे और बाहर ही देखने, घूमने-फिरने की शिक्षा देंगे। इन्हें क्या पता,

दिल दरिया समुन्द्रों डूँगे कोण दिलां दियां जाणे
विचे बेड़ी विचे चप्पू विचे वंझ मुहाणे
चोदह तपक बंदे दे अन्दर तम्बू वांगण ताणे
जिहड़ा सार दिलां दीयां जाणे ओह हरदम खुशियां माणे

बाहर देखने वाला

प्रभु ने मनुष्य की रचना बड़े निराले ढंग से की है। सब कुछ अन्दर छिपाकर मुंह बाहर को तरफ कर दिया।

देख लीजिए, जितनी भी इन्द्रियां हैं सबका रुख बाहर को तरफ है। आंख, नाक, कान, मुंह, जुबान पांच ज्ञान इंद्रियां हैं। इन सबका झुकाव बाहर की तरफ है। इन सबको तृप्ति बाहर के विषय विकारों से होती है। इसलिए यह इन्सान को बाहर ही लिए फिरती हैं। आंख की इन्द्रि खूबसूरती की तरफ ले जाती है। इन्सान अच्छी चीज़ों के देखने के लिए पहाड़ों, गुफाओं और समुद्रों तक जाता है। घर बाहर को सजाता है। हार श्रृंगार लगाता है। कान की इन्द्रि अच्छे से राग सुनना चाहती है। यह गवईयों के पीछे ही दौड़ा फिरता है। सिनेमा देखता है, ड्रामे देखता है। नाक अच्छी-अच्छी खुशबुएं सूंघना चाहता है। इस लिए गुलाब, चमेली, मोतिया, मोलसरी के इत्र छिड़कता है। ज़ुबान भिन्न-भिन्न किस्म के खाने खाना चाहती है। मुंह बातें करना चाहता है गर्ज़े कि इन्द्रियां अपने-अपने स्वादों के लिए इन्सान को हर वक्त बाहर की तरफ दौड़ाती हैं। इन इन्द्रियों के सुख के लिए ही इन्सान बड़े-बड़े प्लान बनाता है। यह बड़े-बड़े मकान, बाग-बगीचे, रेडियो और सिनेमा घर, रेलें और मोटरें इन्द्रियों के सुख के लिए ही बनाई गई हैं।

बाहर क्या है ?

बाहर मुख होने की वजह से बाहरी सुख की तलाश में घूमने वाला इन्सान इस असलियत से अब तक बेपरवाह है। बाहर जो कुछ है वो इसके अन्दर का ही जहूर है। अगर इसके अन्दर कुछ न हो तो बाहर भी कुछ न होगा। बड़ का बीज देखने में बहुत छोटा और हकीर मालूम देता है लेकिन उसके अन्दर तना, टहनियां, शाखाएं, पत्ते और फल सब मौजूद होते हैं। अगर उसके अन्दर न हों तो फिर बाहर इतना बड़ा वृक्ष कैसे खड़ा हो जाएगा ? गीता में लिखा है, जो है उसका कभी नाश नहीं होता और जो नहीं है वो कभी वजूद में नहीं आता।

दुनिया में जितने राग रागनियां हैं, जितने इलम और हिसाब हैं, जितनी सन्नतें (Industries) और कारिगरियां हैं, जितनी इजादें और दरियाफतें हैं वो सब इन्सान के अन्दर हैं। अगर वो इन्सान के अन्दर न होतीं तो प्रकट होकर बाहर न आतीं लेकिन इन्सान इस सच्चाई से गुमराह हुआ बड़ी ही हीन अवस्था में अपने ही ताने हुए जाल में फंसकर और अपने आप से बेखबर होकर हैरान और परेशान बाहर की दौड़ धूप में सिर मार रहा है।

कस्तूरिया मृग

कस्तूरी कुंडल बसे, मृग ढूंढे बन मांहि
ऐसे घट में पियो है, दुनिया जाने नांहि

तातार देश का हिरण जिसकी नाभि में कस्तूरी होती है, कस्तूरी की सुगन्ध अपने अन्दर से उठने पर उसकी तलाश में भटकता फिरता है। झाड़ियों और पौधों में सूंघता है। सुगन्ध किधर से आती है? अज्ञानता से वह इतना नहीं समझ पाता कि सुगन्ध तो उसके अपने अन्दर से ही आती है क्योंकि वह बाहरमुख है, भूल के चक्र में पड़ा हुआ है। दुनिया में जब एक बार भूल और गलती शुरू हो जाए तो वह बढ़ती ही चली जाती है। इसी तरह वह भूला हुआ हिरण कस्तूरी की खोज में भटक-भटक कर जब उसे नहीं पाता तो सिर पटक-पटक कर मर जाता है। इन्सान भी इसी तरह अपने अन्दर न देखकर इन्द्रियों के पीछे लगा सुख को बाहर तलाश करता फिरता है। कहीं बाहर हो तो मिले। जब इन्सान के अपने अन्दर के सुख की छाया बाहर की दुनिया पर पड़ती है तब यह दुनिया उसे सुख रूप प्रतीत होने लगती है।

फ़र्ज़ी सुख

दुनिया की ज़ाहिरी फरेबियों में मनुष्य को जो सुख प्रतीत होता है, वह दरअसल उन चीज़ों में नहीं है। वह तो इन्सान के अपने अन्दर का अक्स ही है जो उन चीज़ों में नज़र आ रहा है। एक पिंजरा था जिसके इर्द-गिर्द चारों तरफ शीशे लगे हुए थे। पिंजरे के मरकज़ में खिला हुआ गुलाब का फूल रखा था। इस पिंजरे में एक बुलबुल भी बन्द थी। बुलबुल फूल का साया हर तरफ देखती थी। शीशों में गुलाब के फूल को देखकर उनको पकड़ने के लिए वह बार-बार चोंच मारती थी लेकिन हर बार जख्मी होकर पीछे हट जाती थी। वह थक कर चूर हो गई तो उसने शीशों की तरफ से मुंह हटा लिया और पिंजरे के मरकज़ में गुलाब का फूल पाया। इसी तरह बुलबुल की तरह हम भी दुनिया की बाहरी चीज़ों में खुशी और शान्ति ढूंढ़ते हैं और हर बार सिर पटक-पटक कर निराश हो जाते हैं।

ईश्वरीय सुख की तलाश में

अगर हम दुनिया भर के लोगों को एक जगह इकट्ठे करें और यह पूछें कि आपको दुनिया में किस

चीज़ की तलाश है तो बहुत से लोग तो यह कहेंगे, हमें सुख की जरूरत है हमें ज़िन्दगी में कोई दुख न आए, किसी किस्म की कमी या मोहताजी न देखनी पड़े, किसी तरह का भी गम या फिक्र न हो, सदा चैन की बांसुरी बजती रहे। कुछ लोग यह कहेंगे कि हमें भगवान के दर्शन हो जाएं और हम जन्म-मरण के फंदे से छूट जाएं।

जो लोग सुख चाहते हैं, उनमें से बहुत तो काफी गिनती में चीज़ों को जमा करने से सुख मानते हैं। वो समझते हैं कि जब हर चीज़ काफी मिकदार में हमारे पास जमा हो गई तो फिर हमें कोई दुख न होगा। यह लोग ज्यों-ज्यों चीज़ें और दूसरी किस्म का माल जमा करते जाते हैं, उनकी हिरस भी साथ-साथ बढ़ती जाती है। जैसे समुद्र का खारा पानी जितना ज्यादा कोई आदमी पीता है उतनी उसकी प्यास बढ़ती है। इसी तरह लालची आदमी को कहीं भी सबर नहीं आता। लालच के साथ-साथ खौफ भी आ घेरता है कि यह इकट्ठा हुआ माल चोर न ले जाएं, हकूमत न जब्त कर ले, तबाह न हो जाए। गर्ज़ कि ऐसे आदमी कभी मानसिक तवाज़ुन हासिल नहीं कर सकते। बाज़ आदमी धन के जमा करने

में सुख मानते हैं। उनका ख्याल है जितना ज्यादा धन होगा उतना ही आदमी सुखी होगा। किसी कदर यह बात ठीक है कि धन दुनिया में बहुत ताकत रखता है। इससे हम खुराक; पनाह और खूबसूरती खरीद सकते हैं लेकिन इससे आत्मा को संतुष्टि हासिल नहीं होती। दुनिया में अगर दुखी लोगों की गिनती की जाए तो ज्यादातर धनवानों के नाम इस लिस्ट में आएंगे। धन से आत्मिक आनन्द, हमेशा की खुशी किसी को भी कभी हासिल नहीं हुई। अपनी अखलाकी और रूहानी शक्तियों की सहायता से आदमी जिस मर्तबा पर पहुंच चुका है वहां धनवान आज तक नहीं पहुंच सके। अगर रुपये से सुख मिलता तो राजे-महाराजे तख्त पर लात मारकर फकीर न बनते।

अक्सर लोग सन्तान में सुख मानते हैं। उनका विचार है जितनी ज्यादा औलाद होगी उतना ही ज्यादा इन्सान सुखी होगा लेकिन वो यह नहीं समझते कि जिसको सुख समझते हैं वह दुख से भरा हुआ है। महात्मा निश्चल दास 'विशाल सागर' में लिखते हैं, "औलाद सदा दुख रूप है, इससे हमेशा ही तकलीफ पहुंचती है।" विशाखा नाम की स्त्री अपने पोते की मृत्यु पर रोती हुई

महात्मा बुद्ध के पास आई और प्रार्थना की, महाराज, मेरे पोते को जिन्दा कर दो। महात्मा ने पूछा, माता जी, क्या तू खुश होगी कि अगर तुम्हारे यहां इतने पोते-पोतियां हो जाएं जितने तुम्हारे गांव में लोग रहते हैं। बुढ़िया ने खुशी-खुशी जवाब दिया, हां महाराज।

लेकिन तुम्हारे गांव में रोज़ कितने आदमी मरते हैं ? महात्मा ने धीरे स्वर में पूछा। बुढ़िया बोली, कम से कम एक रोज़ मरता है। महात्मा बुद्ध ने कहा, तो इसका मतलब यह है कि तुम सदा मातम ही करती रहोगी।

सुख कहां है ?

अगर दुनिया के साज़ो समान धन दौलत और आल औलाद में सुख नहीं तो फिर सुख कहां है ? अमरीका का मश्हूर लेखक ऐमरसन लिखता है, जिस आदमी को अन्दरूनी दौलत नसीब है, वह हर हालत में खुश और सन्तुष्ट रहता है। ऐसा आदमी एक खूबसूरत बाग के अन्दर आलीशान महल में रहता हो या टूटी फूटी झोंपड़ी के अन्दर रिहायश रखता हो, उसके लिए दोनों बराबर हैं। वह हमेशा रूहानी नग्मा सुनता रहता है।

दूसरे लोग जो ईश्वर की तलाश में जंगलों में घूमते फिरते हैं या पहाड़ों की गुफा में छिपे पड़े हैं या मक्का मदीना काशी परयाग जाते हैं या हर वक्त वेद गीता कुरान और ग्रन्थ साहब के पाठ में लगे रहते हैं उनसे पूछो कि ईश्वर मिला ? कहेंगे, अभी तक तो नहीं। पिछले दिनों एक मंदिर के पुजारी से मिलने गया। वह बोले, 70 साल की उम्र हो गई, निष्ठक ब्रह्मचारी हूं। ठाकुर जी की कृपा से चारो धाम कर आया हूं। पूजा पाठ भजन कीर्तन में उम्र बिता दी। इतने में एक आदमी अंदर आया। वह दरवाज़े पर जूता उतारना भूल गया। पहला पांव अंदर पड़ा ही था कि पुजारी साहब गुस्सा से पागल हो उठे। लगे गालियां देने, अरे राक्षस, ठाकुर जी के मंदिर में जूता ले आया, तेरा सत्यानास हो जाये। भक्त सहम गया और फ़ौरन पांव पीछे हटा लिया। मैंने कहा, पुजारी जी महाराज, इतनी उम्र होने पर, इतना त्याग होने पर, इस कदर तीर्थ यात्रा, पूजा पाठ करने पर भी क्रोध नहीं गया, ठाकुर जी के दर्शन नहीं हुए। इसी तरह एक ग्रंथी से बातचीत के दौरान मैंने पूछा, आपने अब तक दरबार साहब के कितने पाठ किये तो फखर से बोले, तीस साल पाठ करते हो गये। पांच सौ

के करीब कर लिये होंगे। मैंने पूछा, कुछ नज़र आया। बोले, अभी तक तो कुछ नहीं देखा। और कुछ पाया? बोले पाठों को बदौलत एक लड़का बी. ए. तक पढ़ा लिया और शहर में एक मकान खरीद लिया है। बड़े बूढ़े कहते हैं कि वेद और कुरान के पढ़ने, दरबार साहब के शब्द उचारने और तीर्थों के मनाने से ईश्वर के दर्शन हो जाते हैं। आप यहां के पण्डितों मोलवियों और ग्रंथियों को इकट्ठा करके पूछें कि प्रभु के दर्शन हो गये। सबका एक ही जवाब होगा, नहीं।

दर्शन क्यों नहीं हुये? इस वास्ते कि भगवान तीर्थों वगैरह में नहीं बैठे। वह जिस जगह हैं वहां जाओ, मिल जाएंगे। गुरु तेग बहादुर जी फरमाते हैं,

काहे रे बन खोजन जाई। सर्व निवासी सदा अलेपा।
तो ही संग समाई। पुहप मध ज्यों बास बसत है
मुकर माहें जैसे छाई। तैसे ही हर बसे निरन्तर
घट खोजयो भाई। बाहर भीतर एको जानयो।
एह गुर ज्ञान बताई। जन नानक बिन आपा चीनें
मिटे न भरम की काई।

यानि जो फूलों में खुशबू बन कर, चंद्रमा में रूपैली चांदनी बन कर बसता है वह ही तेरे अन्दर तेरे मन में

छुपा हुआ है। जंगलों को खाक मत छान। अंदर देख। इस समय के परम संत शहनशाह रूहानियत महात्मा बीर फरमाते हैं,

से साबती नाल जद नजर मारी,
साडे नाल ही साडा यार दिसया
जिहड़ी चीज लई गुंझलां लख पईयां,
सहज नाल ही ओ असरार दिसया,
सारे तोखले चित दे दूर होए,
चारे तरफ संसार सरशार दिसया
नवें रंग दी चड़ गई खूब रंगण,
बीरा जदों दा साडा दिलदार दिसया
(विचार सफा 4)

"ज्ञान दर्पण' सफा 10 में फरमाते हैं,

गैन गौर दे नाल जे ज्ञात पाईये,
अन्तर आतमा विच दीदार होवे
ऐंवे विच अज्ञानता डोलदे ने,
असल विच न आपणी सार होवे
मृग वांग कस्तूरियां बाहर लभण,
भटक भटक के चित खुआर होवे
घट विच प्रकाश हो जांवदा ए,
जेकर जरा भी बीर विचार होवे

तीर्थों मंदिरों मस्जिदों वगैरह में भगवान की तलाश में मारे मारे फिरने वालों की बेचारगी का अज़्हार करते हुए तहरीर फरमाते हैं,

मेरे ख्याल विच ए दुनियां,
वहमी हो के गलतियां खा रही है
जिहनूं आपणे अन्दरों ढूंढणा सी,
ओहनूं होर किते ढूंढण जा रही है
जिहड़ा सारेयां दे अन्दर वसदा है,
ओहनूं आसमां उते बिठा रही है
बीरा बेनयाज़ नूं भुल के ते,
उरे परे ही ठोकरां खा रही है

ईश्वर और सुख दोनों इन्सान के अन्दर हैं

ढूंढता फिरता था मैं जिनको जमीनों आसमानों में
मकीं निकले वो मेरे दिल के तहखानों में

इन्सान जिस भगवान की तलाश में है और जिस सुख की जुस्तजू में दर-ब-दर मारा मारा फिरता है वह तो इसके अंदर ही मौजूद है। तीसरी पातशाही गुरु अमरदास जी का वचन है,

इस गुफा में अखुट भण्डारा
तिस विच वसे हर अलख अपारा

यानि यह जो जिस्म है यह तो रूह के रहने की गुफा है। इसमें खत्म न होने वाले खजाने हैं। सारा ब्राह्माण्ड इसके अंदर है। दूसरी जगह फरमाते हैं,

इस काया अंदर खंड प्रथमी हाट पटन बाजार
काया अंदर ब्रह्मा बिशन महेशा सभापत जत संसारा

यानि खज़ाने ही नहीं, खुद भगवान भी इसके अंदर ही हैं।

महात्मा बीर फरमाते हैं,

खुद ही जदों ध्यान ला के,
सूरत आपणी ज़रा विचार डिठी
अजब रंग दे नक्श निगार पाए,
अजब तरह दी मौज बहार डिठी
मस्त हो के हुक्म जो देंवदी सी,
अजब रंग दे विच सरकार डिठी
जिधर चांवदी तार हिलांवदो ओह,
ओहदे हथ विच सगल दी तार डिठी

नज़र क्यों नहीं आता ?

जैसा कि मैंने पहले एक उपदेशक महाशय का जिक्र

किया है इसी तरह से और लोग भी कहते हैं कि अगर इन्सान के अंदर करोड़ों रोशनियां जग रही हैं, करोड़ों मीठी से मीठा राग रागनियां हो रही हैं, आहला से आहला सामान मौजूद है तो फिर वो नजर क्यों नहीं आता। अस्पताल में रोज़ाना मुर्दों की चीर फाड़ की जाती है। किसी डाकटर को आज तक किसी लाश में हड्डी चर्बी गोशत लहू के सिवाय एक पाई की चीज़ भी नहीं मिली। बज़ाहर सवाल ठीक है लेकिन मैं आपकी तवज्जा एक फारसी की कहावत की तरफ ले जाना चाहता हूं। कहावत है,

हर जा कि गंज अस्त आं जा कि मार अस्त

जिस जगह खज़ाना होता है वहां सांप मौजूद रहता है। खज़ाना के लेने के लिए सांप को जरूर मारना पड़ता है। इस तरह से सब कुछ इन्सान के अंदर है मगर अंदर जाने की जगह पर मन रूपी सांप फुंकारें मार रहा है। यह अंदर दाखल नहीं होने देता। एक और ख्याल रखना चाहिये। जो कुछ इन्सान के अंदर है वो मैटीरीयल (Material) यानि जड़ नहीं है और न गोशत पोशत हड्डियों में छुपा हुआ है बल्कि वह मन के पर्दे के पीछे है। जब मन काबू हो जाएगा तब अंदर ही खण्ड

ब्रह्मांड मिल जाएंगे। परम संत बीर फरमाते हैं,

बाहर दे बद किवाड़ करके,
चंगी तरह ढो दे झीतां बारीयां नूं
बूहा खोल दे अंदरों बंद जिहड़ा,
ला लै विच आकाश उडारियां नूं
पाणी नाम दे नाल तूं धो कंधां,
कर दे साफ गलाज़तां सारीयां नूं
करके आपणा आप सफा बीबा,
फिर देख हकीकतां भारीयां नूं,

एक दूसरी जगह फरमाते हैं,

दिल दर्पण को साफ़ कर जब हम डिठा मीत
घट ही बीच निहारया बीर नाथ जगदीश
(शलोक बीर)

अन्दर कैसे जायें ?

अब सवाल पैदा होता है कि अंदर कैसे जाएं ? महापुरुष फरमाते हैं, कुन्जी गुरु के हाथ है जब तक गुरु कुन्जी न लगाये और मन को बस करने के साधन न बतलाये, तब तक अंदर जाने का रास्ता नहीं खुलता।

जिस तरह ज्ञान की ताक्त हर आदमी के अंदर छिपी हुई है लेकिन जब तक वह स्कूल यानि शिक्षा के अंदर दाखल नहीं होता, उस्ताद यानि गुरु से सबक नहीं पढ़ता और दर्जावार जमातों में तरक्की नहीं पाता, तब तक ज्ञान की ताक्त बेदार नहीं होती। इस तरह जब तक किसी संत सतगुरु की मेहर नहीं होती तब तक अंदर का पर्दा नहीं खुलता और मालिक के दर्शन नहीं होते। परम संत बीर फरमाते हैं,

वाहेगुरु कहण दा मजा तद ही,
जेकर गुरु तों सीस घुमा छड्डे
सब कुछ अपना आप कुर्बान करके,
सुरती गुरु दे चरनां विच ला छड्डे
गुरु बिना न दिसे कोई होर बिलकुल,
एना गुरु नाल प्रेम वधा छड्डे
बीरा गुरु दा रूप हो जाईदा ए,
जेकर गुरु नाल दोस्ती ला छड्डे

महाराज बीर की शरण पकड़िये

अगर आपको अपने अंदर के रूहानी नज़ारों को

देखने का शौक है, अगर आपको मालक के दर्शनों की चाह है और न खत्म होने वाले आनन्द को खाहिश है तो संत बाबा बीर जी के रूहानी सत्संगों में शामिल हों और उनके रूहानी उपदेश को हासल करें। आपके सब भ्रम मिट जाएंगे और आप अपनी अन्दरूनी दौलत को पाकर हमेशा के लिए मालामाल हो जाएंगे।

—★—

दो रास्ते

तंग दरवाजे में दाखिल हो क्योंकि वह दरवाज़ा चोड़ा और रास्ता कुशादा है यानि खुला है जो हलाकत को पहुंचाता है और उसमें दाखिल होने वाले बहुत हैं क्योंकि वह दरवाज़ा तंग है और वह रास्ता सिकुड़ा है जो ज़िन्दगी को पहुंचाता है और इसके पाने वाले बहुत थोड़े हैं। (मिती बाब 7 आयत 13-14)

प्यारे भाईयो और सत्संगियो, प्रेम अवतार श्री बीर जी की अपार कृपा से मुझे आपके संग बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनकी तालीम से जो फैज़ मैंने उठाया है, यह उसी की बरकत है।

झुक झुक के देखता हूं तूबा को अर्श पर मैं
कि इस कदर मिली है कुछ बुलन्द नज़र मुझे

इसलिए कुछ कहने से पहले मेरे लिए उनका धन्यवाद करना जरूरी है। यह आयत जो अभी-अभी मैंने आपके सामने पढ़ी है अंजील से ली गई है। अंजील का नया

अहदनामा ईसाईयों की एक अलहामी किताब है। जो इज्जत हमारे दिलों में वेद, श्री ग्रंथ साहब और श्रीमद्-भागवत गीता की है वो ही इज्जत और पवित्रता ईसाईयों के दिलों में अंजील की है। मेरे इस आयत को पढ़ने से आपके दिलों में यह शंका जरूर उठी होगी कि इस हिन्दुओं और सिक्खों के संगठन में, जहां एक भी ईसाई नहीं, मैंने यह आयत क्यों पढ़ी और इससे मैंने अपने लैक्चर का आगाज़ क्यों किया ? क्या हमारे धर्म ग्रंथों का कोई शब्द और श्लोक ऐंसा नहीं था जो यहां के लिए मौज़ूं होता।

भाईयो, आपका यह एतराज़ बज़ा है लेकिन उस हालत में जब यह संगठन हिन्दु समाज के लिए लगाया जाता या सिक्ख भाईयों के लिए दीवान सजता। यह तो प्रेम समाज का सत्संग है। अगर इसमें ईसाई या मुसलमान काफी तादाद में शामिल नहीं हुए तो यह उनकी तंगनज़री और तंगदिली का मुज़ाहरा है लेकिन प्रेम समाज का हृदय इसके बानी की तरह खुला और वसीह है और मैं भी इसी समाज का मैम्बर हूं कि जिसमें शामिल होकर मज़हब के तंग दायरे से निकलकर आज़ाद ख्याली और रोशन दिमागी की फज़ा में इन्सान परवाज़

करता है। मज़हबी लोगों में अमल तो कम होता है लेकिन ज़ुबानी जमा खर्च और कुफर के फतवे लगाने में वो बहुत होशियार होते हैं। प्रेम समाज अपनी आलमगीर (International) रूहानियत के प्रचार के सिलसिले में सच्चाई को किसी एक खास कौम या फिरके तक सीमित नहीं समझता। वो मानता है कि जिस तरह भगवान का बनाया हुआ सूरज इंग्लैंड, अमेरिका, रूस, जर्मनी, चीन, जापान, अरब, ईरान, हिन्दुस्तान, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, खुशकी, समुद्र, जंगल, पहाड़, झील, तालाब, नदी, नाले सब पर एक तरह रोशन होता है और इसी रोशनी के फैलाव में किसी खास अकीदे के साथ, किसी खास मुल्क में रहने वाले और किसी खास कौम में पैदा होने की वजह से कमी-बेशी नहीं होती। इस तरह से भगवान का सत ज्ञान भी किसी खास नस्ल, किसी खास फिरके और किसी खास जमायत या किसी खास मुल्क या बर्रे आज़म तक सीमित नहीं। ज्ञान का सूरज भी इसी सूरज की मानिंद हमेशा से सब को रोशनी दे रहा है और देता रहेगा। जिस तरह कई परिन्दे कीड़े-मकोड़े और आंख के मर्ज़ों में मुबतला आदमी इसकी रोशनी से महरूम रहते हैं, इसी तरह अज्ञान और अविद्या में फंसे हुए इन्सान

भी इस ज्ञान रूप सूर्य की रोशनी से वंचित रहते हैं और यही समझते रहते हैं कि जो कुछ हमने जान लिया है वो दरुस्त और सही है बाकी सब गलत है। यह निहायत ही तंग नज़रिया है और इन्सानी ज़ेहन की इन्तहाई गिरावट है।

प्रेम समाज तो सबसे प्रेम करता और सब में एक ही ईश्वर के नूर को चमकता देखता है। इसके दिल में दूई नफरत कदूरत बुग्ज ताअसुब नाम को भी नहीं रहता। बीर जी का वचन है,

प्रेम समाजी किसी से मूल न रखे बैर
प्रेम समाजी सगल की बीरा मांगे खैर
प्रेम समाजी बीर वो सब से करे प्यार
जात पात के फर्क को बिलकुल मेटे यार
प्रेम समाजी होय के सब से प्रेम बढ़ा
सबसे प्रेम बढ़ाय के बीरा प्रीतम पा
बीरा तेरी जिन्दगी का ये ही चाहिये नेम
सच्चा प्रेमी होय के सबसे कर तू प्रेम
न हिन्दु से दोस्ती न मुस्लिम से बैर
प्रेम समाजी सगल की बीरा मांगे खैर

इन विचारों के ज़ेर असर मैंने अंजील की यह आयत पढ़ी है। अब आशा है जो शंका आपके दिल में इस आयत के पढ़ने वक्त पैदा हुई थी, दूर हो गई होगी और आप अब दिलचस्पी लेंगे। आपके सामने कभी आईंदा सब धर्मों पर खुली तकरीर करूंगा।

हां, अब प्रेम से सुनिये! यह आयत हमें बतलाती है कि दुनिया में जीव की यात्रा के दो रास्ते हैं। बा एन ही जैसे यहां से जालन्धर जाने के कई रास्ते हैं। एक रेल का रास्ता है। आप टिकट लेते हैं। गाड़ी में स्वार हो जाते हैं। भिन्न-भिन्न स्टेशनों पर ठहरती हुई यह गाड़ी आपको जालन्धर पहुंचा देती है। दूसरे मोटर कार का रास्ता है जो पक्की सड़क है। इसमें गर्दो गुबार भी कपड़ों पर पड़ जाता है और पट्रोल की बदबू भी ब्रदाश्त करनी पड़ती है। तीसरा रास्ता पैदल सफर का है। इसमें चोरों डाकूओं का भी खतरा है। जंगली जानवरों का भी डर है। सर्दी और गर्मी का बचाव भी जरूरी है। इन तीनों रास्तों में पहला बहुत कम तकलीफ देने वाला है। दूसरा इससे ज्यादा और तीसरा दोनों से ज्यादा तकलीफ देने वाला है। इस तरह से यह जीव भी शरीर के रथ पर स्वार होकर भगवान तक पहुंचने के

लिए सफर कर रहा है। इस अलंकार को उपनिष्द इस तरह बयान करता है,

शरीर रथ है। इंद्रियां घोड़े हैं। मन सारथी यानि इसको चलाने वाला है और जीव रत्थी है यानि इसमें बैठा हुआ हैं।

इस यात्रा के लिए दो रास्ते हैं जो इस आयत में बतलाये गये हैं। एक रास्ता तो बहुत कुशादा है, खुशनुमा है। उस पर चलने से मन लुभाने वाले खुशनुमा नज़ारे जगह-जगह पर नज़र पड़ते हैं। एक तरफ पैदल जा रहे हैं और एक तरफ साईकल वाले दौड़े जाते हैं। एक जानिब मोटरें रवां हैं। दूसरी जानिब तांगा, टमटम और बग्गियां जा रही हैं। बड़ी रेल पेल है। खवे से खवा छलता है। निहायत ही खूबसूरत खुशपोश नौजवान लड़के-लड़कियां बनावट श्रृंगार के लिए इत्तर तेल लगाये फूल सूंघते हुए और मीठे स्वरों में नई-नई तरज़ के रस भरे गीत गाते हुये खुरामा चले जाते हैं। कोई बूढ़ा बिमार बदसूरत गलीज़ और करूप आदमी या औरत चलती नज़र नहीं आती और ऐसा मालूम होता है कि इस रास्ते का शुरू और आखीर किसी को मालूम ही नहीं। हर किसी का इस मुसर्रत और राहत की फिज़ा

में सफर जारी रहता है। दिन डूबने और रात खत्म होने का किसी को पता नहीं लगता क्योंकि बिजली के कमकमों में दिन की तमीज़ मुसाफिरों के दिलों से मिट गई है और रात को भी भूल से गये हैं।

अब दूसरे रास्ते की सुनिए। यह पहाड़ी भी है मैदान भी। पहाड़ी रास्ता बहुत टेडा-मेढ़ा है। कहीं चढ़ाई है और कहीं उतराई। थोड़े ही सफर से दम फूलने लगता है। रास्ता बहुत तंग है। मुसाफिर अकेला ही चल सकता है। कई आदमियों का मिलकर चलना दुश्वार है। दाएं-बाएं बहुत गहरे खड्ड हैं। जरा पांव फिसला, निगाह हटी कि धड़ाम से खड्ड में, जहां से निकलना तो क्या बचने की भी उम्मीद नहीं। हड्डी पसलियां चकनाचूर हो जाती हैं। इनका पाट बहुत ज्यादा नहीं। यह गहरी भी नहीं लेकिन बहुत ज्यादा तेज हैं। पानी बहुत ठंडा है। पांव सुन्न हो जाते हैं। इसकी तह में बड़े-बड़े नुकीले पत्थर हैं। जब पत्थर पांव में चुभते हैं तो बहुत दर्द होता है। रास्ते में कहीं घने जंगलात हैं। रास्ता गुम हो जाता है। अन्दाज़े से चलना पड़ता है। शेर दहाड़ते हैं। चीते गरजते हैं। खौफनाक अजदहा हैं जो मुंह फैलाए हुए है और निगल जाना चाहते हैं।

मैदानी सफर इससे भी ज्यादा तकलीफदेह है। कांटे-दार झाड़ियां हैं जिनसे दामन उलझ-उलझकर रह जाता है। रेत के टीलों में रास्ता कहीं मिलता ही नहीं। यहां भूख है, प्यास है, गर्मी है, सर्दी है जो मुसाफिर को अपने तन पर बर्दाश्त करनी पड़ती है। जो मुसाफिर इन तमाम मुश्किलों मुसीबतों को हौसला से बर्दाश्त करता है और जुबान पर शिकायत का हर्फ नहीं लाता, हर कदम पर भगवान का धन्यवाद करता है और हर अगला कदम निहायत हिम्मत और हौसले से उठाता है, मायूसी और नाकामी को पास तक फटकने नहीं देता, वह मंज़िले मकसूद पर पहुंच जाता है। आप कह सकते हैं कि जीव के सफर की यह अनोखी बातें आज ही सुनी। जीव का ऐसा सफर करना न हमने आज तक देखा न सुना यह दुरुस्त है। अब तक जो कुछ मैंने कहा वो आयत के लफज़ी अर्थों की व्याख्या थी। जो कूछ बयान हुआ वो मिसाल के तौर पर था ताकि मादियत (Material) के ज़रिये रूहानियत के समझने में आसानी हो। जिस्म मादा से बना है इसलिए इसका सफर भी ज़ाहिरा होगा। जीव मादा से नहीं बना इसलिए इसका सफर भी इस तौर नहीं होगा। अब आप आईये हकीकत की करफ। हम

आपको इन दो रास्तों की असलियत बतलाते हैं।

पहला रास्ता जो कुशादा और खुशनुमा है वह विषय भोगों और सुखों का रास्ता है और दूसरा संयम या ज़बत का है यानि विषय भोगों से किनारा करके आत्मिक आनन्द पाने के लिए भगवान को भक्ति की जानिब रुख करना है। इसमें पहले सफर का नतीजा तबाही और बर्बादो है और दूसरे सफर का नतीजा अबदी सरूर और राहत है और हमेशा ज़िन्दगी में होता है।गीता में इसका जिक्र इस तरह से किया गया है,

हे अर्जुन, इंद्रियों के सुख शुरू में तो अमृत के समान मालूम होते हैं और इनसे बड़े आनन्द की प्राप्ति होती है लेकिन आखिर में इनका नतीजा ज़हर जैसा होता है और विषय भोगों से किनारा कशी और ज़बत संयम की जिन्दगो में शुरू-शुरू में तो बहुत दुःख और तकलीफ महसूस होती है। ज़हर के घूंट पीने पड़ते हैं लेकिन आखिर में इनका नतीजा अमृत के तुल्य होता है और वो हमेशा की ज़िन्दगी के वारिस होते हैं।

रामायण की दो अहम शख्सियतें

आप रामायण पढ़ते हैं। आपने कभी अलायदगी

में सोचा कि इसमें किस तत्व की व्याख्या है। भाई पढ़ना और है सोचना और है। यह सोचना गुरु कृपा से आता है। श्री महाराज बीर फरमाते हैं,

गुर बिन तृष्णा न मिटे हाथ न आवे राज़
बीरा गुर लड़ पकड़ ले हमरी मान आवाज़
गुर बिन इस संसार में मानुष रहे लाचार
गुर बिन भरम न चूकता गुर बिन घोर अंधार
गुर बिन मुक्ति न मिले गुर बिन नहीं दीदार
तन मन धन सब बीर तू गुर अपने पर वार
गुर खोलें असरार को गुरु मिलावें मीत
तां ते सब कुछ छोड़ के कर तू गुर से प्रीत

इसलिए रूहानियत की बातें सोचने समझने के लिये गुरु की शरण लेनी चाहिये। मन-मुखिया न होना चाहिये और न ही अपनी अकल का घमण्ड करना चाहिये। लो अब रामायण की बात सुनिये।

रामायण की दो अहम शखस्यितें राम और रावण दोनों का सफर जुदा-जुदा था। एक पहले रास्ते का मुसाफिर था, दूसरा दूसरे रास्ते का। रावण पहले रास्ते पर सरपट दौड़ रहा था। सोने की लंका थी। सवा

लाख बेटे और दूसरे रिश्तेदार थे। जब मकान सोने के हों तो दूसरे ऐशो इशरत के सामान की क्या तंगी हो सकती है। इन्द्र वरण कुबेर सब हुक्मों के पाबद थे। लातादाद फौज, बेअंत जंगी सामान था। बड़े-बड़े जरीं सिबा सालार और बहादुर लंका के पहरेदार थे लेकिन हशर क्या हुआ। श्री रामचन्द्र जी के प्रेमियों के हाथ से तबाही। मेरी दादी अकसर इस होहे को पढ़ा करती थी,

इक लख पूत सवा लख नाती
इस रावण घर न दिया न बाती

यह दोहा मुझे अब तक याद है। शायद आप ने भी सुना होगा लेकिन इसका भेद अब खुला कि इस कदर विशाल राज्य के मालिक का ऐसा हशर क्यों हुआ ? सिर्फ इसलिए कि वह विषय भोगों की तरफ दौड़ रहा था। वह ज़हर के दुःख को सुख मानता था। इंद्रियों की तृप्ति ही उसके जीवन का मकसद था। विषय भोगों के सुखों को प्राप्ति में ही उसकी इच्छा थी।

आखिर भगवान के नियम से बच न सका। सोने की लंका जल गई। बेटे, पोते खत्म हो गये। फौज तबाह हो गई और खुद भी इस जहान से चल बसा।

अब राम की लो। यह दूसरे रास्ते पर चल रहे थे। कल को राज तिलक होगा। अयोध्या की सलतनत मिलेगी। हुक्म चलेगा। राम के नाम का डका बजेगा लेकिन हुआ क्या ? चौदह वर्ष का बनवास। जंगल में रहना। शहर के नज़दीक न फटकना। मन पर काबू था। इंद्रियां बस में थीं। ज़रा नहीं घबराये झट फकीरी बाना पहन लिया और जंगल की तरफ चल दिये। सच है,

राज दवें तां क्या वडियाई
भीख मंगावे तां क्या घट जाई

चौदहवें साल रावण से टक्कर हुई। राम लक्ष्मण दोनों भाई हैं। न फौज न सिपाही। कुदरत साथ देती है। प्रेमी साथ आ मिलते हैं। विषय सुख के आनन्द और संयम के आनन्द का मुकाबला होता है। आखिर विजय किसकी हुई ? यह आप जानते हैं।

यह है रामायण का तत्व। यह है रूहानी तालीम, जो हमें जज़बात और संयम का रास्ता बतलाती है। पर है ज़रा कठिन। श्री महाराज बीर जी फरमाते हैं,

हर से प्रीत लगा मेरे मन
हर हर करके हरि ही हो जा, हर के बीच समा

दया गरीबी धार प्राणो, हर का हुक्म बजा
हर से प्रीत घनेरी पा ले, सर को हाथ टिका
हर मिलने हित कष्ट पड़े जो, सबको मीत भुला
सगल कुटुम्बी छोड़ मिले जो, प्रीतम प्यारा आ
दुनिया लाख कहे भटकावे, चित न मूल हटा
दुख सुख दोनों समकर जानो, हर हर नाम ध्या
हर बिन कोई मूल न बेली, साजन मीत भरा
अंत बोर जो काम आएगी, हर से प्रीत बढ़ा

छुरे की तेज धारा

विषय भोगों के बुरे परिणामों और सांसारिक पदार्थों की असारता को सुनकर आपने अब यही धईया किया होगा कि अब हम इस मार्ग पर नहीं चलेंगें क्योंकि यह दुखदाई है और मौत की वादी में जाकर खत्म होता है लेकिन मैं आपसे अर्ज़ कर दूं कि भक्ति और संयम के मार्ग पर चलने के लिए बहुत मजबूत दिल की जरूरत है। पुख्ता इरादा वाला ही इस रास्ते पर कदम रख सकता है। उपनिषद में कहा है,

इस रास्ते पर चलना छुरे की तेज धारा पर चलने के मानिद है।

एक पंजाबी का शायर लिखता है,

चे चिखा ते चड़न सुखालड़ा ए
घुट साह इको छाल मार देणी
नर्द प्रेम दी खेलणी बहुत ओखी
तरस तरस के बाजी हार देणी
सदा चाड़ प्यालड़े मस्त रहणा
गर्ज दीन दुनिया दी विसार देणी
छुरी इश्क वाली हथ फड़ के ते
खल आपणी आप उतार देणी

अक्सर भाई ख्याल करते हैं कि जिस तरह इस दुनिया में रुपये से हर मुश्किल हल हो जाती है, इस तरह रुपया से इस मार्ग को कठिनता भी कम हो जाएगी। कोई अपने मित्रों, बन्धुयों के सहारे, कोई अपने पुत्रों और भाईयों के सहारे इस मंज़िल को तय करना चाहता है लेकिन यह सफर इस कदर कड़ा है कि कोई एक कदम भी साथ नहीं निभा सकता।

तो फिर क्या निराश हो जाएं ? हौसला छोड़ दें ? क्योंकि बगैर सहारे और मदद के तो एक कदम भी चलना मुश्किल है। उपनिषद कहता है कि भगवान का सहारा लो। यह सहारा सबसे उत्तम और बड़ा है। जो

इसका आसरा ले लेता है उसे किसी और सहारे को जरूरत नहीं रहती। दुनिया के मित्र भाई पुत्र स्त्री आदि सब साथ छोड़ देते हैं लेकिन भगवान सदा हमारे अंग संग रहते हैं। भगवान का सहारा सबसे श्रेष्ट है। भगवान की शरण में आने से मन शुद्ध होता है। मन के अंदर प्रम और शांति आतो है। मन के अंदर उत्साह और आनंद आता है। फिर वह दुख सुख में समान रहता है। दुख और मुसीबत की काली घटायें उसको परेशान नहीं करतीं। श्रो बोर जो महाराज इस मज़्बून को इस तरह अज़्हार करते हैं,

मीम मैं कमजोर ते पंध लम्बा,
मौला मंज़िल उते पुचा मैनूं
ततो तुला तवक्ल दा बन बैठी,
मौला फज़ल थीं पार लंघा मैनूं
गुझा रोग न लब्भे जहान मेरा,
मेरे दर्द दी बख्श दवा मैनूं
तेरे द्वार उते डिग्गी मैं आन बोरा,
बाहों पकड़ के पार लंघा मैनूं

अगर आनन्द लेना है मेरी बस्ती में शामिल हो

गुज़श्ता दूसरी बड़ी जंग में जब जापानियों ने बरमा पर कब्जा कर लिया और हिंद सरकार को इमदाद पहुंचाने के तमाम रास्ते बंद हो गये तो हिन्द सरकार ने पहाड़ों को काट कर एक नयी सड़क बनाई। जिस जगह इन्सानी कदम पहुंचना मुश्किल था और परिन्दे भी पर नहीं मार सकते थे या शेर दहाड़ते हुये, जंगली दरिन्दे अज़ादाना घूमा करते थे वो ही जगह आदमियों के पैर चूमने लगी। यही हाल रूहानियत की दुनिया का है। मादियत और रूहानियत के दरम्यान जो कठिन मंज़िल है वह रूहानी रहनुमा की कृपा से ही आराम से तय हो सकती है। बिना रहनुमा के सहारे के भक्त के गिर जाने का खतरा है या रास्ते की मुश्किलों को देखकर दरम्यान में ही जी छोड़कर बैठ जाने का डर बना रहता है। जब सय्याद (सैलानी) पहाड़ी सफर पर रवाना होते हैं तो गाड़ी या रहनुमा को साथ लेते हैं, उसको तनखाह देते हैं और खिदमत करते हैं। सिर्फ इसलिए कि ठीक रास्ते से ले जाए ताकि तकलीफ न हो, खतरों से बचाए रखे और थोड़े वक्त में ज्यादा सफर तय करा दे। तो फिर रूहानी दुनिया तक पहुंचने के लिए रहनुमा की जरूरत क्यों

नहीं ? जरूरत तो यक्सां है। सफर चाहे मादी हो या रूहानी ।

मालिक की रहनुमाई

इस ज़माने में सत मार्ग पर चलने वालों की रहनुमाई श्री सन्त बोर जी कर रहे हैं। प्रेम समाज के नाम से आपने मादियत और रूहानियत के दरम्यान एक नई सड़क तैयार की है। इसके ज़रिए आप प्रेमी भाईयों की कठिन मुसीबत को आसान कर रहे हैं। गलत रास्ते पर जाने वालों को आप प्रेम से इस तरफ बुला रहे हैं,

अगर आनन्द लेना है मेरी बस्ती में शामिल हो
मैं तुझको मस्त कर दूंगा मेरी मस्ती में शामिल हो
पिला देता हूं मैं जिसको सदा मखमूर रहता है
खुदी को छोड़कर हरदम नशे से चूर रहता है
गुमां गुस्सा मिटाकर हर किसी से प्यार करता है
मुहब्बत के तरानों से अजब सरशार करता है
जो करता है वो कहता है जो कहता है वो करता है
किसी को न डराता है किसी से न वो डरता है

वो अपने आप को पहचान कर आराम करता है
वो अपने धाम में आराम से विश्राम करता है
मेरी आंखों की मस्ती से करोड़ों मस्त हो बैठे
हुए हैं मस्त वो ऐसे कि अपना आप खो बैठे
मुझे कुछ लुत्फ आता है प्यारे के इशारे में
नफा देखा है बीर अब मैंने खसारे में

—★—

आप क्या चाहते हैं ?

अंजील पाक की एक आयत है, "दरख्त अपने फल से पहचाना जाता है।" यानि आम के दरख्त पर आम लगा हुआ देखकर वह आदमी जिसने आम देखा है, फौरन पहचान लेगा कि आम का दरख्त है। इसी तरह से दूसरे वृक्षों की पहचान भी फल से की जा सकती है। बगैर फल के वृक्ष की पहचान हर आदमी नहीं कर सकता। इस तरह से आदमी की पहचान का भी कोई कायदा है। इस पर आज हम गौर करते हैं। बाज़ आदमियों का ख्याल है कि आदमियों की पहचान उनके बोलचाल से हो सकती है। इस पर शेख सादी का यह शेयर बतौर सनद (Certificate) पेश करते हैं,

ता मर्द नगुफता बाशिद ऐबो हुनर नहुफता बाशिद

यानि जब तक आदमी नहीं बोलता, उसके ऐब और हुनर छुपे रहते हैं। बोलने पर ही पता लगता है कि आदमी अच्छा है या बुरा। हिन्दी कविता में भी एक

महात्मा लिखते हैं,

जैसा मांहि जीव है तैसी आवे बास
मुख बोले तब जानिये अंदर का प्रकाश

आदमो के जैसे ख्यालात हैं वैसे हो उनका अज़हार होगा। जब वह बोलेगा तब उसके अंदर की हकीकत ज़ाहिर हो जाएगी। जब तक लोग ज़ाहिरी बनावट और सजावट से आरो थे तब तक यह बात दरूस्त थी लेकिन अब जब कि लोग हर बात में मिलावट बनावट लाने के माहर हो गए हैं, बोल चाल के इलम को भी बनावट से खाली नहीं रहने दिया गया है। मामूली पढ़े लिखे लोग कुछ तकरीरों और शेयरों को रट कर पढ़े लिखे लोगों पर भी अपने ज्ञान का सिक्का जमा देते हैं। गेरुए कपड़े पहन कर, कुछ ज्ञान और ध्यान की बातें रट कर मामूली लोग बड़े-बड़े आदमियों को मोह लेते हैं। गर्ज़े कि इस बनावट के ज़माना में सिर्फ बोल-चाल से इस अमर का अंदाज़ा लगाना, कि आदमी किस क़माश का है और कैसा चलन है, बहुत मुश्किल है।

बाज़ लोग कहते हैं कि इन्सान क़ी पहचान उसके व्यवहार और बर्ताव से हो जाती है लेकिन सौ फी सदी

यह भी ठीक नहीं क्योंकि चालाक आदमी अपने बनावटी अच्छे व्यवहार और बेहतरीन ताल्लुक से शरीफ आदमियों को जुल दे जाते हैं। पिछले दिनों एक अखबार में छपा कि

बोगस एडीटर कई जर्नलिस्टों को ठग ले गया

कुरुक्षेत्र 17 मार्च जिला करनाल में कई मुकामात पर एक बोगस एडीटर ने कई जर्नलिस्टों और अखबारी नुमाईंदा बनने के खाहिशमन्दों को लूट लिया। वाक्यात इस तरह बयान किये जाते हैं कि एक शख्स ने जो अपने आपको हिन्दुस्तान टाईमस का एडीटर जाहिर करता था, लुधियाना, पटियाला वगैरह में कई आदमियों को चक्कर दे गया। यहां वह कई दिन तक डाक बंगला में ठहरा रहा। यह भी कहा जाता है कि डाक बंगला का चौकीदार उसे होटल से खाना लाकर खिलाता रहा और उसकी रकम और किराया वगैरह सब चौकीदार को अपनी जेब से अदा करना पड़ा क्योंकि ठग चुपचाप भाग गया। (मिलाप 19 मार्च 1956)

इस तरह के कितने ही वाक्यात रोज़ाना अखबारों में पढ़ने को मिलते हैं जिस से यह नतीजा निकलता है

कि आदमी के व्यवहार और ताल्लुकात को देख कर भी यह पता नहीं लगाया जा सकता कि यह आदमी किस किसम का है। फिर यह किस तरह मालूम किया जाये कि यह आदमी किस किसम का है। जहां तक मैंने खोज की है मै इस नतीजा पर पहुंचा हूं कि इस जमाना में बातचीत व्यवहार या ताल्लुक की बिना पर इन्सान की पहचान नहीं हो सकती क्योंकि इन चीज़ों में बनावट या मिलावट को दखल हासल है लेकिन एक बात से हम हर एक आदमी की पहचान कर सकते हैं। इस में कोई आदमी बनावट नहीं ला सकता, न धोखा दे सकता है, न असलियत को छिपा सकता है वह बात यह है कि जिस आदमी की हमें पहचान मतलूब है उसके मुतलक जानें कि

वह क्या चाहता है ?

अगर हमें आदमी की चाह का पता लग जावे तो हम फौरन जान जाएंगें कि यह आदमी किस मयार (Standard) का है। मसलन शराब की दुकान से शराब लेने वाले को हम शराबी समझ लेते हैं या हलवाई की दुकान पर बैठे हुए किसी आदमी को मिठाई खाते देखकर

समझ जाते हैं कि यह चटूरा है और जुबान के वश में है और किसी जनरल मर्चेंट की दुकान पर अराइश और सजावट का सामान खरीदने वाले की बाबत हम फौरन ख्याल करेंगे कि यह आदमी अराइशपसन्द है और जिस्म और घर की सजावट में बहुत दिलचस्पी लेने वाला है। इस तरीका की पहचान में एक फीसदी गलती हो सकती है वर्ना 99 फीसदी यह दुरुस्त है क्योंकि यह कभी नहीं हो सकता कि मिठाई खाने वाला ठेका तलाश करता फिरे और शराबी हलवाई की दुकान ढूंढ़ता फिरे। इसके उलट सब अपनी-अपनी पसन्द और अपनी खाहिश के ज़ेर असर अपनी चाहती जगहों पर पहुंच जाते हैं और जानने वाले जान जाते हैं कि यह किस किस्म के आदमी हैं। अपनी चाह और खाहिश को ज़ाहिर करने में कोई आदमी कभी बनावट नहीं ला सकता। अगर बनावट लाने की कोशिश करेगा तो एक दो दफा के बाद उसकी बनावट का भाण्डा फूट जाएगा।

अगर कोई आदमी यह कहे कि मुझे कुछ नहीं चाहिए तो ऐसा कहना उसकी भूल है क्योंकि कुछ न चाहने की मंज़िल परम सन्तों की मंज़िल है। जैसा कबीर जी का वचन है,

चाह मिटी चिन्ता गई मन हुआ बेपरवाह
जिसको कुछ नहीं चाहिए वो ही शहनशाह

सरमद एक मशहूर सूफी फकीर हुए हैं। आप नंगा रहा करते थे। औरंगजेब ने आपके पास कपड़े भेजे कि इन्हें पहन लीजिए क्योंकि नंगे रहना शरियत के खिलाफ है। आपने औरंगजेब को लिख भेजा,

मन तन बरहना नेस्तम कुला ए चार तर्क दारम
तर्के दुनिया तर्के उक्बा तर्के मौला तर्क तर्क

यानि मैं नंगा नहीं हूं। त्याग के चार कपड़े रखता हूं। दुनिया छोड़ दी, उकबा (परलोक) छोड़ दिया, मौला छोड़ दिया और छोड़ने को भी छोड़ दिया। अब मुझे कुछ नहीं चाहिए।

हमारी अभी इतनी रूहानी तरक्की नहीं हुई। इस लिए अगर हम यह दावा करें कि हमें कुछ नहीं चाहिए तो गलत है। हम चाहते हैं और किसी न किसी रूप में बहुत कुछ चाहते हैं।

आप क्या चाहते हैं ?

कई साल हुए एक विलायती अखबार ने अपने ग्राहकों से पूछा था कि उन्हें सबसे ज्यादा कौन सी चीज़

पसन्द है यानि अगर उन्हें अपने दिल की चीज़ मांगते ही मिल जाए तो वो कौन सी चीज़ पाना चाहेंगे।

एक माली ने एक हरा-भरा बगीचा और एक खुशनुमा बंगला चाहा। एक मज़बूनगार ने कहा, मुझे तंदुरुस्ती दो। बाकी बातों को मैं देख लूंगा। एक वकील ने देहात की ज़िन्दगी को पसन्द किया जहां इसे अमन चैन के वायुमण्डल में अपने छोटे-छोटे पोतों और दोतों के साथ ज़िन्दगी के दिन बसर करने का मौका मिले। सिनेमा की एक मशहूर एक्ट्रैस ने खाहिश जाहिर की कि वह किसी को गहरी मुहब्बत में डूब जाए। एक इज्जतदार ग्राहक ने लिखा, ईश्वर मुझे ये ताकत व हिम्मत दे कि मैं अपनी मौजूदा चीज़ों को ज्यादा इज्जत की निगाह से देख सकूं क्योंकि जब मुझमें यह ताकत व हिम्मत आ जाएगी तो दुनिया में कोई भी ऐसी चीज़ नहीं रह जाएगी जिसे मैं ज्यादा चाहूं।

यह एक अखबार के चंद खरीदारों की राये का खुलासा है इस तरह गर हम सारी दुनिया की राए इकट्ठी करें तो इन सबका भी यही खुलासा होगा कि वो दुनिया में ऐशो आराम पहुंचाने वाली चीज़ों के

ख्वाहिशमंद हैं। चाहे उनकी नोईयत भिन्न-भिन्न किसम की हो क्यों न हो।

अगरचे हर आदमी की अलग-अलग पसन्द होने के सबब हमें उनकी पसन्द की हुई चीज़ों में बहुत सा फर्क नज़र आएगा। मसलन कोई धन चाहता है तो कोई औलाद। कोई जमीन चाहता है तो कोई महल। कोई अच्छे खाने मांगता है तो कोई अच्छे कपड़े चाहता है पर एक बात इन सब में मुश्तरका मिलेगी। वह है आनन्द और सुख की ख्वाहिश यानि हर आदमी अपनी पसन्द मुताबक चाहती चीज को इसलिए चाहता है कि उसकी प्राप्ति से उसको बेहद खुशी और मुसर्रत हासल होगी और उसके दु:खों और गमों का हमेशा के लिए खातमा हो जाएगा।

अब हम इस बात पर गौर करते हैं कि जिस जज़बा से हरकत में आकर हम दुनियावी चीज़ों की चाह और ख्वाहिश करते हैं, आया उससे हमारे इस आनन्द और मुसर्रत की प्राप्ति के जज़बा की भूख मिटती है या नहीं।

दुनिया के जिन-जिन भोग पदार्थों की प्राप्ति से हम अपने आत्मिक और शारीरिक आनन्द का सम्बन्ध जोड़ते हैं अवल तो उन पदार्थों के मुहईया करने में बहुत-बहुत

सख्त मेहनत कोशिश और जदो जहद करनी पड़ती है। जब कुछ चाहते पदार्थ इकट्ठे हो जाते हैं तो फिर हमारे मन में एक और किसम का मीठा लालच पैदा हो जाता है कि इस किसम के और जिस कदर पदार्थ मिल सकें ज़मा कर लेने चाहियें ताकि इनके भोग का लुत्फ उठायें। ज्यों–ज्यों यह पदार्थ इकट्ठे होते जाते हैं त्यों–त्यों उनकी हिफाज़त और संभाल की जिम्मेवारी आ पड़ती है क्योंकि अगर उनको हिफाज़त न को जाए तो उनके ज़ाया हो जाने और छिन जाने का खतरा है और संभाल और निगाहदाश्त के ख्याल से जमा करने के साथ-साथ मन में एक अजीब किसम की बेचैनी पैदा हो जाती हें। जिससे रात-दिन मनुष्य व्याकुल रहता है। जब इन पदार्थों को भोगने का विचार होता है तब एक और नया ख्याल पैदा हो जाता है। अगर इन पदार्थों को इस्तेमाल में लाते ही रहे फिर यह खत्म हो जाएंगें। तब इनको पूर्ति कैसे होगी ? इस कमी के ख्याल से भोग की इच्छा को, जिसके लिए यह पदार्थ जमा किए थं, सख्ती से दबाने की खाहिश पैदा हो जाती है। अब यही पदार्थ जिससे हमने अपने आत्मिक और शारीरिक आनन्द का नाता जोड़ा था, दुख, मुसीबत, बेचेनी, फिक्र और गम का सबब बन जाते

हैं। अगर कोई आदमी जमा करने और संभाल कर रखने या खत्म होने के ख्याल से बेपरवाह होकर उनको अपने इस्तेमाल में लाए और जी खोलकर भोग भोगे तो क्या उसको खुशी हासिल होगी ? यह कभी नहीं हो सकता क्योंकि संसार में जितने भी भोग पदार्थ हैं वो सब नाशवान हैं। इसलिए इनसे प्राप्त आनन्द भी नाशवान ठहरा। जितना अर्सा तक पदार्थ मौजूद हैं वह आनन्द भी हासिल है। जब पदार्थ खत्म हुआ तो उससे आनन्द और सुख भी खत्म हो जाता है। अब जिस तरह इन पदार्थों के हासिल करने में मेहनत, दुख, फिक्र, रंज उठाना पड़ा था वह ही दुख, फिक्र, रंज इनके खत्म होने पर भी उठाना पड़ता है। सांसारिक पदार्थों के चाहने में यह दोगुना अज़ाब उठाना पड़ता है। इसमें एक तीसरा अज़ाब और है कि जिन सांसारिक पदार्थों के भोगने से हमें सुख और आनन्द की प्राप्ति हुई थी। इस पदार्थ के भोग से सुख और आनन्द की प्राप्ति तो होती नहीं। उल्टा भोग भोगने से और ज्यादा भोग भोगने की इच्छा हमारे मन में तेजी से पैदा हो जाती है। जैसे आग में घी डालने से आग शान्त नहीं होती बल्कि ज्यादा भड़क उठती है। इस तरह से सांसारिक भोग भोगने से शन्ति और आनन्द प्राप्त होने की बजाय इच्छाओं की एक बाढ़ सी आ जाती

है। अगर आज आपने खीर और हलवा खाया है तो जुबान इस पर बस नहीं करेगी। कल को इनके साथ पूरियां और कचोरियां चाहेगी। अगर आपने सिनेमा में आज एक खेल देखा है तो कल को दो खेल देखने की खाहिश होगी। इस तरह से सब इंद्रियों का स्वभाव है कि ज्यों-ज्यों इनके विषयों की पूर्ति होती जाती है त्यों-त्यों इनमें और ज्यादा भोगने की इच्छा बनती रहती है। भर्तृहरि को, जो एक बड़ी सलतनत के मालिक थे, उन्हें हर तरह का सामान ऐश इशरत मुहईया था और किसी विषय की पूर्ति में कमी या रुकावट नहीं पड़ी, खूब जी भरकर भोग-भोगने पर आखिर यही कहना पड़ा,

"भोग खत्म नहीं होते, हम खत्म हो जाते हैं।"

एक भक्त का वचन है,

अखा माया करे फजोयत खाता खांड ते चबता रेत

अखा भक्त कहते हैं कि माया फजीयत करती है। भोगते समय तो चीनी की मानिद मीठी लगती है मगर चबाते समय मालूम होता है कि मैं रेत चबा रहा हूं। यह इन पदार्थों के भोगों का हाल है जिनको हम बड़ी-बड़ी दुआओं, प्रार्थनाओं, रयाज़तों और तपस्याओं के बाद भगवान से मांगा करते हैं। जिन-जिन महात्मा

और समझदारों को माया के जाल का और संसार के भोग पदार्थों की निसारता का ज्ञान हो गया है, वो कभी भी इन चीज़ों की खाहिश नहीं करते और न ही वो भगवान से इन पदार्थों को मांगते हैं और न ही दूसरों को इन चीज़ों के चाहने का उपदेश देते हैं। इस समय के परमसंत शहनशाह रूहानियत बाबा बूड़ सिंह बीर अपने रूहानी उपदेशों में फरमाया करते हैं कि,

मैं दीवाना हूं दीवाना न तखतो ताज मैं चाहूं
तरीका है फकीराना न तखतो राज मैं चाहूं

यानि मैं हकूमत रोअब दाब दौलत अमीरी ठाठ-बाठ कुछ नहीं चाहता क्योंकि इन चीज़ों के मुहईया करने में भी दु:ख है, पास रखने में भी दु:ख है और इस्तेमाल में लाने में भी दु:ख है और इनके खत्म होने में भी दु:ख की प्राप्ति है।

हमें किन चीजों की तलब होनी चाहिये

दुनियावी राहतों और लज्जतों की बेहकीकी और दुखमयी परिणाम से वाकफ एक महात्मा फरमाते हैं,

दिल मकुन अज़ फिकरे बातल हा सयाह
अज़ खुदा गैर अज़ खुदा चीज़े मखा

यानि ए इन्सान, अपने दिल को दुनिया के झूठे फिकरों से काला न कर और भगवान के सिवाय और कुछ न चाह। शहनशाह रूहानियत महात्मा बीर अपने रूहानी कलाम में दुनिया की चीज़ों की चाह रखने वालों को समझाते हुए फरमाते हैं,

जे मंगणा प्रीतम पासों, नाम पदार्थ मंग कुड़े
वस्त्र रंग के की लैणा ई, मन आपणे नू रंग कुड़े
उस नाल मिलके इक मिक हो जा, ला लै सारी संग कुड़े
प्रीतम प्यार करेगा बोरा, रहसें मूल न तंग कुड़े
(नाम खुमारी)

महाराज बीर अपनी तलब और खाहिश का अज़हार इन शब्दों में फरमाते हैं,

मैं नहीं जन्नत हूरां चांहदा, आपणा दरस दिखा दे तू
धन दौलत दी लोड़ न मैंनू, दाता सबर बढ़ा दे तू
धीयां पुत्र महल माड़ियां, बेशक मैंनू न दे तू

एक मरतबा को ही काफी न समझते हुये हमेशा-हमेशा के लिए अपनी चाह और तलब का बयान इस तरह फरमाते हैं,

प्रीतम जद मैं मंगां तैथों, नाम पदार्थ मंगांगी
नाम पदार्थ मंगण लगी, हरगिज़ मूल न संगांगी

नाम तेरे दी मस्ती सेती, मन आपणे नू रंगांगी
नाम तेरा जे पल्ले होया, बोरा दुत्तर लंघांगी

पवित्र बाणी 'सुलह कुल' में फरमाते हैं,

बिसरे न इक पल दाता, मेरी आतमा ऐहो ही मंगदीआ
सारे जग दे रंग त्याग दिते, मेरी लोड़ इक नाम दे रंग दीआ

नाम से ही असली आनन्द प्राप्त होता है

दुनिया के पदार्थों की चाहना हम इसलिए करते हैं कि इनसे हमें आनन्द प्राप्त होगा लेकिन ज्यों-ज्यों यह पदार्थ हमें मिलते जाते हैं त्यों-त्यों आनन्द की बजाय दुख की प्राप्ति होती है। हमारा दिल शान्त होने की बजाय अशांत होता जाता है। जन्म मरण का चक्कर कटने की बजाय और बढ़ जाता है। दुख, तकलीफ, गम, मुसीबत थोड़ी होने की बजाय और ज्यादा हो जाती है। इसलिए महात्मा लोग सच्चे सुख और आनन्द के लिए दुनिया के पदार्थों की चाहना कभी नहीं करते। वो हमेशा इनको नज़र अंदाज़ करते आये हैं। सच्चे सुख और आनन्द के लिए वो नाम पदार्थ की चाहना करते और सदा प्रभु से इसी पवित्र और उत्तम पदार्थ पाने की चाहना करते रहते हैं क्योंकि नाम पदार्थ ही इक ऐसी चीज़ है जिससे

संसार के विषय विकारों में भटकी हुई अशांत आत्मा को सच्ची शांति प्राप्त होती है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

नाम ही नाम है तत वस्तु,
जिहड़ी आत्मा नूं ठंड पांवदी आ
एहो चीज़ है जिहड़ी आनन्द दे के,
फ़र्शों चुक के अर्शं पुचांवदी आ
कोटन भान दा करन प्रकाश वाली,
समझो तिमर अज्ञान मिटांवदी आ
एहदे विच हो उसदा वास बीरा,
जिहनूं आत्मा ढूंढना चांवदी आ

जिन प्रेमी पुरुषों को सत्गुर महाराज की कृपा से नाम पदार्थ की प्राप्ति हो गई है, उनके मुख से उस आनन्दमय अवस्था का वर्णन कराते हुए महात्मा बोर फरमाते हैं,

जब से मिला नाम का सुख,
मेरे मन की उतरी भुख
नाम पदार्थ जब से पाया,
आवागमन का भरम चुकाया

नाम रसायण पावो भाई,
यही समझो साच कमाई
जितनी खर्चो खावो भाई,
उतनी बीरा बढ़ती जाई
नाम धन जो जमा करावे,
तसकर तिस को लेन न पावे
नाम रसायण जिसने पाई,
तिस को बिलकुल थोड़ न काई
प्रेमी तू भी हिम्मत धार,
नाम से कर ले मन सरशार

नाम पदार्थ क्या है ?

चंद दिनों, चंद महीनों, चंद सालों या चंद जन्मों तक ही आरज़ी खुशी और आरज़ी लज्जतों और आनन्द के दिलदादा लोग पूछते हैं कि संसारिक भोग पदार्थों से ज्यादा आनन्द और सुख देने वाला नाम पदार्थ क्या है? नाम पदार्थ की महिमा के बारे अब तक संत महात्मा बहुत कुछ कहते आये हैं लेकिन नाम पदार्थ के सही अर्थों को अब तक बहुत कम लोग समझ पाए हैं। यही वजह है कि दुनिया की चीज़ों के मुकाबले में इसके हासिल

करने की लोगों की बहुत कम चाहना रही है। अगर लोग नाम पदार्थ को इसके सच्चे अर्थों में समझ जाएं तो वो दुनियावी लज्जतों की तरफ हरगिज़-हरगिज़ तवज्जा नहीं देंगे। जिसे घी मिले वो तेल क्यों खाए ? जिसे सोना मिल जाए वह पीतल की तलाश में क्यों हैरान हो ? इस तरह जिसे नाम पदार्थ मिल जाता है उसके मन में संसारिक भोग पदार्थों की चाह बिलकुल बाकी नहीं रहती। महात्मा बीर का वचन है,

जब से मिला नाम का सुख,
मेरे मन की उतरी भुख

यानि जब से नाम पदार्थ की प्राप्ति हुई है मेरे मन में कोई खाहिश बाकी नहीं रही। नाम पदार्थ के बारे आमतौर से यही समझा जाता है कि परमेश्वर के किसी एक नाम 'ओ३म' 'अल्लाह' 'वाहेगुरु' का जप किया जाए और यही जप नाम पदार्थ है। ज्यों ज्यों जप को तैदाद बढ़ती जाती है, नाम पदार्थ इकट्ठा हुआ समझ लिया जाता है। कई-कई साल नाम जपने पर जब मन शांत नहीं होता और आत्मा को असली आनंद और सच्चा सुख प्राप्त नहीं होता तब फिर मन में यह ख्याल आता है कि नाम में कुछ रखा नहीं। दुनिया के पदार्थ ही सुखदाई और

आनन्दमयी हैं। नाम के हासल करने में फजूल वक्त गंवाना और जीवन बर्बाद करना है। अगर यही बात होती तो दुनियाभर के संत महात्मा नाम की महिमा क्यों गाते ? क्यों वो इसकी प्राप्ति के लिये सलतनतों और हकूमतों को लात मारते ?

हकीकत यह है कि नाम पदार्थ इन सब संसारिक भोग पदार्थों से जिनको कि हम हर वक्त चाहते और कामना करते रहते हैं, उत्तम और आनंददायक है लेकिन नाम पदार्थ को समझने और पाने की सलाहियत अब तक हममें पैदा नहीं हुई और यह सलाहियत गुरु कृपा के बगैर कभी पैदा नहीं होती। इस समय के सबसे बड़े रूहानी संत बाबा बूड़ सिंह बीर अपने पवित्र वचन में फरमाया करते हैं कि नाम पदार्थ पाना इक जोत परमेश्वर किसी एक नाम का जाप करना नहीं है बल्कि इससे मुराद इक जोत परमेश्वर की हजूरी समीपता और कुरबत हासल करना है। ज्यों ज्यों हम अपनी कोशिशों से इक जोत परमेश्वर की हजूरी और नजदीकी हासल करते जाते हैं, हमारे मन को एक अमोलक आनन्द प्राप्त होता जाता है जो इन संसारिक भोग

पदार्थों के भोग से प्राप्त होने वाले आनंद से अलग किसम का है और जिसकी प्राप्ति पर इनकी चाह बिल्कुल नहीं रहतो। ज्यों ज्यों इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति होती जाती है त्यों त्यों यह संसारिक भोग पदार्थ भी प्रेमी के पास आने लगते हैं क्योंकि माया इक जोत परमेश्वर के अधीन है। इसलिए इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति पर यह माया भी अधीन हो जाती है। महात्मा बीर फरमाते हैं,

प्रीतम दे बिन जीवन मेरा बिलकुल समझ नकारा ए
प्रीतम पाया सब कुछ पाया जिसदा कुल पसारा ए
सब सुख देवण हार स्वामी ऐसा पिया हमारा ए
बीर गया जो द्वारे उसदे सबनूं तारनहारा ए

हर आदमी को इक जोत (प्रभु) प्राप्ति की ही चाहना करनी चाहिये

जो लोग संसारिक भोग पदार्थों की चाहना करने वाले हैं और जिन्हें हर समय दुनिया की चीज़ों की चाहना बनी रहती है उन्हें भी चाहिये कि वो इनकी प्राप्ति में धोखा मक्कर फरेब दगाबाज़ी बलैकमेल और दूसरे के हकूक पर छापा मारने की बजाय इक जोत

परमेश्वर की प्राप्ति में लग जाएं। इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति पर सब वस्तुएं खुद-ब-खुद उन्हें मिल जाएंगी। इसमें किसी किसम के शक शुभा की गुंजायश नहीं। यह चीज़ें खुद-ब-खुद कैसे मिल जाएंगी ? इसलिए मैं आपको एक दुनियावी मिसाल देता हूं। एक दफा महाराजा जैपुर वलायत की सैर करने गये। उनके चार रानियां थीं। उन्होंने चारों को खत लिखा कि तुम्हारे लिए वलायत से क्या-क्या तोहफे लाऊं। एक रानी ने लिखा, मेरे लिए उम्दा प्याले बरतन और रकाबियां लाना। दूसरी ने लिखा, मुझे उम्दा फैशन वाले वस्त्र चाहिये। तीसरी ने लिखा, मुझे तो इंग्लैंड पैरिस के बने हुए उम्दा जेवर चाहिये। चौथी रानी ने लिखा, मुझें तो केवल आपके दर्शनों की ही खाहिश है। आपके दर्शनों से सब कुछ मिल जाएगा। महाराजा ने एक बड़ा ट्रंक बरतनों प्यालों और रकाबियों का खरीद लिया। दूसरे ट्रक में नफीस और आहला कपड़े भरे। तीसरे में कीमती जेवरात रखे। इसके अलावा अपनी मन्शा के मुताबक लाखों रुपयों का दूसरा सामान महलों को सजाने के लिए खरीद कर लिया। जब वापस लौट कर आया तो हर एक रानी को उसकी खाहिश के मुताबक चीज़ें भेज दीं।

बाकी जो माल अपने लिये खरीद कर लाया था वो सब हमराह लेकर चौथी रानी के पास चला गया और सब माल उसे दे दिया। दूसरी रानियों में इससे बड़ी ईर्ष्या पैदा हुई और सब अपनी अपनी चीज़ें वापस देने आईं। महाराजा ने कहा, जो कुछ तुमने मांगा तुम्हें मिल गया। उसने सिर्फ मेरा दर्शन मांगा था तो यह लाज़मी था कि जहां मैं जाऊं अपना सामान भी साथ ले जाऊं। इसलिए तुम्हें नाराज़ नहीं होना चाहिये। रानियां खामोश हो गईं और उस छोटी रानी की ख्वाहिश और चाहना की तारीफ करने लगीं।

गुरु नानक देव जी ने भी फरमाया है,

जे तू उसदा हो रवें सब जग तुध दा हो

बस हमें लाज़म है कि हम महात्मा बीर जी की पवित्र तालीम की रोशनी में अपनी अपनी ख्वाहिशों की पड़ताल करें कि हम क्या चाहते हैं और फिर फैसला करें कि हमारी चाहना हमारे लिये नुकसान देह तो नहीं और इससे हमारी आत्मा को गिरावट तो नहीं होगी। ज्यों ही हमें पता लग जाएगा कि संसारिक भौग पदार्थों की चाहना हमारे लिए हानिकारक है, हमें इस चाहना का त्याग कर देना चाहिये और जिस चाहना से हमारी

आत्मा का कल्याण होता है, उस चाहना को हमेशा बढ़ाते रहना चाहिये और वो चाहना नाम पदार्थ की है। अगर हमने नाम पदार्थ की चाहना न की और दुनिया के भोग पदार्थों की ही चाहना करते रहे तो इससे हमारा कल्याण नहीं होगा बल्कि दुख की ही प्राप्ति होगी। महात्मा बीर फरमाते हैं,

जेकर नाम न ध्याया जिन्दे,
किस विध बख्शी जावेंगी
आवागोण दे चक्कर विच फसके,
बिर्था जनम गंवावेगी
प्रीतम मूल कबूले नाहिं,
विछड़ चोटां खावेंगी
बीरा जेकर नाम ध्याया,
जोती जोत समावेंगी

—☆—

वो क्या चाहते हैं ?

महाराज बीर अपने रूहानी उपदेशों में अज्ञानी पुरुषों को चेतावनी देते हुए अक्सर फरमाया करते हैं कि,

कुछ सोच समझ नर बावरे, काहे बिर्था जन्म गवाये

यह सोचने समझने का उपदेश मनुष्यों को ही दिया जाता है, पशुओं को नहीं क्योंकि सोचने समझने की शक्ति इन्सानों को दुनिया के शुरू से ही भगवान ने अता की है और हमेशा तक इसके पास रहेगी। पशु पक्षी सोचने समझने की ताकत से आरी हैं इसलिए उनको यह चेतावनी कभी नहीं दी जाती। संसार में जितने मनुष्य हैं, सब में सोचने समझने की शक्ति है और इसी सोचने की शक्ति के कारण संसार भर में उन आदमियों की तादाद ज्यादा है जो कि आस्तिक हैं और जिनका 'इक जोत परमेश्वर' पर विश्वास है क्योंकि उन्होंने अपनी सोच समझ से यह जान लिया है कि इस संसार का बनाने वाला और इसकी रक्षा करने वाला 'इक जोत

परमेश्वर' है। बगैर उसकी शक्ति और इन्तज़ाम के यह संसार एक मिन्ट भी कायम नहीं रह सकता। 'इक जोत परमेश्वर' सब की प्रार्थना को सुनने वाला और सब की इच्छा को पूर्ण करने वाला है। इसी विश्वास और यकीन के सहारे सब आस्तिक लोग हर रोज़ भगवान से यह प्रार्थना किया करते हैं,

जीवर भर दो हे भगवान, सुन्दर तन दो हे भगवान
निर्मल मन दो हे भगवान, विद्या धन दो हे भगवान

यानि हे भगवान! हमारे जीवन को खुशियों और मुसर्रत से भर दो। हमारा जिस्म खूबसूरत हो और हमें कोई बिमारी न सताए। हमारे मन में राग द्वेष न हो और हमारा दिमाग ज्ञान से भरपूर हो लेकिन अक्सर आस्तिक लोगों को यह देख कर बड़ा ताअजुब होता है कि उनकी हर रोज़ की की गई प्रार्थनाओं और दुआओं का, घंटे घड़ियाल और शंख बजाने का, लम्बी लम्बी डंडोत और माथा रगड़ने का भगवान पर कुछ असर नहीं होता बल्कि बाज़ दफा तो इसका असर उल्टा देखने में आता है। लोग प्रार्थना करते हैं बारिश के लिए और पड़ जाता है कैहद। लोग इल्तजाएं करते हैं सुख शांति के लिए पर आ जाते हैं अचानक ही ज़लज़ले (भुचाल),

वो हाथ बांध कर दुआएं करते हैं सेहत के लिए, फैल जाता है हैज़ा और मलेरिया। एसो उल्टि गति को देख कर बहुत से लोग तो नास्तिक बन जाते हैं और कहने लगते हैं कि 'इक जोत परमेश्वर' का कहीं वजूद नहीं है अगर परमेश्वर का वजूद होता तो वह जरूर हमारी दुआओं और प्रार्थनाओं को सुनता और मन्जूर करता और अगर है भी तो हमें ऐसे अन्धे, गूंगे, बहरे ईश्वर की जरूरत नहीं जो न हमारी हालतों को देखता है न दुआओं को सुनता है और न अपनी कुछ कहता है।

क्या यह बात सच है कि ईश्वर बहरा, गूंगा और बेरहम है जो हमारी दर्द भरी दुआओं को न सुनता है न उन पर कोई गौर करता है। नहीं नहीं, यह सिर्फ एक तरफा डिग्री (Decree) है और सोच समझ कर कही गई नहीं है। अंग्रेजी की एक कहावत है,

"पहले मुस्तहिक बनो फिर ख्वाहिश करो।" और हमारी यह हालत है कि मिडल फेल हैं। यह पता नहीं कि भारत का राष्ट्रपति कौन है और मद्रास कहां वाक्या है और दरखास्तें भेजते हैं ICS के दाखले के लिए। भला सोचिए कि कोई कमीशन हमारी दरखास्त को रद्द कर दे और हम कमीशन को कोसने लगें तो यह कौन

सी अक्लमन्दी है। हमें तो यह चाहिए था कि ICS बनने की काबलियत पैदा करते। कमीशन के सामने पेश हो कर उसके इम्तहान में पास होते फिर ICS का कोर्स करते। कामयाब होने पर ICS बनने की ख़ाहिश करते।

ICS तो एक बड़ी चीज़ है, छोटी से छोटी मुलाज़मत हासिल करने के लिए भी हमें कुछ शर्तों को पूरा करना होता है। फिर 'इक जोत परमेश्वर' से अपने मन की मुरादें पाने के लिए भी उन शर्तों को पूरा करना क्यों जरूरी नहीं ? इस बात को हम नज़र-अन्दाज़ कर जाते हैं।

दुनियावी कारोबार में हमने जब किसी अफसर या आदमी से काम लेना होता है, हम उसके गांव और पड़ोसियों से यह जानने की कोशिश किया करते हैं कि वह क्या चाहते हैं ? अगर वो रुपया चाहते हैं तो नज़राना या भेंट की सूरत में हम उसे रुपये देने की कोशिश करते हैं। अगर वो खुशामद चाहते हैं तो हम अखबारों और लैकचरों में उनकी खूब तारीफ करते हैं। अगर वो धार्मिक विचारों के हैं तो हम भी अपने आपको उन्हीं विचारों में ढला साबित करते हैं। गर्जे कि उनकी चाह

के मुताबिक हम अपने आपको बनाकर उनकी खुशनूदी हासिल करके अपना काम निकाल लेते हैं। ऐसा कभी देखने में नहीं आया कि किसी आदमी ने अफसर दोस्त रिश्तेदार या मेहमान की पसन्द और ख़ाहिश के खिलाफ काम करके उसकी खुशनूदी हासल कर ली हो और अपने मन की मुराद पा ली हो। आपके पास एक महमान आता है और आप झट पूछते हैं कि क्यों साहब, दूध पीएंगे या चाय, लस्सी लाऊं या सोडा। महमान जो मांगता है वो ही चीज़ ला देते हैं। मन चाही चीज़ पाकर महमान की तबीयत खुश हो जाती है लेकिन अगर महमान लस्सी पीना चाहे और आप ला दें चाय तो इसके जहां आपके चाय के पैसे ज़ाया गये वहां महमान को भी खुश न कर सके। इस तरह दुनिया के कारोबार में हर उस आदमी को चाह या रगवत का ख्याल रखना पड़ता है जिससे हमने अपना कोई काम निकालना होता है। अगर हम अपने कारोबार में ऐसे आदमियों की चाह और रगवत का ख्याल नहीं करेंगे तो हम उनसे कोई काम नहीं ले सकेंगे और न अपने कारोबार में कामयाब हो सकेंगे।

अब इसी असूल का इतलाक़ या इस्तेमाल आप

रूहानी दुनिया पर कीजिए। आप 'इक जोत परमेश्वर' से धन चाहते हैं, हकूमत चाहते हैं, इज्जत और शोहरत चाहते हैं, सेहत और खुशी भी चाहते हैं और आप यह भी चाहते हैं कि इनके साथ-साथ आप को दिली सकून कलबी इतमनान हासिल हो जाए और आपके जन्म मरण का चक्र हमेशा के लिए खत्म हो जाए। कभी भी कोई गम, फिक्र, भय आपको न सताए, सदा प्रभु आप पर प्रसन्न रहें लेकिन इसके लिए कभी आपने यह भी सोचा कि जिस प्रभु से आप यह सब चीज़ें चाहते हैं वह भी आपसे इनके इवज़ में क्या कुछ चाहते हैं।

वो क्या चाहते हैं ?

अब आज हम इस सत्सग में महाराज बीर की बख्शी हुई आध्यात्मक की रोशनी में यह विचार करें कि प्रभु हमसे क्या चाहते हैं। किसी को चाहना या रगबत को जानने के लिए उनका हमारे सामने होना जरूरी है। मैं आपके सामने बैठा हू आप मुझसे पूछ सकते हैं, पण्डित जी, आप क्या चाहते हैं और मैं भी बतला सकता हूं, मुझे फलां चीज़ चाहिए लेकिन प्रभु तो हमारे सामने प्रत्यक्ष नहीं। हम किससे पूछें कि प्रभु क्या चाहते हैं।

हमें यह भी पता नहीं कि प्रभु कहां हैं वर्ना तार भेज देते, टैलीफोन कर देते या अखबारों में इश्तहार निकाल देते कि प्रभु जहां कहीं आप हो वहां से भेजो या पता कर दो कि आप क्या चाहते हैं। इस दुनिया से जब हमारा कोई दोस्त अज़ीज या रिश्तेदार लापता हो जाता है और उसको तलाश का जब कोई ज़रिया नहीं रहता तब हम उसके वाकफकारों और मिलने वालों को कहते हैं कि अगर आपको मिला हो तो आप ही बतला दीजिए कि वो कहां है और क्या चाहता है ?

इसी तरह अगर प्रभु हमारे लिए लापता हैं तो हमें उनके मिलने वालों की तलाश करनी चाहिए। जब कोई ऐसा आदमी मिल जाए तो फिर उससे पूछ लेना चाहिए कि भाई, आप प्रभु से मिल कर आए हैं और अक्सर मिलते भी रहते हैं कृपा करके हमें यह तो बता दीजिए कि वो क्या चाहते हैं ताकि हम उसकी कृपा के पात्र बन सकें। सौभाग्य से ऐसे ही एक महापुरुष बीर हम में मौजूद हैं जिन्होंने अपने प्रेम और भक्ति से 'इक जोत परमेश्वर' को साक्षात कर लिया है और यह जान लिया है कि प्रभु क्या चाहते हैं ?

मुझे बहुत दिनों से यह ख़ाहिश थी कि कोई ऐसा आदमी मिले जो यह बतला दे कि प्रभु क्या चाहते हैं क्योंकि मैं शुरू से ही भगवान का भिखारी रहा हूं। मैंने कृपा पात्र बनने के लिए बरसों मंदिरों में झाड़ू लगाए, कीर्तन किए, मूर्तियों को नहलाया, घुटने टेके, माथा रगड़ा, पाठ किए, माला फेरी लेकिन भगवान की कृपा मुझ पर नहीं हुई। जब सब सो जाते तब मैं आधी रात को उठ बैठता, चांद और तारों से पूछता कि भाई तुम ही बता दो भगवान क्या चाहते हैं। मैं जमीन पर हूं तुम आसमान पर। शायद तुम्हें मेरी निसबत ज्यादा मालूम हो कि प्रभु क्या चाहते हैं ? मैं बार बार प्रार्थना करता। उनसे बग़ैर ख़ामोशी कोई जवाब न मिलता। हां, कभी कभी वो मेरी इस हीन अवस्था पर हंस जरूर देते। एक दिन एक दोस्त ने मुझे पाल बैरिंगटन की मशहूर किताब 'गुप्त भारत की खोज' पढ़ने को दी। पाल बैरिंगटन फ्रांस का रहने वाला था। उसे योगियों और महात्माओं से मिलने का बहुत शौक था। बहुत से मुलकों में घूमा। भारत में भी आया। जनूबी हिन्द में यह महाऋषि रमन के आश्रम में गये। महाऋषि समाधि अवस्था में थे। यह भी और लोगों की तरह महाऋषि के सामने बैठ गए।

अपनी किताब में यह लिखते हैं कि महाऋषि के सामने बैठते ही मेरी समाधि लग गई और मेरे तमाम सवालों का जवाब मिल गया जिन्हें मैं आज तक कहीं भी हल न कर पाया था। महाऋषि के बारे मैंने बहुत से भारतीय विद्वानों की ऐसी राय पढ़ी। मैंने उनके पास जाना चाहा लेकिन मेरे पास ऐसे जरिये नहीं थे कि उनके चरणों में पहुंच जाता और पूछता कि महाऋषि मुझे बतला दीजिए कि प्रभु क्या चाहते हैं ? मैं इसी कोशिश में था कि किसी तरह उनके पास पहुंचूं। अखबारों से पता चला कि महाऋषि जोती जोत समा गये हैं। इस से मेरी रही सही इच्छा भी खत्म हो गई। माह फरवरी में पण्डित धनी राम का खत रोहतक से पहुंचा कि प्रेम समाज का सालाना सत्संग है मैं उस मौका पर वहां जरूर पहुंचूं। तारीख मुकररा पर मैं वहां पहुंच गया। दिन में आम सत्संग होता था और रात को खास। पूर्णमाशी की रात्रि थी। चन्द्रमा पूरी तरह चमक रहा था और अपनी स्पैशल किरणें पृथ्वी पर भेज कर मनुष्यों के हृदयों में आनन्द पैदा कर रहा था। बाग में दरख्तों से रोशनी छन छन कर आ रही थी। इधर हजूर महाराज बीर जी पूर्णमाशी के चन्द्रमा की तरह प्रेमियों

के दरम्यान बैठे उनके हृदयों के अंधेरे को मिटा रहे थे। मुझे भी हजूर के कदमों में बैठने का शरफ़ मिला। पहले महाराज ने मुझे ताका और फिर पण्डित धनी राम की तरफ नज़र को जो इस दिन और रात के मुन्तज़िम थे। पण्डित धनी राम किसी गहबाना शक्ति के ज़ेर असर एक अजीब मस्ती के आलम में हमारे सामने खड़े हो गए। उस वक्त उनके चेहरे पर एक जलाल था और जिस्म से रूहानियत की शफायें फूट रही थीं। सब प्रेमी भाई अध्यात्मक की शराब में नशई और मसरूर इस साकी की तरफ देखने लगे कि देखिए यह साकी अब कितने जाम शराब मारफत के और पिलाता है। पंडित धनी राम इक वाहलाना अंदाज़ में महाराज की बाणी का उचारण करते हुए जाम पर जाम लुटाने लगे,

वो क्या चाहते हैं वो क्या चाहते हैं
वो प्रेमी से दिल को लिया चाहते है
जो दिल दे दे प्रेमी तो दिल में वो आएं
प्रेमी से फ़री वफा चाहते हैं
जो हस्ती मिटा फिर भी मस्ती में आए
उसे अपना दिल वो दिया चाहते हैं

हो जाते हैं प्रेमी प्रीतम हो इक दिन
जो प्रीतम में होना फना चाहते हैं
वो प्रीतम पे अपना दिलो जान वारें
जो जीते ही जीते बका चाहते हैं
जो प्रीतम की खातर उठाएं कदम इक
उसे घर में आकर मिला चाहते हैं
वो ही अपनी मर्जी से करते हैं सब कुछ
जो प्रीतम की बीरा रज़ा चाहते हैं

बाणी के उच्चारण के साथ साथ मुझ पर एक मस्ती का आलम छा रहा था। सरदार दलीप सिंह जी की कोठी मेरे लिये महाऋषि रमन का आश्रम बन गई। शहनशाह रूहानियत महाराज बीर ने इस मस्ती के आलम में अपने नूरानी जलाल से मेरे दिल के अंधेरों को रोशन कर दिया और मुझे मालूम हो गया कि भगवान क्या चाहते हैं और मैं उनका कृपा पात्र कैसे बन सकता हूं।

वो क्या चाहते हैं ?

शहनशाह रूहानियत महाराज बीर ने अपने इस रूहानी कलाम के ज़रिये हमें बतलाया कि 'इक जोत

परमेश्वर' हमारी मुंह मांगी मुरादें पूरी करने के लिए हमसे तीन चीज़ें 1. पवित्र दिल 2. पूरी वफा 3. अपनी खुदी से इन्कार चाहते हैं। अगर हम यह तीनों चीजें भगवान को दे दें तो फिर दुनिया में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो हमें न मिल सके या भगवान हमसे छुपा कर रख सकें। अब इन पर विचार करते हैं कि यह क्या हैं और किस तरह हम इनको प्रभु के अर्पण कर सकते हैं।

पवित्र दिल

यहां दिल से मुराद इन्सानी जिस्म के छोटे से गोश्त के लोथड़े से नहीं है जो कि हर वक्त धड़कता रहता है बल्कि उससे है जो इन्सान के तमाम कामों, खाहिशों और इरादों को हरकत देने वाला है और जिसके बारे में कहा गया है,

बड़ी नायाब शै है ये दिल बेताब सीने में
हजारों कीमती लालो गोहर हैं इस दफीने में

कोई आदमी अपने प्रेमी को गन्दी, बासी, सड़ी हुई चीज़ें नहीं देता। हमेशा भेंट में ताजा, पाक और साफ चीज़ें दी जाती हैं। ऐसा दिल जो गरीबों, यतीमों

बेनवाओं पर तरस खाए, जो दुखियों और बिमारों को देख कर पसीज जाए, जिसमें तमाम जहान का दर्द भरा है और जिसमें नापाक और गंदे ख्याल कभी न आएं। यह भी ख्याल रहे कि हम दूसरे को वोही चीज़ दे सकते हैं जिस पर हमें पहले अपना कब्ज़ा व अख्तयार हासिल हो। इसलिए प्रभु को दिल देने से पहले हमें अपने दिल पर पूरा कब्ज़ा जमा लेना चाहिए। यह दिल बड़ा बेताब है। आप यहां सत्संग में बैठे हैं और यह कहता है चलो सिनेमा में नागपंचमी का खेल देखें। कम्पनी बाग में जाकर टहलें और चौड़ा बाजार की सैर करें। अभी-अभी लड्डुओं की मांग कर रहा था कि आम भी चाहने लगा। इस पर भी बस नहीं चोरी, डाके, कत्ल, खून तक यह करवा देता है। दिल की तरंगों को ठिकाना आज तक नही मिला। एक कवि लिखता है,

दिल दरिया समुन्द्रों डूंगे कोण दिलां दीयां जाणे
विचे बेड़ी विचे चप्पू विचे वंझ महाणे
चोदह तपक बन्दे दे अन्दर तम्बू वांगर ताणे
जिहड़ा सार दिलां दीयां जाणे ओह हरदम मौजां माणे

इसलिए इसे प्रभु अर्पण करने से पहले इसकी तरंगों

पर काबू पा लेना चाहिए। जब तक इस पर काबू नहीं पाया जाता यह भगवान की भेंट के काबल नहीं ठहरता। महाराज बीर फरमाते हैं,

1. बिला शक जमाने से बेजार होवे
नज़ारा ए आलम से इन्कार होवे
मगर दिल का शीशा न जब तक सफा हो
सनम का भला कैसे दीदार होवे

2. दुनिया की हस्ती कुछ नहीं
बाला ओ पस्ती कुछ नहीं
जब तक न दिल होवे सफा
बीरा ये मस्ती कुछ नहीं

मौलाना फरीदउद्दीन अत्तार फरमाते हैं,

दिल बावद मरआत चे जिवज़ लाल
दर दिले साफो नमायद हकताल
पेशे सालक अर्शे रहमां अस्त दिल
जुमला आलम चूं तनो जां अस्त दिल
दिल मुकामे उस्तवयार किबर आ अस्त
दिल न बारद आं के बाकिबरो रयास्त
गर हमे खाही कि बीनी रूए ओस्त
दिल बदस्त आवर कि दिल मैरासे ओस्त

तर्जुमा—दिल शीशा नूरी खुदा के जलाल को दिखाने वाला है। साफ दिलों में परमात्मा का असर पड़ता है। सालिक के लिए अर्शे रहमान दिल ही है। जुमला आलम मन जिस्म के है और रूह मसले दिल के। दिल के जाम से सारा जहान एक घूंट भर आबेहयात को पीकर जिन्दा हो रहा है। दिल के एक कदम से अर्शो फरश खत्म हो जाते हैं। दिल ही अर्शे अज़ीम (सचखण्ड) है लेकिन दिल से वो मुराद नहीं जिसमें अहंकार गरूर और खुदगर्ज़ी हो। अगर तू ऐसे मतलूक के दीदार की तलब रखता है तो दिल पर काबू पा कि दिल ही खुदा का तख्त है।

पूरी वफा

पूरी वफा से यह मुराद है कि हम सारे दिल और सारी जान से परमेश्वर की ज़ात से मुहब्बत करें। उसके नियमों पर चलें और उसको तमाम आज्ञाओं का पालन करें। महाराज बीर फरमाते हैं,

वज चुकी जे कर पिया संदी,
फिर उसदी बण के दिखा अणिये

भावें दुख तकलीफ हज़ार आवे,

सबर नाल तू वक्त टपा अणिये

राज़ो रहो तू ओहदो रज़ा अंदर,

दुख विच वो शुक्र मना अणिये

बीरा पिया ताईं जेकर पावणा ई,

निरी ओस वरगो बण जा अणिये

अक्सर ऐसा होता है कि सुख में हम भगवान को बहुत याद करते हैं। दिल में कई बार धन्यवाद देते हैं। उसके नाम पर लड्डू भी बांटते हैं लेकिन यूं ही व्यापार में नुक्सान हुआ या मुकद्दमा में हार गये या बिमार पड़ गये तो भगवान को कोसने लगते हैं और उसे न इन्साफ पसन्द कहने लगते हैं। पूरी वफ़ा से मुराद हर हाल में उस की रज़ा को मुकदम रखें। हमेशा खुश रहें और किसी हालत में उसका दामन हाथ से न छोड़ें। पूरी वफादारी इस सूरत में हो सकती है कि हमें इक जोत परमेश्वर पर पूरा विश्वास हो और उसे हम अपना सब कुछ समझें और महाराज बीर के शब्दों में कहें,

प्रभ मेरा भाई प्रभ मेरा मीत,

प्रभ से मेरी बड़ी प्रीत

प्रभ मेरा सगा सहाई जान,
प्रभ मेरा जोर प्रभु है तान
प्रभ मेरा राखा प्रभ मेरी ओट,
प्रभ मिलने से आए न तोट
प्रभ हमदर्द मेरा है जान,
प्रभ बिन मुझे न सूझे खान
प्रभ मेरा वीर प्रभ मेरा नाती,
प्रभ मेरा गीत प्रभ मेरा जाती
प्रभ मेरा भाई प्रभ मेरा बाप,
प्रभ मेरा सब कुछ आपे आप
हर कारज में प्रभ सहाई,
तिस बिन मेरा कोई न भाई
प्रभ बिन मेरा कोई न बेली,
दुख सहती है जान अकेली
(सुख सागर श्लोक 13)

अपनी खुदी से इन्कार

तीसरी चीज़ जो प्रभु चाहते हैं वह यह है कि हम अपनी खुदी से इन्कार करें। मैं सब कुछ करने में समर्थ हूं, मेरी हकूमत है, मैं दुश्मनों पर फतह पाऊंगा, आज

मैंने यह पा लिया है, कल वो पाऊंगा, मैं दान दूंगा, मैं यज्ञ करूंगा, मेरी कौन बराबरी कर सकता है ? ऐसे विचारों में मग्न रहना और इन्हीं भावों से अपने कारोबार चलाना खुदी या अहंगता कहलाता है। खुदग्रस्त आदमी में घमण्ड और तकब्दर पैदा हो जाता है जिसके बायस वह दूसरे आदमियों को छोटा, ना-चीज़ और अपने से कमतर समझने लगता है। उसके दिल में प्रभु का डर और खौफ जाता रहता है जिससे वह जुल्म करने से भी नहीं कतराता। गुनाह और अज़ाब का ख्याल उसके जेहन से मिट जाता है और वह अपनी मनमानी कारियां करने लगता है। इसलिए महात्मा पुरुषों ने खुदी की निन्दा की है। महाराज बीर फरमाते हैं,

खुदी करके अबलीस मारा गया था
सुलेमान नज़र से उतारा गया था
खुदी जो करेगा बचेगा न कोई
ये रोज़े अज़ल से पुकारा गया था
खुदी को दिल से गंवाए न कोई
गुमान और गुस्सा मिटाए न कोई
जबी तक हिरसो हवा न बीर छोड़ी
नज़ारा ए दिलबर को पाए न कोई

(पवित्र किताब)

'दृष्टि' नामी ट्रैक्ट में आप फरमाते हैं,

प्रीतम नूं जे पाणा होवे प्रीतम वरगे होईए
अपनी खुदी गवां के भाई जीवदयां ही मोईए
जिन्हें ए गल समझी असली औसे मौज मनाई
वर्ना भटके ते भटकावे सुख न मिलदा राई

जिस तरह कोई नौकर मालिक के कारोबार में अपनी मर्जी को दबाकर मालिक की मर्जी के मुताबिक काम करता और उसे हर तरह खुश रखता है, इस तरह से हमें यह "सब कुछ प्रभु का है" समझकर उसे प्रसन्न रखने के लिए अपने सारे कारोबार सरअंजाम देने चाहिए। इस तरह हम अपनी खुदी का नाश करके और प्रभु को प्रसन्न करके अपनी मुरादें पा सकते हैं।

निदा (आवाज) ये आई गैब से

आखिर में आपको एक महापुरुष की बात सुनाता हूं जिसे गैब से यह आवाज़ आई कि प्रभु क्या चाहते हैं ? एक महात्मा ने घर-बार छोड़कर सख्त तपस्या की, फाके काटे, माथे टेके, प्रार्थनाएं की लेकिन कुछ शान्ति हासिल न हुई तो गिला करने लगे। तब गैब से यह निदा (आवाज़) आई,

हमारा बंदा कब रहा हिवस से अपने काम है
असीरे नफस गौर कर हिवस का तू गुलाम है
बहिश्त तेरा घर नहीं खुदी तेरा मुकाम है
निजात अपनी सामने जो तुझको सुबह शाम है
दुया कभी नहीं ये की कि देश का सुधार हो
हमारी कौम जाग उठे भंवर से नाव पार हो
तू जा यहां से लोट जा वतन का तू सुधार कर
वहीं मिलूंगा मैं तुझे न जिन्दगी को खार कर
ये वक्ते इम्तहान है कदम को उस्तवार कर
संभाल सब खलक को गले लगाकर प्यार कर
संभाल मेरे बंदों को तुझे मैं संभाल लूं
उठा तू मेरे बंदों को तुझे भी मैं उछाल दूं
तू रास्ता उन्हें दिखा तेरी बला को टाल दूं
तरक्कियां उन्हें दिला तुझे भी मैं कमाल दूं

(ऐजाज़ कलीमी)

प्रेमी भाईयो, अब आप जान गये होंगे कि हम जो प्रभु से धन दौलत इज्जत मरतबा और खुशी मुसर्रत चाहते हैं तो इसके इवज़ हमें प्रभु को क्या भेंट करना

चाहिए और वो हमसे क्या चाहते हैं ? मैं आशा करता हूं कि हम महाराज बीर की रहनुमाई में अपने सच्चे प्रभु की सेवा में जाहिरी भेंट और नज़र नयाज़ पेश करने की बजाय वो ही तीन चीज़ें पेश करेंगे जिनको कि वो चाहते हैं और वो तीन चीज़ें हैं—पवित्र दिल, पूरी वफा और अपनी खुदी से इन्कार ।

—★—

सबसे पहला काम

कांग्रेस की एक मीटिंग में तकरीर करते हुए एक कांग्रेमी नेता ने कहा कि मुल्क में बढ़ती हुई फिरका प्रस्ती को खत्म करना आज हमारा पहला काम है। थोड़े दिनों बाद भारतीय जनसंघ का जलसा हुआ। वहां भाषण करते हुए एक सज्जन ने कहा कि नेहरू सरकार की ऐन्टी हिन्दु ज़ेहनियत को खत्म करना हमारा सबसे पहला काम है। कम्यूनिस्टों ने यह सुना तो उन्होंने मेज पर जोर-जोर से मुक्के मारते हुए हाज़रीन से कहा कि सरमाया प्रस्ती को खत्म करना हमारा सबसे पहला काम है। सोशलिस्ट क्यों चुप रहते। उन्होंने भी नारा मारा कि मजदूर राज कायम करना हमारा सबसे पहला काम है।

इस किसम की बातें सुनने वाले सेठ मईया प्रशाद अपने दोस्तों की महफिल में बैठे हुए कहने लगा कि रुपया कमाना हमारा सबसे पहला काम है क्योंकि दुनिया

में पैसे से ही इज्जत और कदर है और इसकी बदौलत ही हर तरह का आराम और सुख मिलता है। जब तक हमारे पास इतना रुपया न हो जाए कि जिसके सूद से हो हमारा गुजारा चलता जाए तब तक चैन से नहीं बैठना चाहिए। रुपया ही कमाने में लगे रहना चाहिए। झंडू मजदूर अपनी बरादरी में बैठा हुक्का पी रहा था। अचानक ही बोल उठा कि पढ़ना लिखना और भजन पाठ क्या है? कुछ भी नहीं। हमारा तो सबसे पहला काम पेट भरना है। जब तक हम रोजाना इस कदर न कमा लें जिससे कि सारे कुनबा का पेट भर सके, तब तक यह सारी बातें फजूल हैं। चंद बेफिकरे सिनमा हाल के सामने बैठे इस कदर बातें कर रहे थे। एक बोला मेरा सबसे पहला काम तो हजामत बनाना है। हजामत न बना लूं तो कुछ सूझता ही नहीं। दूसरा बोला कि मेरा पहला काम तो चाय पीना है। बिसतरे से नीचे कदम तब रखता हूं कि जब गर्म चाय की दो प्यालियां पी लेता हूं। तीसरा बोला, मेरा सबसे पहला काम अखबार पढ़ना है। अखबार पढ़कर ही मैं सोने के कमरे से बाहर निकलता हूं। इससे पहले नहीं। कथा के बाद मन्दिर में भी यह वार्ता चल पड़ी। पण्डित जी महाराज बोले कि

आदमी का सबसे पहला काम पूजा पाठ है। अगर प्रातः उठके स्नान के बाद पूजा पाठ न की जाये तो जन्म ही निश्फल है। इस तरह बड़ी-बड़ी तकरीरें और लम्बे चोड़े मज़बूनों के साथ न जाने कितने लीडरों रहनुमाओं और धर्म उपदेश्कों ने अब तक सबसे पहला काम पर लिखा और कहा है और अपने-अपने नये-नये ख्यालात और दृष्टिकोण से जीवन को इस पहेली पर रोशनी डाली है और अब भी नई से नई किताब इस मजबून पर हमारे लिटरेचर में आती रहती है। पर क्या इससे सब लोगों को इस बात की समझ आ गई है कि हमारा सबसे पहला काम क्या है और क्या हम दावा से कह सकते हैं कि सब इस बात को समझ गए हैं कि हमारा सबसे पहला काम यह है। अगर नहीं तो फिर क्या सब यह दावे यकदम गलत नहीं हैं ?

यह तो रहने दीजिए। यह सोचिये कि जिस पहले काम को सर अंजाम देने की दुहाई देते हम कभी नहीं थकते, इस सबसे पहले काम का हमारे वर्तमान जीवन में कितना महत्व और स्थान है और हम इसको कितना आदर्श बनाते हैं और किस कदर उसे अपनी जिन्दगी में अमल की शक्ल में ढालते हैं और फिर उससे अपनी कौम

और अपने मुल्क का किस कदर भला करते हैं। क्या इतना भी कभी इमानदारी से सोचा है ?

जहां तक तर्जुबा सच्चाई की पहुंच है हम तो यही देखते हैं कि हमारा सबसे पहला काम और इसके बारे हमारा सारा ज्ञान अपने आप पर ही और अपनी एक इकाई पर केन्द्रित हो रहा है।

जितनी अशांति, जितना क्लेश, जितनी उलझनें सब से पहले काम के बारे में इन्सान को पेश आई हैं और जिस कदर बहस मुबासा और छानबीन इस बारे में की गई है और की जा रही है, शायद ही किसी और नज़रिया के बारे की गई हो। वजह इसकी यही है कि इसी के चुनाव पर जिन्दगी में कामयाबी और न-कामयाबी निर्भर हैं और मादियत पर फतह और रूहानियत में क्याम इसके हल पर मौजूद है।

सब से पहला काम

इन्सान के सब से पहले काम पर अब हम इस नज़रिया से गौर करेंगे कि इन्सान की असली और दिली ख्वाहिश क्या है ? जब हम उन कामों पर, जो एक इन्सान अपनी जिन्दगी में सरअंजाम देता है, गौर करें

तो मालूम होगा कि इन तमाम कामों के करने की खाहिश की तह में यह बात छुपी मिलेगी कि वो इन कामों के अंजाम की शक्ल में खुशी का मुतलाशी है। वैज्ञानिकों ने गहरी खोज के बाद इस अमर का पता लगाया है कि इन्सान स्वभाव से ही मुसर्रत और खुशी का चाहवान है और पैदाइश से लेकर मौत तक इसकी खोज और हासल करने के लिए पागल बना रहता है। इस खोज से हमारे हाथ एक ऐसा पैमाना लगा जिससे हम हर एक किस्म के पहले काम को, जिसकी निसबत हमें यह बतलाया जाता है कि यह आदमी के लिए सबसे पहला काम है, करने को कहा जाता है, माप सकेंगें कि आया इन्सानी जिन्दगी में करने लायक यह सबसे पहला काम हो सकता है या नहीं। वो पैमाना यह है कि इस काम को सरअंजाम देने के बाद जिसे हमारा सब से पहला काम कहा जाता है, हमारे जीवन में किस कदर आनन्द और खुशी का स्रोत बहने लगता है और हम किस कदर बेफिक्र और आज़ाद हो जाते हैं।

इस पैमाने पर अगर हम पहले किए हुए सब से पहले कामों को नापें तो बिला शक हम पर यह सच्चाई

खुल जाएगी कि इन पर अमल करने से भले ही जाहिरा किसी किस्म का सुख और आराम मिल जाए पर मनुष्य जीवन की अंदरूनी समस्याओं पर इनका कुछ असर नहीं पड़ता और यह समस्याएं सुलझने की बजाय और उलझ जाती हैं और यही वजह है कि बाहरी ढंग से सोचने वाले जिस कदर भी इन्सान हैं, उनको मन की शांति नसीब नहीं और जब तक मन शांत न हो जाए, तब तक न सेहत बन सकती है न व्यवहार सुधर सकता है। एक झगड़ा खत्म होता है तो फौरन ही नया झगड़ा बन जाता है। अशांत मन से शांति का प्राप्त होना या शांति का व्यापक होना ऐसा ही असम्भव है जैसा कि पानी के बिलौने से मक्खन का निकलना।

सबसे पहला काम क्या ?

अब यह सवाल पैदा होता है कि सबसे पहला काम क्या हो सकता है। इसका पता हम इन्सान की छुपी हुई और दबी हुई खाहिश से लगायेंगे जिसका जिक्र हम पहले कर आए हैं यानि अज़ली खुशी और न खत्म होने वाली मुसर्रत और बेअंदाज़ राहत तलब का होना। किसी भी आदमी से, जो कुछ काम कर रहा है, मिलें

वो फौरन कहेगा कि मैं अपने सुख और आराम की खातिर यह काम कर रहा हूं। नौकरी, खेती, दुकानदारी और सब इस किस्म के धंधों की तह में खुशी और आराम हासल करने का जज़बा ही काम कर रहा है। अब हम आसानी से सब से पहले काम के बारे में यह कह सकते हैं कि जिस काम के करने से सुख और आराम की प्राप्ति हो और साथ ही वो सुख और आराम आरज़ी न हो बल्कि मुस्तकिल हो, वो सबसे पहला काम है।

रुपया कमाना सबसे पहला काम

सतही नज़र से देखने वाले झटपट कह उठेंगे कि तब तो रुपया कमाना हमारा सब से पहला काम हुआ क्योंकि सुख आराम तो रुपया से मिल जाता है। रुपया हो तो मकान बना लो जिससे सर्दी, गर्मी, धूप, बारिश और आंधी तूफान से बचाव होता है। रुपया हो तो सर्द गर्म कपड़े बनवा लो जिस से जिसम की हिफाज़त और सजावट दोनों हो जायेंगी। रुपया हो तो ज़ेवर बनवा लो जिससे खूबसूरती दो चंद हो जायेगी। रुपया हो तो बी.ए., एम.ए. कर लो जिससे बड़े से बड़ा ओहदा मिल

सकता है। रुपया हो तो तरह तरह के लज़ीज़ नमकीन खाने ले लो काबुल और कंधार से मेवे मंगा लो। रुपया हो तो मुलकों में घूम आओ, तीर्थ यात्रा कर लो। दान, पुण्य यज्ञ सब रुपए की बदौलत है। रुपया न हो तो जीना दूभर है। मकान में बैठ कर रोवो। कोई यूं भी पूछने वाला नहीं कि भाई, रोते क्यों हो ? जाहरी ठाठ बाठ से हट कर अगर हम धनवानों और अमीरों की अंदरूनी हालात का जायज़ा लें तो बिला शुभा हम पर यह हकीकत जाहर हो जाएगी कि दुनियां में इनसे ज्यादा कोई भी दुखी नहीं है। उनको तो एक पल भी सुख का सांस लेना नसीब नहीं होता। धन का पहला काम अशांति पैदा करना है। श्री राम चन्द्र जो महाराज 'योग वशिष्ठ' में फरमाते हैं,

"इस जीव में गुण तब तक हैं जब तक लक्ष्मी प्राप्त नहीं होती। जब लक्ष्मी आती है सब गुण जाते रहते हैं। हैं। जैसे बसंत ऋतु की मंजरी तब तक हरी रहती है जब तक जेठ हाड़ नहीं आता और जब जेठ हाड़ आता है तब मंजरी जल जाती है। तैसे ही जब लक्ष्मी आती है तब सब शुभ गुण जल जाते हैं। जैसे पानी पतला तब तक ही रहता है जब तक इसमें सर्दी नहीं पहुंचती है

और जब सर्दी इस में आ पहुंची तब बर्फ हो कर कठोर हो जाता है तैसे हो यह जीव लक्ष्मी पाने से जड़ हो जाता है।"

जब मैं देखता हूं कि एक आदमी बर्फ के खिलौने बनाने की दिन रात कोशिश कर रहा है और वह उसे खुशी की बुनियाद बनाना चाहता है तो मैं कहता हूं कि यह शख्स बर्फ के खिलौने बनाने की कोशिश कर रहा है। जिस तरह बर्फ से खिलौने बनाना न-मुमकिन अमर है इसी तरह दौलत से खुशी की उम्मीद रखना फजूल है क्योंकि यह दौलत नहीं है जो खुशी दे सकती है। अगर दौलत खुशी देने वाली होती तो हम लखपतियों और करोड़पतियों को हमेशा सुख में ही देखते। मगर सच्चाई यह है, जाओ उनके सीने टटोलो, वहां तुमको आग धधकती हुई नज़र आएगी।

राकफैलर का नाम आपने सुना होगा। यह दुनिया भर के अमीरों में से एक हैं। जब आप से पूछा गया कि आप पूर्ण सुखी हैं तो आपने कहा कि बावजूद इस कदर माल दौलत के होने के मुझे दिली राहत और दिली खुशी नसीब नहीं बल्कि हमेशा फिक्र और रंज में गलतान रहता हूं।

महात्मा बीर का वचन है,

जेकर होती शान्ति धनवानों के पास
बीरा होते जगत में धनो न मूल उदास
कंचन मोती लाल से राम मिले न वीर
मन दे उसको मोल ले गर हिम्मत है बीर

ईश्वर भक्ति सबसे पहला काम

इससे कुछ ऊंची नज़र रखने वालों का ख्याल है कि ईश्वर भक्ति करना हमारा सबसे पहला काम है। इसलिए हर वक्त ईश्वर का नाम लेते रहना, संख घड़ियाल बजाना, नमाज़ रोज़े रखने सब कामों से श्रेष्ट है और इसे ही करना चाहिए लेकिन गृहस्थ में हर वक्त ऐसा होना मुश्किल है। इसके अलावा सब की इस तरफ रुचि भी नहीं होती। घर गृहस्थी में हर शै की जरूरत है। पूजा पाठ से तो मिलने से रहों। किसी कारोबार और धन्धे से ही उनकी प्राप्ति होगी इसलिए गृहस्थियों के लिए यह सबसे पहला काम नहीं हो सकता। रहे साधु सन्यासी। गौर करने से शान्ति और इतमनान इन्हें भी हासल हुआ मालूम नहीं पड़ता। शहर से नफरत है और वन से लगाव है। तन्हाई से मुहब्बत है, इकट्ठ से

परहेज़ है। स्त्रीयों को देखकर मुंह फेर लेते हैं और लोगों को देखकर निगाह जमीन में गाड़ लेते हैं। भरात्रि भाव और मात्री भाव की बजाय नफरत का जज़बा मन में पैदा हो गया। फिर कैसे कह सकते हैं कि इन्हें भी पूरा इतमनान हासल है। शान्ति और इतमनान तो वो है जो कभी भी हटे नहीं, जिसमें कभी फर्क न आए, हमेशा इक रस रहे। यह तो रहने दीजिए गहराई की बात है। हमारा मतलब आम दुनियादारों से है और आम दुनियादारों के लिए सबसे पहला काम ईश्वर भक्ति नहीं हो सकता क्योंकि इससे उनके कामों में बाधा और रुकावट आती है और न हो सच्चे विवेक के बिना इनकी समझ में बात आ सकती है कि सच्ची ईश्वर भक्ति क्या है और इसे किस तरह करना चाहिए। आप कहेंगे कि अगर रुपया कमाना, ईश्वर भक्ति करना पहला काम नहीं तो सबसे पहला काम कौन सा है जिसको करके आदमी सुख और चैन को हासल करे। आईए अब इस पर गौर करें। आप अंजील मिती बाब 5 की आयत 23-25 पढ़िए,

"अगर तू कुर्बानगाह पर अपनी नज़र गुजरानता हो और वहां तुझे याद आये कि मेरे भाई को मुझसे कुछ

शिकायत है वहीं कुर्बानगाह के आगे आपनी नज़र छोड़ दे और पहले अपने भाई से मिलाप कर तब आकर अपनी नज़र गुजरान ।"

गोया ईश्वर की खशनूदी हासल करने से पहले अपने भाई की खशनूदी हासल करना जरूरी है और यही अपने भाई को खशनूदी हासल करना आदमी का सबसे पहला काम है। अपने भाई की खशनूदी हासल करना ही हमारा सबसे पहला काम काम क्यों है ? अब इस पर सोचिये ।

यह तो आप जानते ही हैं कि हम न तो निरी रूह ही हैं और न निरा जिस्म बल्कि रूह और जिस्म के मिलाप से हम हैं। इसलिए दोनों की खुशी या प्रसन्नता हासिल करना जरूरी है। रूह के लिए इतमिनान चाहिए और जिस्म के लिए सुख और आराम। दोनों की प्रसन्नता ही पूर्ण प्रसन्नता है। एक की खुशी मुकम्मल खुशी नहीं और न एक अपनी खुशी से लुत्फ हासिल कर सकता है। इस बात को आप इस तरह समझ सकते हैं कि अगर किसी आदमी को दुनियावी खुशी के सब सामान हासिल हों पर उसकी रूह में बेचैनी हो तब यह सारी चीज़ें उसके लिए कभी भी सुख का साधन नहीं बनतीं बल्कि

अक्सर मर्तबा रूह की बेइत्मनानी के सबब वो इन चीज़ों से इस दर्जा नफरत करने लग जाता है कि बेअखत्यार इन चीज़ों को फेंक देता है। इस तरह अगर जिस्म में कुछ रोग या तकलीफ है तो रूह में भी बेचैनी और बेकली हो जाती है कि रूह का कयाम जिस्म में है और जिस्म को रूह का मन्दिर कहा गया है। इससे ज़ाहिर है कि रूह और जिस्म एक दूसरे पर निर्भर हैं। इस वास्ते पूर्ण आनन्द दोनों की उन्नति में है। आत्मा रूह की उन्नति का ताल्लुक इन्सान की अपनी ज़ात से है और जिस्म की तरक्की का ताल्लुक समाज या सोसाइटी से सम्बन्धित है। इन्सान सोसाइटी से अलग-थलग रहकर बेशक कुछ आत्मिक उन्नति कर सकता है पर सामाजिक उन्नति नहीं। इन्सान चूं कि सामाजिक प्राणी है इसलिए बिल्कुल अलग-थलग होकर जंगलों में रहना इसकी फितरत के खिलाफ है।

जो जंगलों में रहते हैं वो भी आखिर सोसाइटी की शरण में आ गिरते हैं। जब सोसाइटी में रहना इन्सान की फितरत ठहरी तब सोसाइटी से ताल्लुक पैदा करना और इसकी तरक्की के असूलों पर अमल करना इसके लिए जरूरी ठहरा। यही सोसाइटी से ताल्लुक पैदा करना

अंज़ील के मुहावरे "अपने भाई की खशनूदी हासिल करना है" और महाराज बीर के वचनों में "प्रेम" करना है। अब हम इस नतीजे पर पहुंचे कि हमारे सुख का दारोमदार सोसाइटी से मिलाप करने में है या महाराज बीर के शब्दों में यूं कह सकते हैं कि हमारे सुख का निर्भर "प्रेम" पर है। आदमी का सबसे पहला काम प्रेम है क्योंकि जब तक हम सोसाइटी या समाज में ताल्लुक पैदा नहीं करेंगे, हमारे जीवन में द्वेष, दर्द, नफरत, अफरा-तफरी और बेतरतीबी बनी रहेगी और इसका नतीजा आखिर में लड़ाई-झगड़े और जंगो जदल की सूरत में ज़ाहिर होगी।

महात्मा बीर अपने रूहानी पैगाम में फरमाते हैं.

"जब तक तुम हकीकी प्रम को न अपनाओगे तुम्हारी रूह शांति हासल नहीं कर सकती। प्रम ही एक आनन्दमयी जज़बा है जो इन्सान के दिलों से कदूरत निकाल कर दायमी तसकीन अनायत कर सकता है। क्या तुम भूल चुके हो कि सब इन्सान एक ही नूर से पैदा हुए हैं ? फिर तुम क्यों एक दूसरे से हकारतमयी सलूक करते हो ? मैं तो कहता हूं कि प्रेम भरे दिल पैदा करके प्रेम को खूब कबूल करो क्योंकि प्रेम ही तुम्हारे हिरदों को

पाक बना सकता है। तुमने रास्ते से भटक कर किसी और रास्ते को अख्तयार कर लिया है। मगर अच्छी तरह जान लो कि यह रास्ते तुम्हें हरगिज़-हरगिज़ शांति नहीं दे सकते। कभी तलवारों से भी अमन हुआ है ? अमन बहाल करने के वास्ते अमन ही दरकार है। खुदा-खुद प्रेम है। इस वास्ते तुम भी अपने में प्रेम का नेक जज़बा पैदा करो। प्रेम का जज़बा पैदा होने से तुम्हारे दिलों में किसी के खिलाफ नफरत न रहेगी बल्कि तुम हर एक को अपना ही रूप समझोगे। तुम्हारा हिरदा प्रेम से इस कदर भरपूर हो जाएगा कि तुम हैवानों से भी प्रेम करने लग जाओगे। हैवान तुम्हारे प्रेम से मुतासिर होकर तुम्हारा काम ज्यादा करेंगे। तुम जितने फसाद करोगे उतने ही दुख उठाओगे। इन्सान अज़ाब से डरता है मगर वो बेखबर है कि यह नित के झगड़े जिनमें वो ग्रिफतार है, अज़ाबों की खान हैं। मैं फिर कहता हूं कि तुम्हारी निजात का वाहिद हल हकीकी प्रेम है। इसके बगैर तुम्हें शान्ति हासल नहीं हो सकती और शान्ति के बगैर निजात नहीं। इस वास्ते प्रेम को अपना लो क्योंकि खुदा प्रेम है और प्रेम खुदा।"

(रूहानी पैगाम 1945)

हमारा सबसे पहला काम प्रेम करना है

सियासी लीडर लाख बार यह कहें कि फिरका प्रस्ती खत्म करना या ऐण्टो हिन्दु जहनियत खत्म करना या सरमायेदारी खत्म करना या मजदूर राज कायम करना हमारा सबसे पहला काम है लेकिन यह हरगिज़ हमारा सबसे पहला काम नहीं क्योंकि सबसे पहला काम करने से सोसाइटी में अमन और सुख का दौर दौरा होना चाहिये लेकिन इन नारों को अमली जामा पहनाना तो दूर की बात है इनके अज़हार में भी नफरत का जज़बा मौजूद है और नफरत का जज़बा रखने से हम कभी मुकम्मल शांति का राज्य नहीं ला सकते क्योंकि ऐसा आज तक कभी किसी और जगह नहीं हुआ कि किसी किसम के ख्यालात के लोगों को किसी ढंग से बिलकुल खत्म कर दिया गया हो या मुखालफत का कतई खात्मा हो गया हो। हां एक सूरत है। अगर हम प्रेम को अपनायें, प्रेम का व्यवहार करें और प्रेम प्रेंम के नारे लगायें ता हर किसम की मुखालफत भी खत्म हो जायेगी और सब तरह के झगड़े भो निपट जायेंगे और रूहानी तौर पर आदमी प्रेम के सहारे इस आहला दर्जा पर

पहुंच जाएगा जो देवतों और फरिश्तों को भी मुश्किल से मिलता है।

प्रेम से इन्सान का व्यवहार कितना शुद्ध हो जाता है और वो किस कदर आत्मिक उन्नति करके परम आनन्द का हकदार ठहरता है इसको महाराज बीर अपने पद्यों में इस तरह वर्णन करते हैं,

जिस हिरदे में प्रेम समावे, प्रभ जी तिस को दर्स दिखावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, तिस में दाता डेरा लावे
प्रेम पुजारी तजे गुमाना, प्रेम पुजारी चतुर सुजाना
प्रेम पुजारी मीठा बोले, राम नाम हिरदे में तोले
प्रेम पुजारी सब का यार, प्रेम पुजारी खिदमतगार
प्रेम पुजारी प्रेम कमावे, आसा मनसा सगल तजावे
प्रेम पुजारी क्रोध मिटाए, प्रेम पुजारी प्रीत बढ़ाए
प्रेमी का हिरदा निरवैर, प्रेमी मांगे सबकी खैर
प्रेमी उड़ता बीच आकाश, काम क्रोध का करके नाश
प्रेमी सब की सेव कमाए, दर्द मंद का दर्द वंडाए
प्रेम का दर्जा बड़ा बुलंद, प्रेमी हर दम रहे आनन्द

जब तू सच्चे प्रेम को जानै अपना धर्म
तब बीरा संसार में तेरे हों शुभ कर्म

प्रेम करना ही सच्ची ईश्वर भक्ति है

ईश्वर भक्ति किसे प्यारी नहीं। जिसका नाम लेते ही चित प्रसन्न हो जाता है। इसके लिए मनुष्य अपनी प्यारी से प्यारी चीज़ भी कुर्बान कर देते हैं और बड़े से बड़ा दुख उठा लेते हैं पर अफसोस यह है कि सच्ची भक्ति के स्वरूप को बहुत कम लोगों ने जाना है। सच्ची भक्ति क्या है और इसका स्वरूप क्या है ? यह तो आपको सच्चे सत्गुरु की शरण में आने से ही पता चलेगा। यहां सिर्फ इतना ही बतलाना काफी है कि सच्ची भक्ति या ईश्वर प्राप्ति का सबसे बड़ा साधन प्रेम है। महाराज बीर फरमाते हैं,

भक्ति भक्ति सब कहें, भक्ति बीर प्यार
प्रेम बिना भक्ति भला है भाई किस कार

———

जिस हिरदे में प्रेम समावे, नाम रसायण साचो पावे
जिस हिरदे में प्रेम समावे, सो हिरदा प्रीतम बन जावे
जिसने साचा प्रेम कमाया, तिसने समझो प्रीतम पाया
प्रेम प्रभु में भेद न भाई, सगल प्रेम से बनी खुदाई

प्रेम में इतनी आकर्षण शक्ति है कि यह साक्षात भगवान को ही भक्त के सामने खेंच लेता है। जब भक्त

प्रेम में मस्त होकर अपने आपको इक जोत परमेश्वर के चरणों में डाल देता है और प्रेम से व्याकुल होकर बड़े शौक से अपनी जिन्दगी को भी कुर्बान कर देना चाहता है तब इक जोत परमेश्वर उसके प्रेम में खिचे हुए प्रत्यक्ष प्रकट हो जाते हैं। याद रखिये, प्रेम के सिवाय भगवान की प्राप्ति का कोई दूसरा साधन नहीं है। सूरदास जी का वचन है,

कृष्ण कृष्ण सभी कहें ठग ठाकर और चोर
बिना प्रेम रीझे नहीं नागर नंद किशोर

महात्मा बीर फरमाते हैं,

जेकर प्रीतम देखना मकसद प्रेम बना
पक्का निशचा धार के मन में सब कुछ पा

प्रेम की शरण में आईये

अगर दुनिया में राज़े जिन्दगी पा लो तो अच्छा है
मुक्कदर बन रहे हैं तुम भी चमका लो तो अच्छा है
प्रीति से ही कायम जिन्दगी दुनिया में है अब तक
प्रीति नेमते यजदां है अपना लो तो अच्छा है

आशा है कि आप यह बात समझ गये होंगे कि हमारा सबसे पहला काम धन कमाना, हकूमत करना,

ऐश इश्रत में फंसे रहना नहीं है बल्कि हमारा सबसे पहला काम प्रेम करना है क्योंकि इस वक्त दुनिया के ज़र्रे ज़र्रे में नफरत का ज़हर सरायत कर चुका है और इसकी मिकदार भी बढ़ी है। इसने एक मुल्क को दूसरे मुल्क से, एक सूबा को दूसरे सूबा से, एक गांव को दूसरे गांव से और एक आदमी को दूसरे आदमी से खोफज़दा कर रखा है और आपस की नफरत ने दिमागों को इस कदर मुअतल कर दिया है कि साधारण आदमी जिन्दगी के आम मसायल का ख्याल दिमाग में नहीं ला सकते। श्री महाराज बीर ने अपनी रूहानी नज़र से यह जान कर, कि नफरत दुनिया की रूहानी और दुनियावी तरक्की में एक जबरदस्त रोग है और जब तक हम आपस को नफरत और फूट को खत्म नहीं करेंगे तब तक अपनो रूहानी और जिसमानी तरक्की में कामयाब नहीं होंगे, प्रेम समाज को स्थापना की है और आप इसके ज़रिया दुनिया भर में आलमगीर मुहब्बत और भाईचारे का सन्देश दे रहे हैं। आप फरमाते हैं,

"मैं अब वाजया तौर पर दोहरा देना चाहता हूं कि इन्सानियत मुहब्बत और प्रेम से ही कायम रह सकती है। ईश्वर भी प्रेम से ही मिल सकता है। जो

रोग बढ़ जाये उसका इलाज करना चाहिये। अब दुनिया को नफरत का रोग तबाह कर रहा है। इस वास्ते रोग को दूर करने के वास्ते प्रेम से बढ़ कर कोई नुस्खा नहीं। मन बाणी और कर्म में प्रेम ही प्रेम होना चाहिये। जैसा कि कहा गया है,

है इन्सां का मज़हब मुहब्बत मुहब्बत
बढ़ाए ये आपस में रिश्ता ए उलफत
जभी दुख में देखे किसी दूसरे को
इसे बीर लाज़म करे उसकी खिदमत

अब इस बात की सख्त जरूरत है कि हर एक आदमी को दिल में सच्चा प्रेम पैदा करके आत्मा को बेदार करना चाहिये क्योंकि जब तक आत्मा बेदार न हो, इन्सान अपने आपको नहीं पहचान सकता और जब तक अपने आपको नहीं पहचानता इसे इंसानियत की कदर मालूम नहीं हो सकती।" (रूहानी पैगाम)

प्रेम ही एक ऐसी वस्तु है जिससे इन्सान का अपनी सोसाइटी में दर्जा बुलन्द होता है और साथ ही इक जोत परमेश्वर की प्राप्ति भी हो जाती है। इसलिए आप से प्रार्थना है कि आप भी इस जीवन में इस सच्चाई को धारण करें क्योंकि प्रेम करना ही सबसे पहला काम है।